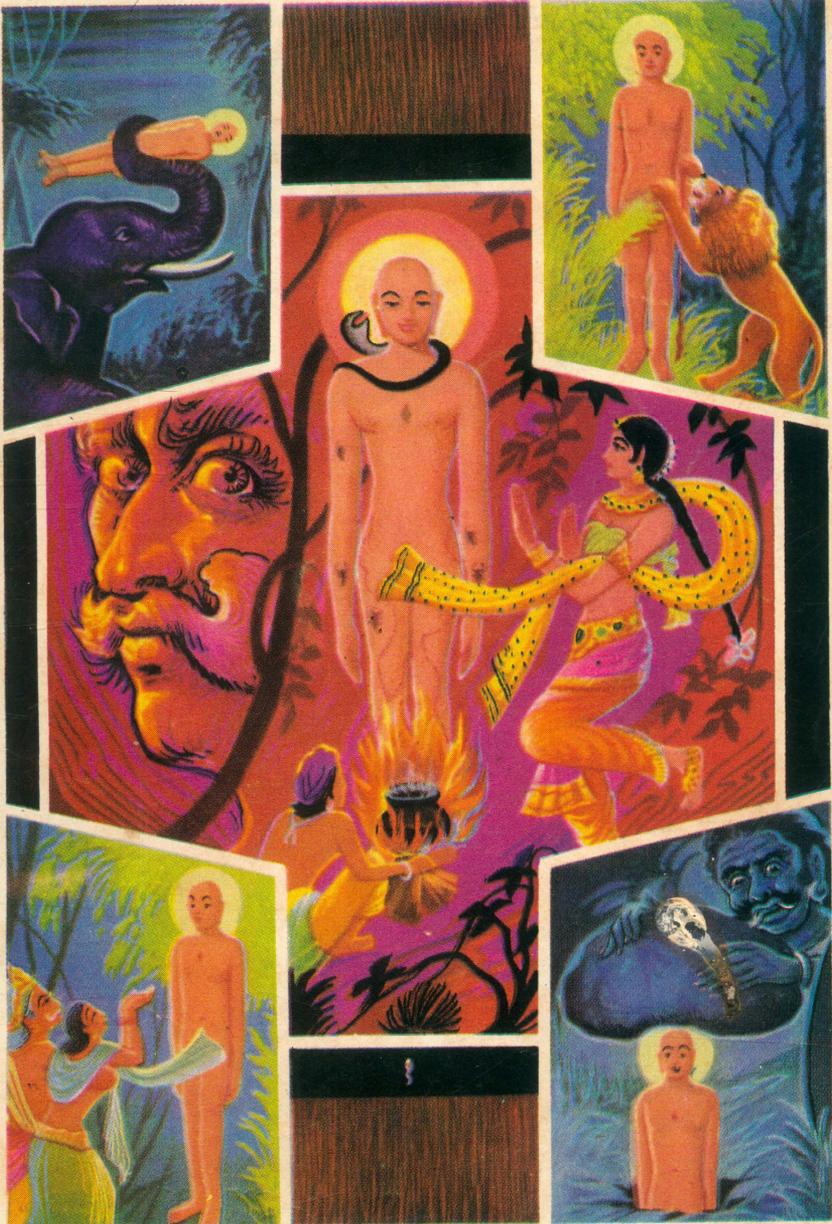


शाश्वत धर्म

अगस्त १९९२ (३)



प्रधान संपादक जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगम-चंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कत्राजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धनेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नान-चंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाडा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई, सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी देहेरासर - थराद. * श्री सौधर्मवृहत्यागच्छी जैन संघ-आणंद

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक
संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीस सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय ① ५३४ ०७ २४ निवास ② ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०९ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० * अंक ३ * अगस्त १९९२



अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

झरोखा

- ❖ सम्पादकीय जे. के. संघवी ३
- ❖ पर्वाधिराज आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. ५
- ❖ शील की सौरभ आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. ७
- ❖ श्री कुन्थुनाथ जिनस्तवन (१७) मुनि श्री जयानंदविजयजी ११
- ❖ भारतीय अहिंसा संस्कृति की श्री रतनलाल मेहता (झाबुआ) १४
- ❖ मानव में मानवता कब आती है? . स्व.आचार्यश्री यतीन्द्रसूरिजी म.सा. १५
- ❖ आचारांग की सुक्तियां श्री पुखराज भंडारी १९
- ❖ णमोकार मंत्र और मनोविज्ञान डॉ. नेमीचंदजी शास्त्री २३
- ❖ चौदह स्वप्नों का रहस्य संगीता जे. संघवी २९
- ❖ समाचार दर्शन संकलित ४७

स्थाई स्तम्भ

- ❖ रूकिये! पढ़िये!! और सोचिये!!! मुसाफिर ३१
- ❖ क्या आप जानते हैं? धर्ममित्र ३३
- ❖ एक नजर इधर भी श्री राजीव बूलचंद ३५
- ❖ स्वास्थ्य चर्चा रणवीर सिंह ३७
- ❖ ज्ञान कसौटी (१७) श्री महेन्द्र जे. संघवी ३९
- ❖ सरे राह चलते चलते प्रवासी ४१
- ❖ सत्यकथा युद्धवीर चांपाशाह श्री कन्हैयालाल गौड़ ४३
- ❖ युवा सन्देश मुनि श्री रत्नसेनविजयजी म. सा. ४५

गुजराती विभाग

- ❖ आत्म संयम योग गुणवंत शाह ५८
- ❖ नवकार महामंत्र आराधना सत्र - मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी ६१
- ❖ बोध कथाओ पं. श्री चंद्रशेखरविजयजी ६३

लेखक के विचारों में सम्पादक अथवा पाठकों की सहमति आवश्यक नहीं है।



मुझे आश्चर्य होता है, जब --



- ❁ जैन समाज संस्कारी समाज कहा जाता है किन्तु उसी समाज के युवक-युवती लग्नादि प्रसंगों में सार्वजनिक रूप से सड़कों पर नाचते हैं!
- ❁ चींटी की भी दया पालनेवाले जैनों के द्वारा पशुओं पर अत्याचार द्वारा तैयार किये गये सौंदर्य-प्रसाधन का व्यापार किया जाता है, इतना ही नहीं उनके घर उसका उपयोग भी किया जाता है!
- ❁ रात्रि भोजन, अभक्ष्य व चार महाविगइयों के त्याग वाले जैनों के यहाँ शादी में रात्रि भोजन बिना किसी हिचकिचाहट के तो होता ही है किन्तु भक्ष्य-अभक्ष्य का भी कोई विवेक नहीं रखा जाता। अब तो केटरिंग सर्विस वालों के भरोसे महाविगई मक्खन का उपयोग भी होने लगा है।
- ❁ नये खुल रहे कल्लखानों का विरोध करनेवाले जैन समाज द्वारा जब लाखों कीड़ों को पानी में उबालकर क्रूरतम हिंसाजन्य रेशम के कपड़ों का उपयोग किया जाता है, उतना ही नहीं वह रेशमी वस्त्र पहनकर मंदिरों को भी अपवित्र बनाता है।
- ❁ पुष्प में जीव को मान्य करनेवाले जैनों की शादियों में डेकोरेशन में हजारों-लाखों फूलों का उपयोग (दुरुपयोग) किया जाता है।
- ❁ जब जैनों द्वारा लग्नादि प्रसंगों पर हजारों जीव जंतुओं का नाश करते हुए धुंए के द्वारा पर्यावरण को बिगाड़नेवाले पटाखों का उपयोग किया जाता है।
- ❁ जिसमें जानवरों की चर्बी का उपयोग करना आवश्यक हो, ऐसे उद्योग जब जैन उद्योगपतियों द्वारा चलाये जाते हों।
- ❁ तालाब में मछली पकड़ने के सरकारी स्वीकृति का विरोध करनेवाले जैनों द्वारा जब मछली के जालों के टेन्डर भरे जाते हैं।
- ❁ मांस का निर्यात करनेवाली कम्पनियों के शेयर जब शाकाहारी जैन समाज द्वारा खरीदे जाते हैं।
- ❁ संस्थाओं के लिए मात्र पैसों की आय को ध्यान में रखकर जैन सिद्धान्तों के विरूद्ध व्यवसायी या चरित्रहीन लोगों का कार्यक्रम में अभिनंदन किया जाता है।

- ❁ धार्मिक समारोहों में राजनेताओं को बुलाया जाता है, जो स्वयं भ्रष्टाचार, हिंसा, आरंभ समारंभ परिग्रह में डूबे हुए हों वे हमें जब अहिंसा, अपरिग्रह, दया अहिंसा के रटे हुए पाठ-पढाते हैं।
- ❁ व्यवहारिक शिक्षा प्राप्ति हेतु जब संरक्षक ट्यूशन आदि में अर्थव्यय कर समय-समय पर ध्यान रखकर बच्चों के पढ़ने की फिक्र करते हैं, किन्तु जीवन जीने की सही कला सिखानेवाली धार्मिक पाठशालाओं में निःशुल्क भेजने हेतु भी ध्यान नहीं देते।
- ❁ शाकाहारी लोगों द्वारा हिंसाजन्य वर्क का उपयोग मिठाईयों आदि में किया जाता है।

जैन समाज में अहिंसा और जीवदया की भावना प्रारंभ से ही मिलती है। घर के संस्कार और जीवन प्रणाली ही इस प्रकार की होती है जिससे अन्य समाजों के मुकाबले उपरोक्त दूषण हमारे यहाँ कम ही मिलते हैं, लेकिन पिछले दशकों में इन दूषणों ने प्रवेश पाकर पाँव जमाना शुरू कर दिया है। और उत्तरोत्तर इनका प्रमाण बढ़ रहा है यह हकीकत है। अतः समाज में सुसंस्कारों के वारसे को कायम रखने के लिये अहिंसा के सम्बन्ध में सम्यक् जानकारी का प्रगटीकरण करने की ओर चतुर्विध संघ को ध्यान देना चाहिये।

अहिंसा और जीवदया जैन धर्म के नींव के सिद्धान्त है, जिसके मजबूत होने पर ही सर्व कल्याणकारी धर्म का प्रचार/प्रसार हम विश्व भर में कर पायेंगे।

J. K. Sanghani
(जे. के. संघवी)

कौन सा जीवन श्रेष्ठ ?

श्रमण भगवान महावीर को किसी ने प्रश्न पूछा - 'साधु जीवन श्रेष्ठ या गृहस्थ जीवन ?'

भगवान ने उत्तर दिया - 'जीवन के क्षेत्र में श्रेष्ठता या निम्नता का तोल-माप वेष पर आधारित नहीं है, किन्तु आत्म परिणति पर निर्भर है। द्रव्य और भाव से साधुता में मस्त जीवन श्रेष्ठ जीवन हैं; किन्तु यदि कोई साधु अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन न करे और कोई गृहस्थ, साधु के समान त्याग-तप-संयममय जीवन जीये तो उसका जीवन मात्र वेषधारी साधु की अपेक्षा श्रेष्ठ है।



— आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा.

पर्युषण आये ?

- भव्यों के लिये भाव वृद्धि जीवन शुद्धि और ज्ञानपिपासुओं के लिये ज्ञान का दान करने के लिये आये।
- पुण्योदय प्राप्त लक्ष्मी एवं वैभव संपन्न दानेश्वरियों को सात क्षेत्र में उदारता से दान देने का सन्देश लेकर आये।
- मैत्री भाव के अवधारण प्रसारण के साथ आत्मकल्याण हेतु सुंदर सदशिक्षण देने के लिये आये।
- संकुचित भाव को घटाने के लिये और विशालतम वटवृक्षस्वरूप बनने का बल अर्पण करने के लिये आये।
- आराधना का राह दिखाने, जीवन की कला सिखाने और जिनेन्द्र वाणी का पान कराने के लिये आये।
- ऋजुभाव को बढ़ाने, जड़ता को जीत लेने और वक्रता को दूर करने का उपदेश देने के लिये आये।

क्या लाये ?

- क्रोध के दावानल को शान्त करने के लिये क्षमा का जल लाये।
- मान के पहाड़ को तोड़ने के लिये नम्रता का वज्र लाये।
- माया की जाल का कर्तन करने के लिये सरलवृत्ति की कैंची लाये।
- लोभ के राक्षस को समाप्त करने के लिये संतोषवृत्ति का शस्त्र लाये।
- कषायों के विष को नष्ट करने के लिये परमशांति का अमृतकुंभ लाये।
- और तुझे क्या करना चाहिये ?
- भववटवृक्ष की शाखाओं का अन्त करने के लिये भावभक्ति पुरस्सर आराधना !
- जिनेन्द्र भगवंतों की वाणी श्रवण कर तृप्त कर अंतरात्मा को।
- मैत्रीय भावना का प्रतिक बनाना जीवन को।
- परस्पर स्नेह, संगठन और सहकार सहयोग प्रोत्साहन देना।
- सावध व्यापारों से मुक्त रखना अपने आपको।
- कषायों से दूर रहकर सम्हालना स्वाभाविक शान्तवृत्ति को।
- सरल हृदयी, सद्भावना, एवं सुमति के धारक बनाना अपने आप को।

मिच्छामि दुःखडम्

- ♦ मन की शान्ति, चित्त की प्रसन्नता, हृदय का उल्लास और आत्मा की ऊन्नति के लिये क्षमाधर्म का पालन अति आवश्यक है।
- ♦ तप, त्याग, दान, सेवा, सत्संग, उपासना और धर्मप्रभावना का यह एक आध्यात्मिक पर्व है।
- ♦ राग, द्वेष, काम, क्रोध की गांठ खोलकर आत्माभिमुख बनने का एक अनोखा यज्ञ है।

मनुष्य मात्र से समय-समय पर असावधानी, प्रमाद एवं कषायवश भूल होना स्वाभाविक है। हमारे द्वारा 'शाश्वत धर्म' के विद्वान लेखकों, पाठकों, ग्राहकों और सहृदयी हितैषियों, दानदाताओं के प्रति प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, लिखित-अलिखित रूप में किसी प्रकार की भूल होना सहज सम्भाव्य है। अपनी सीमाओं में रहते हुए सीमित स्थान के कारण सम्भव है हम किसी की रचना अथवा समाचार को प्रकाशित न कर पाये हों या विलम्ब से अथवा संक्षेप में प्रकाशित किये हों। किसी ग्राहक या लेखक को पत्रिका समय पर भेजने में असमर्थ रहे हों या कुछ ऐसे विचार प्रकाशित करने में आये हों जिनसे किसी के मन को किंचित् भी ठेस पहुंची हो तो आत्मशुद्धि के इस पुनीत पर्युषण पर्व पर हम सबसे अन्तःकरण पूर्वक क्षमायाचना करते हैं।

पू. साधु-साध्वी भगवंतों से भी इस पुनीत मंगल अवसर पर अंतःकरणपूर्वक क्षमायाचना करते हैं।

- शाश्वत धर्म एवं परिषद परिवार

P. K. Saughar

(जे. के. संघवी)

भेंट मिलेंगी!

पू. साध्वीश्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म. सा. द्वारा विवेचित कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य द्वारा लिखित अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशका पुस्तक जिसमें ३२ श्लोकों (अध्यायों) का सुन्दर सरल भाषा में विवेचन किया गया है।

इच्छुक पाठकगण एक रूपया डाक व्यय कार्यालय के पते पर भेजकर मंगवा सकते हैं।

पता : जे. के. संघवी (सम्पादक), शाश्वत धर्म कार्यालय,
जामली नाका, थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

—आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी

तो यह है संसारी जीव की विचित्र स्थिति। भाई! जरा सोचो तो सही कि क्या निर्णय लेना है। संसारी जीव के बाह्य शत्रु उतने घातक नहीं हैं; जितने आन्तरिक शत्रु। कहा भी है—

कामारि क्रोध कुमति कटुता, छद्मत्व क्लेशं कलहं तथा च।
विहाय एतानि जयन्त सनः, उत्तीयतां नौ स्वभवार्षावाद् हि।

काम क्रोध, कुमति कटुता, छद्म तथा कलह हमारे शत्रु हैं। इनका त्याग करके ही भवसागर की यात्रा नाव रूप वीतराग की शरण से पार हो सकती है। अतः मन को एकाग्र करना सबसे कठिन तपस्या है। कहा भी है—

मन साध्यं तेणे सघळुं साध्युं एह वात नहिं खोटी।
जिसने मन को जीत लिया, उसने संसार को जीत लिया।

सुहाग रात विजय और विजया के लिए एक मंगल वरदान बन गई। उसी रात को दोनोंनेगुप्त वैराग्य धारण कर लिया। लोगों की नजर में वे गृहस्थ थे और स्वयं की नजर में वैरागी। इस प्रकार से दोनों अपना जीवन सुख-सन्तोषपूर्वक बिताने लगे।

एक बार चंपा नगरी में परम ज्ञानी श्री विमल केवली भगवान का आगमन हुआ। वे नगर के बाहर किसी एक उद्यान में विराजमान हुए। देशना और दर्शन दोनों पाकर वे निहाल हो गये। श्रावक जिनदास भी वहाँ भगवान की देशना सुनने आया था। भगवान की देशना समाप्त होते ही प्रभु को वन्दन कर हाथ जोड़ कर वह खड़ा हो गया और बोला, “प्रभो! मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपके चौरासी हजार श्रमणों को आहार-पानी वहोरा कर अपने तप का पारणा करूँ। यह मेरा अभिग्रह है। आप मुझ पर कृपा कीजिये और यह लाभ मुझे लेने दीजिये।”

इस पर भगवान बोले, “जिनदास! तुम्हारी भावना अति उत्तम है; पर इतने सारे मुनि एक साथ मिलना मुश्किल है। यदि सोभाय्य से ऐसा अवसर प्राप्त हो भी जाय तो भी इतने श्रमणों के लिये विशुद्ध आहारकी व्यवस्था मुश्किल हैं। साधु केवल एक ही घर से सब आहार ले नहीं सकता। उसे बयालीस दोष टालकर निर्वद्य आहार-पानी ग्रहण करना पड़ता है। अतः ऐसा हो नहीं सकता। सब के सब श्रमण तुम्हारे घर से आहार ले नहीं सकते।”

जिनदास के मुख पर इस उत्तर से कुछ उदासी छा गयी। वह पुनः बोला, ‘प्रभो! तो फिर अन्य कोई उपाय बताईये। चौरासी हजार श्रमणों को आहार- पानी वहोराने से जो

लाभ प्राप्त हाता है, वह मैं पाना चाहता हूँ”

भगवान ने जिनदास को ढाढस बंधाते हुए कहा— “जिनदास! एक उपाय है। वत्स देश के कौशांबी नगर में सेठ अर्हदास रहते हैं। यदि तुम उनके पुत्र व पुत्रवधु को भोजन करा दो और उनका सत्कार कर दो, तो तुम्हें चौरासी हजार श्रमणों का आहार-पानी वहोराने से मिलने वाला लाभ प्राप्त हो जायेगा। उन दोनों के समान दुष्कर शील तप करने वाला संसार में मिलना मुश्किल है। उनके नाम है विजय और विजया।”

भगवान ने विजय और विजया के शील को भरी सभा में बेदाग प्रमाणित कर दिया। अहो, इस शील का कितना माहात्म्य है। आगम में कहा है कि जितना लाभ चौरासी हजार श्रमणों को आहार दान करने से होता है; उतना ही लाभ कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष में अखंड शीलव्रत का पालन करने वाले दंपति को भोजन कराने से होता है!

कलावती के कटे हाथ पुनः बेरखो सहित ठिक हो गये थे। कौन सा मंत्र था उसके पास? केवल शीलव्रत का।

सुदर्शन सेठ को ले गये थे शूली पर चढ़ाने के लिए पर शूली उनके लिए सिंहासन बन गयी। क्योंकर हो गया यह चमत्कार? केवल शील के प्रभाव के कारण ही न?

शीलार्णवस्य पारं गत्वा संविज्ञ सुगम मार्गस्य।

धर्मध्यान मुपगतो वैराग्यं प्राप्नुयाद्योगम्॥

शील समुद्र में अवगाहन कर उसके पार जा कर वैराग्य भाव से मुक्त होकर धर्मस्थान में लीन होना ही सच्चा मोक्षमार्ग है।

इन्द्रियों की भूख तीन लोक के समस्त वैभव से भी मीट नहीं सकती और उनकी प्यास समुद्र के समान कभी भरती ही नहीं है; अतः भोगों से तृप्त होकर शील पालन की कामना करना मृगजल से प्यास बुझाने के समान ही है।

सरित्सहस्र दुष्पूर समुद्रोदर सोदरः।

तृप्तिमात्रेन्द्रिय ग्रामो भव तृप्तोऽन्तरात्मना॥

हजारों नदियों के पानी से भी समुद्र कभी भरता नहीं है। यह इन्द्रिय समूह भी समुद्र के समान सदा अतृप्त ही रहता है; इसलिए तू अपनी अन्तरात्मा से ही तृप्त हो जा।

विषयों का करके वमन, रहते जो संसार।

यजन्तसेन निर्मल गति, आखिर भवजल पार॥

बिना विषयों का वमन किये भवव्यधि कभी दूर नहीं हो सकती। जैसे बिना वमन के पित्त रोग दूर नहीं होता, उसी प्रकार बिना विषयों को उगले आत्मा कभी निरोग नहीं हो सकती। भवरोग को दूर करने के लिए विषय विष को उगलना और धर्माभूत को निगलना अत्यंत आवश्यक है।

जो मनुष्य विषयों को नष्ट करके निर्मल के शील धर्म का उद्धार करता है; वह इह

लौकिक और परलौकिक वैभव को अवश्य प्राप्त करता है। विषय तो विष से भी अधिक घातक होते हैं।

विषस्य विषयाणां च पश्यतां महदन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति विषयाः स्मरणद्दपि॥

अरे विष और विषय के इस विशाल अन्तर को तो देखो। दोनों में महदन्तर है। विष तो भक्षण करनेकेपश्चात् मारता है, पर विषय स्मरण मात्र से ही मार देते हैं। विषय विष से अधिक घातक हैं।

काम पाश में जो पड़े, जीव न सुखी कोय।
जयन्तसेन तज वासना, सफल जीवन सुख होय॥

जब तक इन्द्रियों को नियंत्रित नहीं किया जाता, तब तक मृत्यु भय दूर नहीं होता। कछुआ जब तक अपना मुख और अपने पाँव भीतर रखता है, तभी तक वह सुरक्षित है! इन्द्रियों के संवरण के पश्चात् ही तप, त्याग, दान आदि को मूल्य प्राप्त होता है और जीवन में सिद्धि भी प्राप्त होती है।

इन्द्रिय दमन किये बिना, काज सफल नहीं होत।
जयन्त सेन दमन कर, प्रगटे आतम ज्योत॥

ज्योति को स्नेह की आवश्यकता होती है। इस आत्मज्योति को भी प्रज्वलित रहने के लिए शील स्नेह की आवश्यकता है। जब तक जीवन में शील स्नेह है, तब तक यह ज्योति सदा जगमगाती रहेगी। शील का स्नेह आत्मज्योति को प्रज्वलित रखता ही है। वृद्धावस्था तो एक प्रकार से जीवन का अन्त है। उस अवस्था में शीलस्नेह इतना काम नहीं देता, जितना युवावस्था में देता है। अतः जब तक इन्द्रियाँ कार्यक्षम हैं, तब तक ही धर्म लाभ ले लेना चाहिये।

निर्वाण दिपे किमु तैलदानम्। दीपक बुझ जाने पर तैलदान कोई अर्थ नहीं रखता।

श्री विमल केवली भगवान के मुखविन्द से विजय-विजया का चरित गान श्रवण कर सेठ जिनदास बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके मन में उस अनोखे दंपति के दर्शन की उत्कंठा जागृत हो गयी वह तुरन्त कौशांबी की ओर खाना हुआ।

कौशांबी पहुँचते ही वह सीधे सेठ अर्हदास के घर पहुँचा। उसने हाथ जोड़ कर अर्हदास से कहा — “सेठ साहब! आप धन्य हैं। आपका घराना ऊँचा है। आपके सुपुत्र ने आपके वंश को बहुत ऊँचा उठाया है। स्वयं विमल केवली भगवान ने उनकी प्रशंसा की है। मैं स्वयं उनके दर्शन के लिए आपके दरवाजे तक आया हूँ।”

अर्हदास बोले — “भाई! आप तो पहेली बुझा रहे हैं। आपकी बात मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। कृपया साफ-साफ बताइये कि बात क्या है?”

इस पर जिनदास ने कहा— “सेठ साहब! विजय और विजया जैसे रत्नदीप आपके

घर को तो प्रकाशित कर ही रहे हैं, पर वे दूर देशों में भी अपने निष्कलंक अनुपम शील तेज का प्रकाश फैला रहे हैं। उसी ज्योति के प्रभाव से उनके दर्शन के लिए यहाँ आया हूँ। वे विवाहित होते हुए भी अविवाहित हैं, भोगी दृश्यमान होते हुए भी अनुत्तर योगी हैं। विजय कृष्णपक्ष में ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं और विजया देवी शुक्ल पक्ष में। ये दंपति अखंड शीलव्रतधारी हैं। इनके कारण आपका गृह धर्ममन्दिर बन गया है। यहाँ अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि जीवनमूल्यों का पालन किया जाता है।

आपका यह गृह गंगा-सा निर्मल है, जहाँ अनुपम शीलव्रतधारी रत्न शोभायमान है। मेरी भावना थी कि मैं चौरासी हजार मुनियों को आहार वहोष्कर धर्मलाभ उपार्जन करूँ; पर ऐसा संभव नहीं था। केवली भगवान ने मेरी यह समस्या हल कर दी। उन्होंने कहा कि विजय और विजया का भोजनादि से सत्कार करने पर मुझे वह लाभ मिल सकता है। अतः आप मुझ पर अनुग्रह किजिये और मुझे साधर्मिक भक्ति का लाभ लेने दीजिये।”

अर्हदास सेठ ने जिनदास की भावना को मान दिया। जिनदास ने बड़े भक्तिभाव से उस दंपति का आहारादि से सत्कार किया और परम सन्तुष्ट हो कर अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

अब तो रहस्य प्रकट हो चुका था, अतः उन दोनों ने प्रकट रूप से चारित्र ग्रहण करने का निर्णय ले लिया। क्योंकि—

ज्ञाने तपसि चारित्रे, सत्येवास्योप जायते।

विशुद्धिस्तदतस्तस्य, तथा प्राप्तिरिहेष्यते

ज्ञान, तप और चारित्र के कारण आत्मा की विशुद्धि होती है। संसार में रहते हुए इनकी आराधना सम्यक् रूप से नहीं हो सकती, क्योंकि गृहस्थ जीवन में प्रतिक्षण इनमें अन्तराय की संभावना बनी रहती है। मोक्ष ही जीव का परम और चरम गन्तव्य है, क्योंकि इसके बिना जीव का संसार भ्रमण नहीं रुकता। अतः महाव्रत पालन रूप भागवती प्रव्रज्या जीवन में अत्यन्त आवश्यक है।

कृत्स्न कर्म क्षयान्मोक्षो, जन्म मृत्यादि वर्जितः।

सर्व बाधा विनिर्मुक्तः, एकान्त-सुख-सङ्गतः ॥

संपूर्ण कर्मक्षय से जन्म-मृत्यु वर्जित, समस्त बाधाओं से मुक्त और एकान्त सुख रूप मोक्ष प्राप्त होता है।

मोक्ष एक अनिर्वचनीय सुखावस्था है। उसमें न भूख है, न प्यास, न तृष्णा है न वितृष्णा और न जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु ही। वहाँ केवल स्वाधीन अविनाशी सुख ही विद्यमान है। वह सुख आत्मा के अनन्त चतुष्टय के पूर्ण प्रकटीकरण के कारण होता है। वह भयमुक्त होता है।

अपरिष्वत्तमौत्सुक्य रहितं निष्प्रतिक्रियम्।

सुखं स्वाभाविकं तत्र, नित्यं भयविवर्जितम् ॥

मुमुक्षु विजय अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

उसने पिता से कहा— “हे पिताजी! हम दोनों संयम ग्रहण करना चाहते हैं, अतः आप हमें अनुमति प्रदान कीजिये।” इसी प्रकार का निवेदन उसने अपनी माता से व अन्य आस जनों से भी किया।

श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन (१७)

(श्री सीमन्धर साहिबा-म्हारा बालानीए राग)

विदेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

श्रीमाता सुत स्वाम नी, सुण शोभन जी रे ।
ओलगडी अछे आज, मिलु महाराज मनमोहनजी रे ।
वाट बहे अति वेगलो, सुण शोभन जी रे ।
चलता चाल संचार, अतिय न पार मनमोहनजी रे । १ ।
प्रेमे पद-पद पेखतां, सुण शोभन जी रे ।
जोजन जाण असंख्य, छे नहीं पंख मनमोहनजी रे ।
के इक कर्म झकोर ती सुण
कहे अम मिलिया कंत, अति सुखवंत मनमोहनजी. ॥ २ ॥

श्री माता के पुत्र रत्न श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र से गुरुदेव श्री अर्ज करते हुए कह रहे हैं कि हे प्रभु । आप मेरी बात सुनिये । मेरी प्रबलेच्छा उत्पन्न हो गई है कि मैं आप से आकर मिलूं । आपश्री मोक्ष नगर में बिराजमान है मेरी प्रबल भावना है आपसे वहां आकर मिलने की, पर क्या करूं ? मार्ग अत्यंत दूर है, अलग है । मैं आपके पास आने के लिए चंल तो रहा हूँ पर अभी तक आपश्री के पास पहुँच नहीं सका । पग-पग पर प्रेम पूर्वक देखते हुए चलता हूँ अर्थात् प्रत्येक क्रिया में आपकी आज्ञा का पालन करता हुआ आपश्री के पास आने के लिए प्रवृत्तमान हूँ । मार्ग असंख्य योजन का है और मुझे पंख नहीं मिले है कि उड़कर आपश्री के पास आ जाऊँ ।

गुरुदेवश्री ने यहां पंख कहकर यह कहा है कि क्षपक श्रेणि रुपी पंख मुझे नहीं मिले इसलिए उड़कर अतिशीघ्रता से आपश्री के पास नहीं आ सकता । क्षपक श्रेणि रूप पंख न होने से सर्व विरति रूप पैदल मार्ग से आने हेतु मार्ग असंख्य योजन दूर है उस मार्ग को तय करने में देवलोक का कम से कम एक भव तो करना ही पड़ता है । इसलिये समय भी विशेष लगता है । वह असंख्य योजन का मार्ग पार करने जैसा होने से असंख्य योजन दूर कहा है ।

कर्म के भारीपन के कारण कोई-कोई जीवात्मा ऐसा कहते है कि हमे भगवंत मिल गये हैं । भगवंत अति सुखवंत है, अत्यंत सुखी है ।

आबशे इहां बली अबतरी सुण ० ।
रचना रचशे रसाल, अति उजमाल बन ।
मिलनी ए मानुं नहीं सुण ० ।

एम तो वार अनंत, नहीं दुःख अंत मन ० ॥ ३ ॥

निगोद थई तिहां उपनो सुण ० ।

अवगाहन मांहे एह लही लघु देह । मन ० ।

मिलवुं एहवुं मानीये सुण ० ।

ज्योति में ज्योति जगीश, जग जन ईश मन ० ॥ ४ ॥

भगवंत की प्राप्ति हो गई ऐसा कहने वाले यह भी कहते हैं कि अधर्मियों का पापियों का नाश करने हेतु वे ईश्वर इस पृथ्वी तल पर वहां का सुख छोड़कर अवतार लेंगे, जन्म लेंगे, गर्भावास की गंदगी में पीड़ा सहन करने हेतु आयेंगे और अति सुंदर जगत की रचना भी वे करते हैं और उसका विनाश भी वे करते हैं ।

इस प्रकार के ईश्वर से मिलना, मिलना माना नहीं जा सकता । इस प्रकार का मिलन भी मिलन नहीं करते हुए हे भगवंत सिद्धात्माओं की अवगाहना में मैं अनंत बार जन्म मरण कर सिद्धात्माओं से मिला ही हूँ ।

ईश्वरावतार वादी जो यह कहते हैं कि हम सभी ईश्वर के अंश रूप में हैं । ईश्वर का अंश ईश्वर में मिल जाता है अतः हमें भगवंत मिल गये हैं ऐसी मान्यतावालों को गुरुदेव श्री ने स्पष्ट ज्ञान करवाया है । वह मिलना नहीं होता, क्योंकि ईश्वर का अंश ईश्वर से दूर कभी नहीं होता । ईश्वर सुख निमग्नता को छोड़ कर स्वेच्छा से गर्भ की पीड़ा सहन करने नहीं आयेंगे । ऐसे ईश्वर वादियों के मिलने जैसा मिलना तो मैंने सिद्धात्माओं से अनंतबार किया है । ईश्वरवाद में ईश्वर जीवात्माओं को मिलने आता है । उसे मिलना कहा है । जिनशासन कहता है कि सिद्धात्माओं को मिलने के लिए जो जीवात्मा उनके स्थान पर गये उनसे मिले फिर भी उनका मिलना, मिलना नहीं कहा । क्योंकि जिनसे मिलना है वे कर्म रहित है और मिलनेवाला कर्म सहित है । इन दोनों का मिलना, मिलना नहीं कहा जाता ।

गुरुदेवश्री ने कह दिया “मिलनी ए मानुं नहीं” ऐसा अवगाहना में जाकर मिलना मिलने के रूप में नहीं माना जाता । आगे गुरुदेवश्री ने स्पष्ट कह दिया है कि मिलवुं एहवुं मानीये, ज्योति में ज्योति जगीश ।

मिलना तो ऐसा होता है जो ज्योति में ज्योति सदृश हो । मिलनेवाला भी जग जन का ईश हो । कर्मरहित होकर कर्म रहित भगवंत से मिलना मिलने के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है । दोनों ईश भगवंत रूप में सिद्धात्माओं के रूप में मिलते हैं तभी मिलना कहा जाता है । हे कुंथुनाथ भगवंत मैं आपसे कर्म रहित होकर मिलूंगा तभी जग जन का ईश बनूंगा ।

समकिते कुंथु स्वामने सुण ०

अंशे मलीयो आज, सरियां सहु काज मन ० ।

सूरि राजेन्द्र नी संपदा सुण ० ।

पामशुं प्रेमे अपार, सवि सुख सार मन ० ॥ ५ ॥

ज्योति से ज्योति के रूप में मिलने की बात वर्तमान काल में अत्यंत दूर की है। फिर भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के कारण श्री कुंथुनाथ स्वामी से आंशिक मिलना तो हो ही गया है अतः मेरे वांछित कार्य आज सिद्ध हो गये हैं।

आंशिक मिलन हो जाने से अति शीघ्रता से सिद्ध पद की अपार संपदा प्रेमपूर्वक प्राप्त करूंगा। जिससे सभी सुखों का सारभूत मुक्ति का सुख प्राप्त हो जायगा।

इस स्तवन में गुरुदेव श्री ने प्रभु मिलनेच्छा, क्षपक श्रेणि का विरह, ईश्वरवादियों का ईश्वर से मिलना, मिलना नहीं कह सकते, निगोद के रूप में सिद्धात्माओं से मिलना भी मिलना नहीं कह सकते, मिलना तो ज्योति से ज्योति के रूप में ही होता है और आंशिक मिलन सम्यग्दर्शन का होता है। इन बातों का सुंदरता पूर्वक आलेखन किया है। प्रभु के गुण-गान के रूप में गागर में सागर भर दिया है।

लघुकथा

मोक्ष का अधिकारी

तथागत बुद्ध का पीयूष वर्षी प्रवचन चल रहा था। प्रवचन के पश्चात एक युवक ने तथागत को नमस्कार कर पुछा — “भन्ते” इस विराट विश्व में जितने जीव हैं क्या उन सभी को मोक्ष प्राप्त हो सकता है ?”

बुद्ध- “अवश्य ही, सभी जीवों को मोक्ष मिल सकता है।”

युवक- “तो फिर सभी मुक्त क्यों नहीं हो जाते ?”

बुद्ध- “तुम कल प्रातः आना, मैं इसका रहस्य तुम्हें बताऊंगा।”

प्रातः होते ही युवक बुद्ध के श्री चरणों में पहुँचा। बुद्ध ने उसे एक कागज व कलम थमाते हुए कहा- “युवक ! आज नगर के प्रत्येक व्यक्ति के पास जाओ, उनसे मिलो और जानो कि कौन क्या चाहता है ? यह सूची तैयार कर मेरे पास लौटो।

जब युवक सूची तैयार करके लौटा तो बुद्ध ने पुछा- “बताओ कौन क्या चाहता है ?

युवक- “किसी को धन की कामना है, किसी को वैभव की तमन्ना है, किसी को सन्तान की चाह है, तो किसी को स्त्री की इच्छा है, कोई स्वास्थ्य की प्रार्थना करता है, तो कोई मकान आदि की।”

बुद्ध- “नगर के इतने लोगों में से किसी को मोक्ष की इच्छा है ?”

युवक बोला- “भगवन किसी को नहीं।”

बुद्ध- जो मोक्ष की ओर आँख उठाकर देखना भी पसन्द नहीं करते, तुम ही बताओ उन्हें मोक्ष किस प्रकार मिल सकता है ? केवल मोक्ष को चाहने से ही मोक्ष नहीं मिलता उसके लिए श्रद्धापूर्वक प्रबल प्रयत्न भी अपेक्षित है।

युवक को बुद्ध का समाधान पसन्द आया और नमस्कार कर बोला-

“वस्तुतः आपका कथन सत्य है।”

भारतीय अहिंसा संस्कृति की रक्षा करें, हिंसा रोकेँ!

— श्री रतनलाल मेहता, (झाबुआ)

वर्तमान में भारत की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। एक ओर भयंकर भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, अनैतिकता, चरित्रहीनता, आतंकवाद व्याप्त है। वहीं हिंसा ने विकराल रूप धारण कर लिया है एवं हिंसात्मक गतिविधियां दिनों दिन बढ़ती जा रही है। शासकीय स्तर पर स्वतंत्र भारत में जिस प्रकार भयंकर हिंसक योजनाएं कार्यान्वित हो रही है, नये-नये आधुनिक बुचड़खाने बनाये जाकर भारी हिंसा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है एवं असंख्य मूक पशुओं का कत्लेआम हो रहा है। वह तो इस महावीर, बुद्ध, राम-कृष्ण, ऋषि मुनियों के अहिंसक देश के लिए अत्यन्त शर्मनाक है। आजाद भारत में गौवंश का कत्लेआम हो रहा है। इसका मांस विदेशों में भेजा जाकर शासन विदेशी मुद्राएं अर्जन कर रही है। भारतीय अहिंसा, संस्कृति की पूज्य गौमाता का कत्ल करके धनार्जन करना भारी कलंक एवं निर्दयता, क्रूरता है।

चहूँ ओर खुले आम मांस, अंडे, बिक्री एवं उसका प्रचार प्रसार किया जा रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि शासन मत्स्य, मुर्गीपालन, रेशम केन्द्र, शराब आदि के हिंसक व्यवसाय को संचालित व प्रोत्साहित करके देश को भयंकर हिंसा की ओर ले जा रहा है।

दिल्ली की यमुना पार की बस्ती “षटपडगंज” में ४५ एकड़ भूमि पर एक विशाल आधुनिक ग्रंथों से युक्त बुचड़खाना निर्माण किये जाने की योजना है। इसप्रकार भारतीय अहिंसा संस्कृति का ढिंढोरा पिटनेवाली सरकार द्वारा भारी हिंसा एवं हिंसक योजनाओं को प्रश्रय देना बड़ा दुष्कृत्य है, इसको रोकना परमावश्यक है।

“Strike the iron while it is hot” की कहावत अनुसार है। ऐसे समय में यदि भारत के समस्त संतगण संगठित होकर अहिंसा - प्रेमी जनता को जागृत करें, एवं शासन को हिंसा बंद करने के लिए तीव्र आन्दोलन द्वारा बाध्य करे तो अवश्य सफलता प्राप्त हो सकती है। आन्दोलन पूर्ण अहिंसक होना चाहिये।

देश के समस्त संतगण, विश्व हिन्दू परिषद, भारत जैन महामंडल, जीव दया मंडल एवं अन्य समस्त अहिंसा प्रेमी संस्थाओं का यह सर्वोच्च प्राथमिक कर्तव्य है कि बढ़ती हुई भयंकर हिंसा एवं गौ - वध को बंद करने के लिए ठोस आन्दोलनात्मक कदम उठावे। देश की आजादी के पश्चात ऐसी आशा अपेक्षा कल्पना ही नहीं थी कि गांधीजी की अहिंसा की दुहाई देनेवाला शासन, प्रशासन, नेतागण इसप्रकार के हिंसात्मक व्यवसाय का प्रचार - प्रसार करेगा, जो कि अंग्रेजी शासन के समय कदापि नहीं थी एवं उस समय इतनी भयंकर हिंसा नहीं थी जो वर्तमान में हो रही है।

केन्द्र एवं राज्य शासनों से भी मेरा विनम्र निवेदन है कि घोर हिंसा एवं हिंसात्मक व्यवसाय को बंद कर पूज्य राष्ट्रपिता गांधीजी व गौ हत्या बंद करने के लिए देशहित में बलिदान, अनशन करके मृत्युवरण करनेवाले विनोबा भावे की आत्मा को शांति प्रदान करे।

मानव में मानवता कब आती है ?

स्व. आचार्य श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

किसी व्यक्ति के शरीर में जब पैशाचिक आवेग खड़ा होता, तब वह उन्मत्त, प्रलापी, बन कर रूप-रंग हीन एवं अचेतन-सा बन जाता है। उसे अपने कर्तव्य का कुछ भी भान नहीं रहता। पागल होकर इधर उधर भटकता रहता है। यही अवस्था चिन्ताशील मनुष्यों की भी हुआ करती है। चिन्ता वास्तव में मनुष्य को अचेतन से भी बढ़ कर मनुष्यत्व-हीन बना दिया करती है। चिन्ता आवेश में मनुष्य रूप, रंग, शक्ति, शारीरिक सम्पत्ति, चातुर्य, धैर्य, धर्म-भावना आदि मनुष्यता के समस्त गुणों का सर्व-नाश कर बैठता है। इसी से चिन्ता को चिन्ता से भी विशेष हानिकारक बताया है। बड़े-बड़े महापुरुष एवं पूर्वाचार्य जितने भी हो गये हैं, वे सब चिन्ता रहित काम किया करते थे। इसी से उन्हें अपने कामों में पूर्ण सफलता मिलती थी। ऐसा वे नहीं करते थे कि किसी वस्तु की चिन्ता में इतना मग्न हो जाना और उसके लिए इतना छटपटाना कि अपना कर्तव्य, अकर्तव्य का भी भान नहीं रहे!

किसी मनुष्य को जब कोई विशेष वस्तु मिल जाती है, तो वह उसी के प्रलोभन में या उसी की हर तरह रक्षा करने में इतना आसक्त हो जाता है कि वह अपनी प्राथमिक सत्व गुणमय सादी अवस्था भूल कर प्राप्त वस्तु की एक धुन में अपनी सारी मानसिक शक्ति लगा देता है और कर्तव्य विमुख होकर अपने किए हुए कामों को भी बिगाड़ बैठता है। इसके अतिरिक्त उसे अन्य कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ता, यहां तक कि वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य को भी नहीं सम्भाल पाता और प्रति दिन एक के बाद दूसरी आपत्तिमय घुलमिल कर दुखी होता रहता है। मिलने वाली विशिष्ट वस्तु में कुछ ऐसा प्रलोभन एवं आकर्षण रहता है जिसके रूप के पीछे मनुष्य पागल बन जाता है कहावत भी है कि सफेद टुकड़ों की मार बड़ी होती है खराब' जब किसी को सफेद (चांदी का) टुकड़ा मिल जाता है, तब वह फिर उसी को पाने के लिए बड़े से बड़े और मनुष्यता से गिराने वाले पाप-कर्म करते नहीं हिचकिचाता केवल यही एक चिन्ता उसके हृदय में होती जाती है कि किस प्रकार इसकी सुरक्षा और अभिवृद्धि हो। चाहे कितना ही भगवद् भक्ति परायण, मननशील, योगी, तपस्वी एवं महर्षि क्यों न हो, उसको इस बात की चिन्ता पथ-भ्रष्ट किये बिना नहीं रहती।

किसी नगर में एक श्रीमन्त सेठ के पड़ोस में कोई मोची (चमार) रहता था। जाति का तो वह चमार था पर था बड़ा सन्तोषी। जूते बनाने के धन्धे में केवल आठ आने कमा कर उसी से अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करता और प्रभु भजन में तल्लीन रहता था। इधर श्रीमन्त सेठ सारे दिन दूकानदारी के प्रपंच में अशान्त सा बना रहता था। उसके सिर पर धन्धों की चिन्ता हर



तमय बनी रहती थी। इसी चिंता के मारे दुःखी होकर कभी-कभी सेठ अपने पड़ोसी मोची के द्वारा गाये गये प्रभु के गीतों (भजनों) को सुन लिया करता था जिससे उसको कभी शांति मिल जाती थी।

एक दिन सेठ ने पड़ोसी मोची से पूछा कि—‘मित्र! तुम दिन भर में इस धन्धे से कितना कमा लेते हो?’ मोची ने कहा—‘मैं हमेशा आठ आने कमाता हूँ, और फिर प्रभु भक्ति में लीन रहता हूँ। सेठ ने कहा— तुम्हारे भजन सुनने से मुझे कुछ शांति मिल जाती है। मैं अपनी हार्दिक अशांति को मिटाने के लिए कई उपाय, किये पर वे सब व्यर्थ सिद्ध हुए। परन्तु जबसे मैंने तुम्हारे भजनों को सुनना प्रारम्भ किया है तब से हृदय में शांति छाई हुई है। इसके फल स्वरूप मैं तुम्हें पचास रुपया पारितोषिक देता हूँ। सेठ ने इस प्रकार अपने हार्दिक भाव प्रकट करते हुए मोची को रुपये दे दिये। मोची ने भी सेठ के दिये हुए पचास रुपये सहर्ष ले लिए।

एक दो दिन बाद मोची के हृदय में रुपयों के प्रति मोह जागृत हो गया। दिन में चार पाँच बार रुपयों को गिन कर उनकी सावधानी से देख भाल करने लगा। रात्री में भी रुपयों को बड़ी सतकर्ता के साथ गिनता और सोते समय अपने सिर के नीचे रख कर सोता। इस प्रकार रात्री में कई बार उठकर उनकी सार सभ्माल करने लगा। इस प्रकार मोची रुपयों के मोह में अथवा चिंता में अपने कर्तव्य को भूल गया। इसी चिंता के कारण मोची को रात्री में भी पूरी नींद नहीं आती थी। उसे काम करते समय दिन में नींद में झोंके आया करते थे और दिन में वह कुछ सो भी जाया करता था। परन्तु रुपयों की चिंता उसका पीछा नहीं छोड़ती थी।

यह कुदरती नियम है कि जब मनुष्य के पूर्वभ्रव के अच्छे संस्कार होते हैं तो वह उन संस्कारों के कारण अपनाये हुए असन्मार्ग को छोड़कर पुनःसन्मार्ग की ओर प्रवृत्त हो जाया करता है। इसी नियम के अनुसार मोची के हृदय में अकस्मात् विचार उत्पन्न हुआ कि मैं अब तक बड़ी शांति के साथ अपना सात्त्विक जीवन व्यतीत करता आ रहा हूँ। न मुझे किसी प्रकार के असन्तोष या मोह ने ही अपने चक्कर में फँसाया जिसके फल स्वरूप मैं हमेशा प्रभु भजन करता हुआ कर्तव्य के साथ अपना परमार्थिक जीवन बिताता था। आजकल क्या बात है कि मैं इन दिनों किसी विशेष चिंता में हो रहा हूँ। चिंता का इतना भारी वेग बढ़ जाने का कारण सेठ का रुपया है। इसी की संरक्षण चिंता में मेरा प्रभुभजन भी छूट गया और शांति लाभ लुप्त गया। अतः यह चिंता दायक रुपया सेठ को वापिस कर देना चाहिए इसके बिना चिंतावेग नहीं मिट सकता।

ऐसा विचार कर मोची रुपया लेकर सेठ के पास गया और रुपया देते हुए कहने लगा कि इन रुपयों को आप किसी अच्छे कार्य में देना, मुझे तो नहीं चाहिए। इसलिए कि इसी के कारण मेरा भजन-भाव और सारा आनन्द नष्ट हो गया है। मोची के आकस्मिक परिवर्तन से सेठ को भारी आश्चर्य हुआ और मोची पूर्ववत् सन्तोषित हो प्रभु भजन में लीन हो गया।

सारांश यह है कि चिंता एक महा रोग है। इसका त्याग किये बिना मनुष्य अपनी उन्नति नहीं कर सकता। इसीलिए चिंताजनक, मोहक वस्तुओं के मोह को सर्वथा तिलांजली देकर प्रत्येक को अपूर्व सन्तोष के साथ प्रभु भजन एवं सदाचरण में निमग्न रहना चाहिए। मानव विकास के लिए संसार में लज्जा भी एक महान् गुण है। जिस प्रकार दया, दाक्षिण्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि सद्गुणों से मनुष्य कहलाता है, उसी प्रकार सब गुणों की

उत्पादिका माता लज्जा से भी मनुष्य की मनुष्यता में चार चांद लग जाते हैं। अर्थात् अन्य समस्त सदगुणों के होते हुए भी जब तक लज्जा का विशेष गुण मनुष्य में नहीं, तब तक वह कदापि सफल मानव नहीं कहलाया जा सकता। आज जितने व्यक्ति संसार में प्रशंसनीय और आदर के पात्र हैं उन सबका एक मात्र कारण उनकी लज्जा ही है।

लज्जा विहीन व्यक्ति कभी न घर में प्रशंसनीय होता है और न बाहर। उसका चारों ओर तिरस्कार ही तिरस्कार होता है। सिर्फ तिरस्कार ही नहीं साथ ही उस पर कई आपत्तियां भी आती हैं जिनसे वह अपनी निर्लज्जता के कारण आसानी से छुटकारा नहीं पा सकता। निर्लज्ज मनुष्य पर संसार भर के अत्याचार दुष्कर्म और घृणित कार्य अपने प्रभाव जमाते रहते हैं। संसार में ऐसी कौन-सी आपत्ति है जो लज्जा हीन व्यक्ति पर अपना असर जमाये बिना न रहती हो।

लज्जाशील व्यक्ति का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उसके हृदय में नीति, प्रेम, दया, सरलता सदाचार, सभ्यता आदि उत्तमोत्तम सदगुण स्थिर रूप से निवास करते हैं। वह प्रत्येक क्षेत्र में अपना साधिकार प्रभाव जमा कर अपने कार्य में बड़ी सरलता के साथ सफलता प्राप्त कर सकता है, न उसको किसी बात का भय रहता है न चिंता। वह तो हमेशा निर्भीक एवं निश्चिन्त हो कर अपनी साधना में तल्लीन रहता है इसी प्रकार लज्जा के कारण उसमें विनय तो कुट-कुटकर भरा रहता है जिससे वह दुर्गम से दुर्गम स्थान पर पहुँच कर कठोर से कठोर व्यक्ति के पाषाण हृदय में भी अपना स्थान कर लिया करता है। कहने का सारांश यह है कि एक लज्जा ही ऐसा विशिष्ट गुण है जिसे पा लेने पर पुरुष का हृदय मानवता के विकास के लिए उपयुक्त बन सकता है।

जीवन की परिभाषा

जीवन तभी जीवन है—जब वह विशिष्ट उत्साह की उताल तरंगों की ध्वनि-प्रतिध्वनि से गुंजता हो। वह जीवन ही क्या, जो सब ओर से निराश-हताश होकर एक चिर-मृत शरीर के रूप में अकर्मण्यता के कारण निस्तरंगित पड़ा-पड़ा सड़ रहा हो। याद रखो, जीवन पतझड़ नहीं; अपितु सत्यं, शिवं सुन्दरं का महकता बसन्त है।

उठो, जागो, साहस करो कर्तव्य की कंटकाकीर्ण ऊँची-नीची राहों को पार करते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुँचो। हमारे महान् पूर्वजों के इस उद्बोधन को कभी न भूलो—

उत्तिष्ठत जागृत प्राप्यवरान निबोधतः ।

—उठो, जागो और महान् सत्पुरुषों के श्री चरणों में पहुँच कर जीवन निर्माण के सम्बन्ध में सम्यक्- बोध प्राप्त करो।

—उपाध्याय अमरसुनि

आगमवाणी

आत्म - विजय

पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिनिगिज्झ,
एवं दुक्खा पमोक्खसि ।

हे पुरुष। तू अपने आपका निग्रह कर स्वयं के निग्रह से ही तू समस्त दुखों से मुक्त हो जायेगा।

-आचारंग ३/३/११९

वरं में अप्पा दन्तो,

संजमेण तवेण य ।

माजहं परेहिं दम्मन्तो,

बंधणोहि वहेहि य ।

दूसरे लोग बंधन और वध के द्वारा मेरा दमन करें, इसकी अपेक्षा यही अच्छा है कि मैं स्वयं संयम और तप के द्वारा अपनी आत्मा का दमन करूँ।

दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजली



स्व. श्रीमती. तुलसीबाई सेठिया नामच (म. प्र.)

स्वर्गवास १/६/१९९२

हम हैं आपके श्रद्धानवत्

परिवार प्रमुख - भँवरलाल मोतीलाल सेठिया

पति - लक्ष्मीलाल सेठिया

पुत्र - अभयकुमार, धन्नालाल, राकेशकुमार

पुत्रवधु - श्रीमती मंजुकुमारी, श्रीमती राजकुमारी

पुत्री - आशाकुमारी W/o. सुरेशचंदजी - इन्दौर

पुत्री - लताकुमारी W/o. पारसमलजी - प्रतापगढ़

पुत्री - उर्मिलाकुमारी W/o. राकेशकुमारजी - धरियावद

पौत्र - गजेन्द्र, सौरभ, दिपेश

पौत्री - कु. खुशबू, कु. शालिनी, कु. रुबी

एवं समस्त सेठिया परिवार नीमच

फर्म - सेठिया इलेक्ट्रीकल्स - बस स्टैण्ड, नीमच (म. प्र.)

महावीर इलेक्ट्रॉनिक्स - बाँसवाड़ा (राजस्थान)

प्यारी बहना - स्व. तुलसीबाई को शत शत वन्दन

अनुजभ्राता - हंसपाल, महावीर जैन - बाँसवाड़ा

फर्म - श्री महावीरं दवाखाना - बाँसवाड़ा (राजस्थान)

श्री महावीर स्टोन - बाँसवाड़ा (राजस्थान)

॥ ५ ॥ आचाराङ्ग की सूक्तियाँ ॥ ५ ॥

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

(११०) 'एतदेवेगेसिं महब्भयं भवति ॥ १-५-२-१५४ ॥'

● यह परिग्रह ही परिग्रहियों के लिए महाभय का कारण होता है।

(१११) 'पुरिंसा! परमचक्ख! विपरिक्कम! एतेसु चेष बंभचेरं ति बेमि ॥ १-५-२-१५५ ॥'

● हे परमचक्षुष्मान् (एकमात्र मोक्षदृष्टिमान्) पुरुष! तू (परिग्रह आदि से मुक्त होने के लिए) पुरुषार्थ (पराक्रम) कर। (जो परिग्रह से विरत हैं) उनमें ही (परमार्थता) ब्रह्मचर्य होता है—ऐसा मैं कहता हूँ।

(११२) 'बन्धपमोक्खो तुज्झउज्झत्थेव ॥ १-५-२-१५५ ॥'

● बन्ध और मोक्ष तुम्हारी आत्मा में ही स्थित हैं।

(११३) 'पमत्ते बहियापास, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १-५-२-१५६ ॥'

● जो प्रमत्त (विषयादि प्रमादों से युक्त) है, उन्हें निर्ग्रन्थ धर्म से बाहर समझ (देख) अतएव अप्रमत्त होकर परिव्रजन/विचरण कर।

(११४) 'समियाए धम्मे आरिएहिं पवेदिते ॥ १-५-३-१५७ ॥' तथा ॥ १-८-२०९ ॥

● आयों (तीर्थकरों) ने समता में ही धर्म कहा है।

(११५) 'तम्हा बेमि णो णिहेज्ज वीरियं ॥ १-५-३-१५७ ॥'

● मैं कहता हूँ, तुम मोक्षमार्ग की साधना में अपने वीर्य (शक्ति) को छुपाओ मत।

(११६) 'इमेण चेष जुझाई, किं ते जुज्झेण बज्झतो? जुद्धारिहं खलु दुल्लभं। ज्जेत्थे कुसलेहिं परिण्णाविवेगे भासिते ॥ १-५-३-१५९ ॥'

● इसी (कर्म शरीर) के साथ युद्ध कर। दुसरों के साथ युद्ध करने से क्या मिलेगा? (अन्तर्-) युद्ध के योग्य साधन अवश्य दुर्लभ हैं। इसके लिए तीर्थकरों ने परिज्ञा और विवेक - ये दो शस्त्र बतलाये हैं।

(११७) 'पंतं लूहं सेवन्ति वीरा सम्मतदंसिणो ॥ १-५-३-१६१ ॥'

● समत्वदर्शी वीर (मुनि) प्रान्त (बासी, बचाखुचा या थोड़ा-सा), और रूखा- (निरस-विकृति रहित) आहारादि का सेवन करते हैं।

(११८) 'एस ओहंतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरते वियाहिते ति बेमि ॥ १-५-३-१६१ ॥'

● इस जन्म मरण के प्रवाह (ओघ) को तरनेवाला मुनि तीर्ण, मुक्त और विरत कहलाता है।

(११९) 'एतं ते मा होड। एयं कुसलस्स दंसणं ॥ १-५-४-१६२ ॥'

शाश्वत धर्म/अगस्त-९२



● (अव्यक्त-अपरिपक्व अवस्था में) मैं अकेला विचरण करूँ, ऐसा विचार भी तुम्हारे मन में न हो! यह कुशल (महावीर) का दर्शन/उपदेश है।

(१२०) 'तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेदितं ॥ १-५-५-१६८ ॥'

● वही सत्य है, जो तीर्थंकर-प्ररूपित है। इसमें शंका के लिए कोई अवकाश नहीं है।

(१२१) 'तमु सि णाम तं चेव जं हंतव्वं, अज्जावेतव्वं, परितावेतव्वं, परिघेतव्वं, एवंति चेव जं उद्देतव्वं ति मण्णसि। अंजू चेयं पडिबुद्धजीवी। तम्हा ण हंता ण विघातए। अणुसंवे यणमप्पाणेणं जं हंतव्वं नाभिपत्थए ॥ १-५-५-१७० ॥'

● तू वही है, जिसे हननयोग्य, आज्ञा में रखने योग्य, परिताप देने योग्य, दास बनाने योग्य और मारने योग्य मानता है। ज्ञानी पुरुष ऋजु होता है। वह प्रतिबोध पाकर जीनेवाला होता है। इस (आत्मैक्य के प्रतिबोध) के कारण वह स्वयं हनन नहीं करता, और न दूसरों से करवाता है, न ही हनन करने वाले का अनुमोदन करता है। कृतकर्म के अनुरूप स्वयं को ही उसका फल भोगना पड़ता है। इसलिए, किसी का हनन करने की इच्छा न करे।

(१२२) 'जे आता से विण्णाता, जे विण्णाता से आता। जेण विजाणति से आता। पडुच्च पडिसंखाए। एस आतावादी समियाए परियाए वियाहिते ति बेमि ॥ १-५-५-१७१ ॥'

● जो आत्मा है, वह विज्ञाता है। जो विज्ञाता है वह आत्मा है। क्योंकि (मति आदि) ज्ञानों से आत्मा (स्व-पर को) जानता है, इसलिए वह आत्मा है। उस (ज्ञान की विभिन्न परिणतियों) की अपेक्षा से आत्मा की (विभिन्न नामों से) प्रतीति/पहचान होती है। वह आत्मवादी सम्यक्ता (सत्यता या शमिता) का पारगामी (या सम्यक् भाव से दीक्षापर्यायवाला) कहा गया है।

(१२३) 'उद्धं सोता अहे सोता तिरियं सोता वियाहिता।

एते सोया वियक्खाता जेहिंसंगं ति पास हा ॥ १-६-६-१७४ ॥

● ऊपर (आसक्ति) के स्रोत हैं, नीचे स्रोत हैं, मध्य में स्रोत है। ये स्रोत कर्म के आम्रव-द्वार कहे जाते हैं, जिसके द्वारा प्राणियों को आसक्ति पैदा होती है-ऐसा तुम देखो।

(१२४) 'एहं आगतिं गतिं परिण्णाय अच्चेति जातिमरणस्स वडुमगं वक्खात रते। सव्वे सरा नियट्ठंति, तक्का जत्थ ण विज्जति, मती तत्थण गाहिया। ओए अप्पतिट्ठाणस्स खेतण्णे।

से ण दीहे, ण हस्से, ण वट्ठे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले, ण किण्हे, ण णीले ण लोहिते, ण हालिहे, ण सुक्किले, ण सुब्धिगंधे, ण दुब्धिगंधे, ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे, ण कक्खडे, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे, ण काउ, ण रूहे, ण संगे, ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अण्णहा।

परिण्णे सण्णे। उवमाण विज्जति। अरुवी सत्ता। अपदस्स पदं गत्थि।

से ण सद्दे ण रुवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेतावंति-त्ति

अगस्त-९२

(२०)

शाश्वत धर्म

बेमि ॥ १-५-६-१७६ ॥'

● 'मुक्तात्म-स्वरूप' :— इस प्रकार अकर्मा मुनि जीवों की गति-आगति के कारणों का परिज्ञान करके मोक्षमार्ग में स्थित होकर जन्म-मरणवृत्त (चक्र) को पारकर जाता है, मुक्त हो जाता है। उस मुक्तात्मा का स्वरूप बतलाने के लिए सभी स्वर लौट आते हैं (वाणी असमर्थ हो जाती है)। वहाँ कोई तर्क नहीं है। वहाँ मति प्रवेश नहीं कर पाती। वहाँ (मोक्ष में) समस्त कर्ममल से रहित ओजरूप (ज्योतिस्वरूप) प्रतिष्ठान (आधार) से रहित (अशरीरी), और क्षेत्रज्ञ (आत्मा) ही है। वह शुद्ध आत्मा (परमात्मा) न दीर्घ है, न ह्रस्व है, न वृत्त है, न त्रिकोण है, न चतुष्कोण है, और न परिमण्डल है। वह न कृष्ण है, न नील है, न सुगंध है, न दुर्गन्ध है, न तिक्त है, न कड़वा है, न कसैला है, न खट्टा है, न मीठा है, न कर्कश है, न मृदु है, न गुरु है, न लघु है, न ठंडा है, न उष्ण है, न चिकना है, न रूखा है। वह कायवान नहीं है। वह अजन्मा है, संगरहित निर्लेप है। वह न स्त्री है, न पुरुष है और न नपुंसक (वेद-लिंग-रहित) है। वह मुक्तात्मा परिज्ञ है, संज्ञ है। वह सर्वतः ज्ञानचैतन्यमय (ज्ञानधन) है। उसके लिए कोई उपमा नहीं है। वह अरूपी सत्ता (अमूर्त) है, पदातीत है। वह न शब्द है न रूप है, न गंध है न रस है, न स्पर्श है। इतने पर्याययुक्त है, बस इतना ही है। स्वयंसिद्ध है, ऐसा मैं कहता हूँ।

नोट : उपनिषदों में 'नेति-नेति' कहकर परमात्मा के विषय में मौन अंगीकार कर लिया है।

(१२५) 'पास लोए महब्भयं। बहु दुक्खा हु जंतवो ॥ १-६-१-१८० ॥'

● (रोगों, कष्टों और आतंक से पीड़ित प्राणियों को) तू देख ! लोक में महान् भय है। संसार में (कर्मों के कारण) जीव बहुत ही दुःखी है।

नोट-इसके पूर्व सोलह महारोगों का वर्णन है।

(१२६) 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं कुलेहिं अभिसेएण, अभिसंभूता, अभिसंजाता, अभिणिवट्टा, अभिसंबुद्धा, अभिसंबुद्धा, अभिशिक्खंता, अणुपुब्बेणमहामुणी ॥ १-६-१-१८१ ॥'

● (हे साधक!) तुम इस संसार में आत्मत्व (स्वकर्म के उदय) से प्रेरित होकर उन उन कुलों में शुकुरशोणित केअभिषेक (अभिसिंचन) से माता के गर्भ में कललरूप (अभिसंभूत) हुए। फिर अर्बुद (मांस) और पेशीरूप बने (अभिसंजात)। तदनन्तर अंगोपांग, स्नायु, नस, रोम आदि के क्रम से अभिनिष्पन्न (विकसित) हुए। फिर प्रसव होकर (जन्म लेकर) अभिसंबुद्ध (सर्वद्धित) हुए। तत्पश्चात् अभिसंबुद्ध (सम्बोधि को प्राप्त) हुए। फिर धर्मश्रवण कर अभिनिष्क्रान्त-(प्रव्रजित) हुए। इस तरह क्रमशः महामुनि बने (बनते हैं)।

(१२७) 'एते भो णगिणावुत्ता जे लोगांसि अणागमणधम्मिणो ॥ १-६-२-१८५ ॥'

● हे मानवों! जो लोक में अनागमनधर्मी हैं, वे ही भावनग्र हैं।

(१२८) 'जहा से दीवे असंदीणे एवं से धम्मे आरियपदेसिए ॥ १-६-३-१८९ ॥'

● जैसे असंदीन-द्वीप (पानी में उठा हुआ) जलपोत यात्रियों के लिए आश्वासन-स्थल होता है, वैसे ही आर्य-(तीर्थकर) उपदिष्ट धर्म (संसार-समुद्र पार करने वालों के लिए

शाश्वत धर्म/अगस्त-९२

(२१)

आश्वासन-स्थान) होता है।

(१२९) 'कायस्स वियावाए एस संगामसीसे वियाहिए। से हु पारंगमे मुर्ण। ॥ १-६-५-१९८ ॥'

● शरीर के व्यापात को (मृत्यु-समय की पीड़ा को) हर संग्रामशीर्ष (युद्ध का अग्रिम-मोर्चा) कहा गया है। उसमें जो संलेखना द्वारा समाधिमरण प्राप्त कर विजयी होता है, वही संसार का पारगामी मुनि होता है।

(१३०) 'इच्चेतं विमोहायतणं हितं सुहं खमं णिस्सेणं आणुगामियं-त्तिबेमि ॥ १-८-६-२२४ ॥'

● इस प्रकार यह (इंगितमरण के रूप में शरीर-विमोक्ष) मोहयुक्त भिक्षुओं का आयतन। (आश्रय) हितकर, सुखकर, क्षमारूप, निःश्रेयस्कर और भवान्तर में साथ चलनेवाला होता है-ऐसा मैं कहता हूँ।

(१३१) 'अचले लाघवियं आगममाणे। तवे से अभिसमण्णागते भवति ॥ १-८-७-२२६ ॥'

● लाघव का सर्वांगिण चिन्तन करता हुआ अचेल रहे। अचेल मुनि को तप का सहज लाभ मिल जाता है।

(१३२) 'अणुपुब्बेण विमोहोइं जाइं धीरा समासज्ज। वसुमंतो मतिमंतो सव्वं णच्चा अणेलिसं ॥ १-८-८-२२९ ॥'

● जो (भक्तप्रत्याख्यान, इंगितमरण, प्रायोपगमन-ये तीन) विमोह या विमोक्ष कमशः समाधिमरण के रूप में बताये गये हैं, धैर्यवान्, संयम का धनी (वसुमान्) एवं मतिमान् (हेयोपादेय परिज्ञाता) भिक्षु उनको प्राप्त करके, (उनके संबंध में) सब कुछ जानकर (उनमें से) एक अद्वितीय (समाधिमरण) को अपनाये।

(१३३) 'जीवियं णाभिकं खेज्जा मरणं णो वि पत्थए।

दुहतो विण सज्जेज्जा जीविते मरणे तहा ॥ १-८-८-२३२ ॥'

● संलेखना एवं अनशन-साधना में स्थित-श्रमण न तो जीने की आकांक्षा करे, न मरने की अभिलाषा करे। जीवन-मरण दोनों में आसक्त न हो।

(१३४) 'सूरो संगामसीसे वा संवुडे तत्थ से महावीरे।

पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीयित्था ॥ १-९-३-३०५ ॥'

● जैसे कवच पहने हुए योद्धा युद्ध के मोर्चे पर, शस्त्रों से विद्ध होने पर भी विचलित नहीं होता, वैसे ही संवर का कवच पहने हुए भगवान् महावीर लाढ़ादि देशों में परिषह-सेना से पीड़ित होने पर भी, कठोरतम कष्टों का सामना करते हुए, मेरुपर्वत की तरह ध्यान में निश्चल रहकर मोक्षपथ में पराक्रम करते थे।

(१३५) 'अकसायी विगतदेही य सह्रूवेसुड मुच्छिते ज्ञाती।

छउमत्थे विप्परक्कमाणे ण पमायं सइं पि कुव्वित्था ॥ १-९-४-३२१ ॥'

● भगवान् क्रोधादि कषायों को शान्त करके, आसक्ति को त्यागकर, शब्द और रूप के प्रति अमूर्च्छित रहकर ध्यान करते थे। छद्मस्थ अवस्था में सद्नुष्ठान में पराक्रम करते हुए उन्होंने एक बार भी प्रमाद नहीं किया।

णमोकार मंत्र और मनोविज्ञान

डॉ. श्री. नेमीचंद्र शास्त्री

वैदिक धर्मानुयायियों में जो ख्याति और प्रचार गायत्री मन्त्र का है, बौद्धों में त्रिशरण मन्त्र का है, जैनों में वही ख्याति और प्रचार णमोकार मन्त्र का है। समस्त धार्मिक और सामाजिक कृत्यों के आरम्भ में इस महामन्त्र का उच्चारण किया जाता है। जैन-सम्प्रदाय का यह दैनिक जाप मन्त्र है। इस मन्त्र का प्रचार तीनों सम्प्रदायों—दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासियों में समान रूप से पाया जाता है। तीनों सम्प्रदाय के प्राचीनतम साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है। णमोकार मन्त्र के जाप करने की विधि

णमोकार मन्त्र का जाप करने के लिए सर्वप्रथम आठ प्रकार की शुद्धियों का होना आवश्यक है।

१. द्रव्यशुद्धि —पंचेन्द्रिय तथा मन को वश कर कषाय और परिग्रह का शक्ति के अनुसार त्याग कर कोमल और दयालुचित्त हो जाप करना। यहाँ द्रव्यशुद्धि का अभिप्राय पात्र की अंतरंग शुद्धि से है। जाप करने वाले को यथाशक्ति अपने विकारों को हटाकर ही जाप करना चाहिए। अंतरंग से काम, क्रोध, लोभ मोह, मान, माया आदि विकारों को हटाना आवश्यक है।
२. क्षेत्रशुद्धि —निराकुल स्थान, जहाँ हल्ला-गुल्ला न हो तथा डाँस-मच्छर आदि बाधक जन्तु न हो। चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने वाले उपद्रव एवं शीत-उष्ण की बाधा न हो, ऐसा एकान्त निर्जन स्थान जाप करने के लिए उत्तम है। घर के किसी एकान्त प्रदेश में जहाँ अन्य किसी प्रकार की बाधा न हो और पूर्ण शान्ति रह सके, उस स्थान पर भी जाप किया जा सकता है।
३. समय शुद्धि —प्रातः मध्याह्न और सन्ध्या समय कम से कम ४५ मिनट तक लगातार इस महामन्त्र का जाप करना चाहिए। जाप करते समय निश्चिन्त रहना एवं निराकुल होना परम आवश्यक है।
४. आसनशुद्धि —काष्ठ, शिला, भूमि, चटाई या शीतलपट्टी पर पूर्व दिशा या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पद्मासन, खड्गसन या अर्द्धपद्मासन होकर क्षेत्र तथा काल का प्रमाण करके मौनपूर्वक इस मन्त्र का जाप करना चाहिए।
५. विनयशुद्धि —जिस आसन पर बैठकर जाप करना हो, उस आसन को सावधानीपूर्वक ईर्यापथ शुद्धि के साथ साफ करना चाहिए, तथा जाप करने के लिए नम्रतापूर्वक भीतर का अनुराग भी रहना आवश्यक है। जब तक जाप करने के लिए भीतर का उत्साह नहीं होगा, तब तक सच्चे मन से जाप नहीं किया जा सकता।
६. मनःशुद्धि —विचारों की गन्दगी का त्याग कर मन को एकाग्र करना, चंचल मन इधर-उधर न भटकने पाये इसकी चेष्टा करना, मन को पूर्णतया पवित्र बनाने का प्रयास करना ही इस शुद्धि में अभिप्रेत है।
७. वचन

शुद्धि—धीरे-धीरे साम्यभावपूर्वक इस मन्त्र का शुद्ध जाप करना अर्थात् उच्चारण करने में अशुद्धि न होने पाये तथा उच्चारण मन ही मन में होना चाहिए। 8 कायशुद्धि—शौचादि शंकाओं से निवृत्त होकर यत्नाचारपूर्वक शरीर शुद्ध करके हलन-चलन क्रिया से रहित हो जाप करना चाहिए। जाप के समय शारीरिक शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए।

इस महामन्त्र का जाप यदि खड़े होकर करना हो, तो तीन-तीन श्वासोच्छ्वास में एक बार पढ़ना चाहिए। एक सौ आठ बार के जाप में कुल ३२४ श्वासोच्छ्वास-साँस लेना चाहिए। इसके जाप करने की कमल जाप, हस्तांगुली जाप और माला जाप—तीन विधियाँ हैं।

मनोविज्ञान और णमोकार मन्त्र

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह विचारणीय प्रश्न है कि णमोकार मन्त्र का मन पर क्या प्रभाव पड़ता है। आत्मिक शक्ति का विकास किस प्रकार होता है, जिससे इस मन्त्र को समस्त कार्यों में सिद्धि देने वाला कहा गया है। मनोविज्ञान मानता है कि मानव की दृश्य क्रियाएँ उनके चेतन मन में और अदृश्य क्रियाएँ अचेतन मन में होती हैं। मन की इन दोनों क्रियाओं को मनोवृत्ति कहा जाता है। साधारणतः मनोवृत्ति शब्द चेतन मन की क्रिया के बोध के लिये प्रयुक्त होता है। प्रत्येक मनोवृत्ति के तीन पहलू हैं—ज्ञानात्मक, वेदनात्मक और क्रियात्मक। ये तीनों पहलू एक-दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते हैं। मनुष्य को जो कुछ ज्ञात होता है, उसके साथ-साथ वेदना और क्रियात्मक भाव की भी अनुभूति होती है। ज्ञानात्मक मनोवृत्ति के संवेदन, प्रत्यक्षीकरण, स्मरण, कल्पना और विचार—ये पाँच भेद हैं। संवेदनात्मक के संवेग, उमंग, स्थायीभाव और भावनाग्रन्थि—ये चार भेद एवं क्रियात्मक मनोवृत्ति के सहज क्रिया, मूलवृत्ति, आदत, इच्छित क्रिया और चरित्र—ये पाँच भेद किये गये हैं। णमोकार मन्त्र के स्मरण से ज्ञानात्मक मनोवृत्ति उत्तेजित होती है, जिससे उसके अभिन्नरूप में सम्बद्ध रहने वाली उमंग वेदनात्मक अनुभूति और चरित्र नामक क्रियात्मक अनुभूति को उत्तेजना मिलती है। अभिप्राय यह है कि मानव मस्तिष्क में ज्ञानवाही और क्रियावाही—दो प्रकार की नाड़ियाँ होती हैं। इन दोनों नाड़ियों का आपस में सम्बन्ध होता है, परन्तु इन दोनों के केन्द्र पृथक् हैं। ज्ञानवाही नाड़ियाँ और मानव मस्तिष्क के क्रियाकेन्द्र उसके चरित्र के विकास की वृद्धि के लिये कार्य करते हैं। क्रियाकेन्द्र और ज्ञानकेन्द्र का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण णमोकार मन्त्र की आराधना, स्मरण और चिन्तन से ज्ञानकेन्द्र और क्रियाकेन्द्रों का समन्वय होने से मानव मन सुदृढ़ होता है और आत्मिक विकास की प्रेरणा मिलती है।

मनुष्य का चरित्र उसके स्थायी भावों का समुच्चय मात्र है। जिस मनुष्य के

स्थायी भाव जिस प्रकार के होते हैं, उसका चरित्र भी उसी प्रकार का होता है। मनुष्य का परिमार्जित और आदर्शस्थायी भाव ही हृदय की अन्य प्रवृत्तियों का नियन्त्रण करता है। जिस मनुष्य के स्थायीभाव सुनियन्त्रित नहीं अथवा जिसके मन में उच्चादर्शों के प्रति श्रद्धास्पद स्थायीभाव नहीं है, उनका व्यक्तित्व सुगठित तथा चरित्र सुन्दर नहीं हो सकता। दृढ़ और सुन्दर चरित्र बनाने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य के मन में उच्चादर्शों के प्रति श्रद्धास्पद स्थायीभाव हों तथा उसके अन्य स्थायी भाव उसी स्थायीभाव के द्वारा नियन्त्रित हों। स्थायीभाव ही मानव के अनेक प्रकार के विचारों के जनक होते हैं। इन्हीं के द्वारा मानव की समस्त क्रियाओं का संचालन होता है। उच्च आदर्श अन्य स्थायीभाव और विवेक—इन दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। कभी-कभी विवेक को छोड़कर स्थायी भावों के अनुसार ही जीवन क्रियाएँ सम्पन्न की जाती हैं, जैसे विवेक के मना करने पर भी श्रद्धावश धार्मिक प्राचीन कृत्यों में प्रवृत्ति का होना तथा किसी से झगड़ा हो जाने पर उसकी झूठी निन्दा सुनने की प्रवृत्ति का होना। इन कृत्यों में विवेक साथ नहीं है, केवल स्थायीभाव ही कार्य कर रहा है। विवेक मान की क्रियाओं को रोक या मोड़ सकता है, उसमें स्वयं क्रियाओं के संचालन की शक्ति नहीं है। अतएव आचरण को परिमार्जित और विकसित करने के लिए केवल विवेक प्राप्त करना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि आवश्यक है उसके स्थायी भाव को योग्य और दृढ़ बनाना।

व्यक्ति के मन में जब तक किसी सुन्दर आदर्श के प्रति या किसी महान व्यक्ति के प्रति श्रद्धा और प्रेम के स्थायी भाव नहीं, तब तक दुराचार से हटकर सदाचार में उनकी प्रवृत्ति नहीं हो सकती है। ज्ञान की मात्र जानकारी से दुराचार नहीं रोका जा सकता है, इसके लिए उच्च आदर्श के प्रति श्रद्धा भावना का होना अनिवार्य है। णमोकार मन्त्र ऐसा पवित्र उच्च आदर्श है, जिससे सुदृढ़ स्थायी भाव की उत्पत्ति होती है। अतः णमोकार मन्त्र का मन पर जब बार-बार प्रभाव पड़ेगा अर्थात् अधिक समय तक इस महामन्त्र की भावना जब मन में बनी रहेगी, तब स्थायी भावों में परिष्कार हो ही जायेगा और ये ही सुनियन्त्रित स्थायी भाव मानव के चरित्र के विकास में सहायक होंगे।

इस महामन्त्र के मनन, स्मरण, चिन्तन और ध्यान में अर्जित भावों से स्थायी रूप से स्थित कुछ संस्कारों जिनमें अधिकांश विषय-कषाय सम्बन्धी ही होते हैं—में परिवर्तन होता है। मंगलमय आत्माओं के स्मरण से मन पवित्र होता है और पुरातन प्रवृत्तियों में शोधन होता है, जिससे सदाचार व्यक्ति के जीवन में आता है। उच्च आदर्श से उत्पन्न स्थायी भाव के अभाव में ही व्यक्ति दुराचार की ओर प्रवृत्त होता है। अतएव मनोविज्ञान स्पष्ट रूप से कहता है कि मानसिक उद्वेग, वासना एवं मानसिक विकार उच्च आदर्श के प्रति श्रद्धा के अभाव में दूर नहीं किये जा सकते हैं। विकारों को अधीन करने की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कहा गया है कि

परिणाम नियम, और तत्परता-नियम के द्वारा उच्चादर्श को प्राप्त कर विवेक और आचरण को दृढ़ करने से ही मानसिक विकार और सहज पाशविक प्रवृत्तियाँ दूर की जा सकती हैं। णमोकार मन्त्र के परिणाम-नियम का अर्थ यह है कि इस मन्त्र की आराधना कर व्यक्ति जीवन में सन्तोष की भावना को जाग्रत करे तथा समस्त सुखों का केन्द्र इसी को समझे। अभ्यास-नियम का तात्पर्य है कि इस मन्त्र का मनन, चिन्तन और स्मरण निरन्तर करता जाये। यह सिद्धान्त है कि जिस योग्यता को अपने भीतर प्रकट करना हो, उस योग्यता का बार-बार चिन्तन, स्मरण किया जाये। प्रत्येक व्यक्ति का चरम लक्ष्य मान, दर्शन, सुख और वीर्यरूप शुद्ध आत्मशक्ति को प्राप्त करना है, यह शुद्ध अमूर्तिक रत्नत्रय स्वरूप सच्चिदानन्द आत्मा ही प्राप्त करने योग्य है, अतएव रत्नत्रयस्वरूप पंचपरमेष्ठी वाचक णमोकार महामन्त्र का अभ्यास करना परम आवश्यक है। इस मन्त्र के अभ्यास द्वारा शुद्ध आत्मस्वरूप में तत्परता के साथ प्रवृत्ति करना जीवन में तत्परता नियम में उतरना है। मनुष्य में अनुकरण की प्रधान प्रवृत्ति पायी जाती है, इसी प्रवृत्ति के कारण पंचपरमेष्ठी का आदर्श सामने रखकर उनके अनुकरण से व्यक्ति अपना विकास कर सकता है।

मनोविज्ञान मानता है कि मनुष्य में भोजन ढूँढ़ना, भागना, लड़ना, उत्सुकता, रचना, संग्रह, विकर्षण, शरणागत होता, काम प्रवृत्ति, शिशुरक्षा, दूसरों की चाह, आत्म-प्रकाशन, विनीतता और हंसना—ये चौदह मूल प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं। इनका अस्तित्व संसार के सभी प्राणियों में पाया जाता है। पर मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों में यह विशेषता है कि मनुष्य इनमें समुचित परिवर्तन कर लेता है। केवल मूल प्रवृत्तियों द्वारा संचालित जीवन असभ्य और पाशविक कहलायेगा। अतः मूल प्रवृत्तियों में दमन, विलयन, मार्गान्तरिकरण और शोधन— ये चार परिवर्तन होते रहते हैं। प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का बल उसके बराबर प्रकाशित होने से बढ़ता है। यदि किसी मूल प्रवृत्ति के प्रकाशन पर कोई नियन्त्रण नहीं रखा जाता है, तो वह मनुष्य के लिये लाभकारी न बनकर हानिप्रद हो जाती है। अतः दमन की क्रिया होनी चाहिए। उदाहरणार्थ, यों कहा जाता है कि संग्रह की प्रवृत्ति यदि संयमित रूप में रहे, तो उससे मनुष्य के जीवन की रक्षा होती है। किन्तु जब यह अधिक बढ़ जाती है, तो कृपणता और चोरी का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार द्वन्द्वता या युद्ध की प्रवृत्ति प्राण-रक्षा के लिए उपयोगी है, किन्तु जब यह अधिक बढ़ जाती है तो यह मनुष्य की रक्षा न कर उसके विनाश का कारण बन जाती है। इसी प्रकार अन्य मूल प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। अतएव जीवन को उपयोगी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य समय-समय पर अपनी प्रवृत्तियों का दमन करे और इन्हें अपने नियन्त्रण में रखे। व्यक्तित्व के विकास के लिए मूल प्रवृत्तियों का दमन उतना ही आवश्यक है, जितना उनका प्रकाशन। मूल प्रवृत्तियों का दमन विचार या विवेक द्वारा होता है। किसी बाह्य सत्ता द्वारा किया गया दमन मानव

जीवन के लिए हानिकारक होता है। अतः बचपन से ही णमोकार मन्त्र के आदर्श द्वारा मानव की मूल प्रवृत्तियों का दमन सरल और स्वाभाविक है। इस मन्त्र का आदर्श हृदय में श्रद्धा और दृढ़ विश्वास को उत्पन्न करता है, जिससे मूल प्रवृत्तियों का दमन करने में बड़ी सहायता मिलती है। णमोकार मन्त्र के उच्चारण, स्मरण, चिन्तन, मनन और ध्यान द्वारा मन पर इस प्रकार के संस्कार पड़ते हैं, जिससे जीवन में श्रद्धा और विवेक का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। अतः मनुष्य का जीवन श्रद्धा और सद्विचारों पर ही अवलम्बित है, वह श्रद्धा और विवेक को छोड़कर मनुष्य की तरह जीवित नहीं रह सकता, अतः जीवन की मूल प्रवृत्तियों का दमन या नियंत्रण करने के लिए महामंगल वाक्य णमोकार मन्त्र का स्मरण परम आवश्यक है। इस प्रकार के धार्मिक वाक्यों के चिन्तन से मूल प्रवृत्तियाँ नियन्त्रित हो जाती हैं तथा जन्मजात स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है। नियन्त्रण की यह प्रवृत्ति धीरे धीरे आती है। ज्ञानार्णव में आचार्य शुभचन्द्र ने बतलाया है कि महामंगल वाक्यों की विद्युत शक्ति आत्मा में इस प्रकार झटका देती है, जिससे आहार, भय, मैथुन और परिग्रहजन्य संज्ञाएँ सहज में परिष्कृत हो जाती हैं। जीवन के धरातल को उन्नत बनाने के लिए इस प्रकार मंगल वाक्यों को जीवन में उतारना परम आवश्यक है। अतएव जीवन की मूल प्रवृत्तियों के परिष्कार के लिए दमन क्रिया को प्रयोग में लाना आवश्यक है।

मूल प्रवृत्तियों के परिवर्तन का दूसरा उपाय विलयन है। यह दो प्रकार से हो सकता है—निरोध द्वारा और विरोध द्वारा। निरोध का तात्पर्य है कि प्रवृत्तियों को उत्तेजित होने का ही अवसर न देना। इससे मूल प्रवृत्तियाँ कुछ समय में नष्ट हो जाती हैं। विलियम जेम्स का कथन है कि यदि किसी प्रवृत्ति को अधिक काल तक प्रकाशित होने का अवसर न मिले तो वह नष्ट हो जाती है। अतः धार्मिक आस्था द्वारा व्यक्ति अपनी विकार प्रवृत्तियों को अवरुद्ध कर उन्हें नष्ट कर सकता है। दूसरा उपाय विरोध द्वारा प्रवृत्तियों के विलयन के लिए कहा गया है, उसका अर्थ है कि जिस समय एक प्रवृत्ति कार्य कर रही हो उसी समय उसके विपरीत दूसरी प्रवृत्ति को उत्तेजित होने देना। ऐसा करने से दोनों पारस्परिक विरोधी प्रवृत्तियों के एक साथ उमड़ने से दोनों का बल घट जाता है। इस तरह दोनों के प्रकाशन की रीति में अन्तर हो जाता है अथवा दोनों शान्त हो जाती है। जैसे द्वन्द्व प्रवृत्ति के उभरने पर यदि सहानुभूति की प्रवृत्ति उभार दी जाये तो उक्त प्रवृत्ति का विलयन सरलता से हो जाता है। णमोकार मन्त्र का स्मरण इस दिशा में भी सहायक सिद्ध होता है। इस शुभ प्रवृत्ति के उत्पन्न होने से अन्य प्रवृत्तियाँ सहज में विलीन की जा सकती हैं।

मूल प्रवृत्ति के परिवर्तन का तीसरा उपाय मार्गान्तरिकरण है। यह उपाय दमन और विलयन के उपाय से श्रेष्ठ हैं। मूल प्रवृत्ति के दमन से मानसिक शक्ति संचित होती है। जब तक इस संचित शक्ति का उपयोग नहीं किया जाये, तब तक वह हानिकारक भी सिद्ध हो सकती है। णमोकार मन्त्र का स्मरण इस प्रकार का अमोघ

अस्त्र है, जिसके द्वारा बचपन से ही व्यक्ति अपनी मूल प्रवृत्तियों का मार्गान्तरीकरण कर सकता है। चिन्तन करने की प्रवृत्ति मनुष्य में पायी जाती है। यदि मनुष्य इस चिन्तन की प्रवृत्ति में विकारी भावनाओं को स्थान नहीं दे और इस प्रकार के मंगल वाक्यों का ही चिन्तन करे, तो चिन्तन प्रवृत्ति का यह सुन्दर मार्गान्तरीकरण है। यह सत्य है कि मनुष्य का मस्तिष्क निरर्थक नहीं रह सकता है, उसमें किसी न किसी प्रकार के विचार अवश्य आर्येंगे। अतः चरित्र भ्रष्ट करने वाले विचारों के स्थान पर चारित्रवर्धक विचारों को स्थान दिया जाये, तो मस्तिष्क की क्रिया भी चलती रहेगी तथा शुभ प्रभाव भी बढ़ता जायेगा।

ज्ञानार्णव में शुभचन्द्राचार्य ने बतलाया है कि समस्त कल्पनाओं को दूर करके अपने चैतन्य और आनन्दमय स्वरूप में लीन होना, निश्चय रत्नत्रय की प्राप्ति का स्थान है। जो इस विचार में लीन रहता है कि मैं नित्य आनन्दमय हूँ, शुद्ध हूँ, चैतन्य स्वरूप हूँ, सनातन हूँ, परमज्योति ज्ञान प्रकाश रूप हूँ, अद्वितीय हूँ, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य सहित हूँ, वह व्यक्ति व्यर्थ के विचारों से अपनी रक्षा करता है, पवित्र विचार या ध्यान में अपने को लीन रखता है।

मूल प्रवृत्तियों के परिवर्तन का चौथा उपाय शोधन है। जो प्रवृत्ति अपने अपरिवर्तित रूप में निन्दनीय कर्मों में प्रकाशित होती है, वह शोधित रूप में प्रकाशित होने पर श्लाघनीय हो जाती है। वास्तव में मूलवृत्ति का शोधन उसका एक प्रकार से मार्गान्तरीकरण है। किसी मन्त्र या मंगलवाक्य का चिन्तन आर्त और रौद्र ध्यान से हटाकर धर्मध्यान में स्थित करता है। अतः धर्मध्यान के प्रधान कारण णमोकार मन्त्र के स्मरण और चिन्तन की परम आवश्यकता है।

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक विवेचन का अभिप्राय यह है कि णमोकार मन्त्र के द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने मन को प्रभावित कर सकता है। यह मन्त्र मनुष्य के चेतन, अवचेतन और अचेतन—तीनों प्रकार के मनो को प्रभावित कर अचेतन और अवचेतन मन पर सुन्दर स्थायी भाव का ऐसा संस्कार डालता है, जिससे मूल प्रवृत्तियों का परिष्कार हो जाता है। अचेतन मन में वासनाओं को अर्जित होने का अवसर नहीं मिल पाता। इस मन्त्र की आराधना में ऐसी विद्युत शक्ति है जिससे इसके स्मरण से व्यक्ति का अन्तर्द्वन्द शान्त हो जाता है, नैतिक भावनाओं का उदय होता है, जिससे अनैतिक वासनाओं का दमन होकर नैतिक संस्कार उत्पन्न होते हैं। आभ्यन्तर में उत्पन्न विद्युत बाहर और भीतर में इतना प्रकाश उत्पन्न करती है जिससे वासनात्मक संस्कार भस्म हो जाते हैं और ज्ञान का प्रकाश व्याप्त हो जाता है। इस मन्त्र के निरन्तर उच्चारण, स्मरण और चिन्तन से आत्मा को एक प्रकार की शक्ति उत्पन्न होती है, जिसे आज की भाषा में विद्युत कह सकते हैं। इस शक्ति द्वारा आत्मा का शोधन कार्य तो किया ही जाता है, साथ ही इससे अन्य आश्चर्यजनक कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते हैं। [मूल लेख से संक्षेपित]

शाश्वत धर्म के सदस्य बनाकर सम्यग्ज्ञान के प्रचार में सहयोग दीजिये।

चौदह स्वप्नों का रहस्य

प्रत्येक तीर्थंकर की पुण्यशाली माताएं, जब प्रभु की आत्मा गर्भ में आती है तब चौदह स्वप्न देखती है। यह जन्म लेनेवाले महान् आत्मा के सर्वोत्तम गुणों की भविष्यवाणी एवं उनके पुण्य प्रभाव की कुदरत द्वारा सर्जित निशानी होती है। यहाँ हम चौदह स्वप्नों के रहस्यों को देखने का प्रयत्न करेंगे -

- (१) उंचा सफेद हाथी - चार दांत यह सूचित करते हैं कि चतुर्विध धर्म का प्रकाशन करेंगे। मोह रूपी महान् किल्ले पर नीडर बनकर दौड़ेंगे। स्व-पर हेतु चार गति का अंत करने वाले होंगे।
- (२) भव्य वृषभ - संयम का भार वहन करते हुए भरत क्षेत्र में भव्य जीवों के हृदय में बोधि बीज बोयेंगे।
- (३) सिंह - किसी की भी सहायता के बिना कुतीर्थिक रूप हिंसक पशुओं एवं परिषह रूपी हाथियों को दूर करनेवाले एवं भव्यजनों के रक्षक होंगे।
- (४) लक्ष्मी - जिनपद रूपी लक्ष्मी का वरण करेंगे। वार्षिक दान द्वारा जगत के जीवों का दारिद्र्य दूर करेंगे।
- (५) पुष्पमाला - तीनों लोक के लोग प्रभु की आज्ञा को पुष्प - माला के समान शिरोधार्य करेंगे एवं सम्पूर्ण विश्व आपके यश-कीर्ति की सुगंध से सुवासित बनेगा।
- (६) चंद्र - चंद्रमा की तरह शीतल प्रभु की वाणी भव्यजीवों के लिये आल्हाददायक बनेगी।
- (७) सूर्य - अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश फैलायेंगे। सूर्य को देखकर कमल का विकास होता है, उसी प्रकार भव्य जीवों के जीवन विकास में आपकी प्रेरणा मिलेगी।
- (८) ध्वज - केवलज्ञान के बाद धर्म रूपी ध्वज लहराएंगे।
- (९) कुंभ - रत्नत्रयी रूप महाप्रसाद पर प्रभु कुंभ-कलश के समान है।
- (१०) पद्मसरोवर - पद्मसरोवर में खिले हुए अगणित कमल में मृदुता के समान सभी जीवों के प्रति इनका हृदय कोमल होगा।
- (११) क्षीर समुद्र - गुण रत्नों से भरे हुए रत्नाकर के समान गंभीर क्षीर समुद्र की तरह मिष्ट स्वभावयुक्त होंगे।
- (१२) देव-विमान - चारों निकाय के देव प्रभु की सेवा करेंगे।
- (१३) रत्न राशि - वार्षिक दान में खूब दान देंगे। देवरचित तीन गढ़वाले समवसरण में बैठकर प्रभु देशना देंगे।
- (१४) निर्धूम अग्नि - कर्म रूपी काष्ठ का प्रज्वलन करेंगे। स्वामी का आत्मा कर्म रहित शुद्ध कंचन के समान बनेगा एवं अनेकानेक भव्यात्माओं को शुद्ध बनायेगा।

चौदह स्वप्नों के फलानुसार प्रभु चौदह राजलोक पर सिद्धशिला के स्थान पर विराजमान होंगे। चौदह स्वप्न उत्तम गुण लक्षणयुक्त एवं तेजस्वी होते हैं।

इनाम जीतिए

पाँच हजार एक सौ रुपये के कुल इनाम

“ध” अक्षर का स्वाध्याय चिन्तनात्मक पत्राचार

प्रश्नावली-पत्र

प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुदेव के १६५ वें जन्म दिवस की पावन स्मृति में

प. पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से साध्वी डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एम. ए. पी. एच. डी. एवं श्री सुदर्शनाश्रीजी एम. ए. पी. एच. डी. द्वारा संयोजित “ध” अक्षर का प्रश्नावली पत्र दि. ७ जून १९९२ को प्रकाशित किया गया। इससे युवा पीढ़ी को सम्यक्ज्ञान के क्षेत्र में कुछ आलोक अवश्य मिलेगा।

विजेताओं को ५१००/- पाँच हजार एक सौ रुपये के पुरस्कार वितरित किए जाएंगे। प्रथम पुरस्कार २५००/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार १५००/- रुपये व तृतीय पुरस्कार ११००/- रुपये।

विशेष सूचना :

- (१) एक परिवार से एक ही प्रश्नावली-पत्र मंगवाएँ, एक से अधिक को मान्य नहीं किया जाएगा।
- (२) प्रश्नावली-पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि ३०-९-१९९२
- (३) प्रश्नावली-पत्र निम्न पत्ते से निशुल्क मंगवाएँ :-

श्री कानराजजी कालुराजजी मेहता

शाह देवीचन्दजी छगनलालजी

सूरजपोल, पोस्ट-जालोर, (राजस्थान-३२३ ००१)

सदर बाजार, भीनमाल-३४३ ०२९

फोन नं. ०२९७३-२२८३

जी. जालोर (राजस्थान)

नोट :- पुरस्कार पंथेड़ी निवासी शा. वख्तावरमलजी सांकलचन्दजी की ओर से दिया जायेगा।



ज्ञानकसौटी १७ के उत्तर

- (४०१) महावीर स्वामी, (४०२) मुक्त, (४०३) मान, (४०४) मंखली पुत्र,
(४०५) मिथ्यात्व, (४०६) मोह, (४०७) मनःपर्यव, (४०८) महाविदेह क्षेत्र,
(४०९) मरीचि, (४१०) मृगी, (४११) मैत्री, (४१२) महाव्रतों, (४१३) मानतुंगाचार्य,
(४१४) मुनिसुव्रतस्वामीजी, (४१५) मोहनखेड़ा तीर्थ, (४१६) मनुष्य, (४१७) माया,
(४१८) मान, (४१९) मन, (४२०) मन्त्रह जिणाणं, (४२१) मुनि, (४२२) माला,
(४२३) मांगी-तुंगी, (४२४) मनःपर्यव ज्ञान, (४२५) मुक्तासुक्ति।

रुकिए ! पढ़िये !! सोचिये !!!

- ✱ परावलम्बन का जाल - बाजार में आज जो अनाज मिल रहा है, वह तमाम एच वी आय बीजों (हाई यील्डिंग वेरायटी सीड्स) की उपज है। इन बीजों से किसान बिना रासायनिक खाद का उपयोग किये फसल नहीं ले सकता। 'केमिकल फर्टिलाइजर्स' के साथ ही इन्हे चाहिये कीटनाशी दवाईयाँ, जो अन्ततः भारतीय उपभोक्ताओं के पेट में जाकर कई तरह की बीमारियाँ पैदा करती हैं - ऐसी बीमारियाँ जिनकी औषधियों का उत्पादन भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ही करती हैं। इस तरह इन कम्पनियों ने पूरी दुनियां में (अब भारत में भी) अपना एक दुश्चक्र फैला दिया है :- बीज → खाद → कीटनाशी → शरीर में विष → बीमारियाँ → दवाइयाँ → बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ। खयाल रहे : इससे भारतीय समाज का आर्थिक और सांस्कृतिक ढाँचा जड़मूल से उखड़ जाएगा और हम सिर-से-पैर तक परावलम्बन के जाल में फस जाएंगे।
- ✱ विदेशी कम्पनियाँ अगर बहुत नियंत्रित स्थिति में भारत को नाममात्र मुनाफा देती हैं तो अनियंत्रित स्थिति में क्या देंगी ? उदाहरण के लिये हिन्दुस्तान लीवर ३०० से ५०० फीसदी मुनाफा कमाती रही है। अगर उसके एक साबुन की उत्पादन लागत १.०३ रुपये आती है तो वह इसे पांच रुपये में बेचती है। जब कि इसमें मजदूर को सिर्फ दो पैसा मिलता है। यह कम्पनी १९८६ से हर साल इंग्लैण्ड को १३ से १७ करोड़ रुपये भेज रही है।
- ✱ देश में ७०० बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हैं और उपभोक्ता के क्षेत्र में ७६ फीसदी बाजार इनके सामान से भरे हैं। दवा के क्षेत्र में ७५ फीसदी दवाईयाँ विदेशी कम्पनियों की है पर गौरतलब यह है कि उनमें ९५ फीसदी दवाईयाँ या तो उनके देशों में प्रतिबंधित है या गैर जरूरी हैं।
- ✱ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री राम रेड्डी के अनुसार भारत में पर्यावरण विनाश अत्यंत तेजी से हो रहा है।
- ✱ कल्लखानों में जब पशुबध होता है, तब जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करने वाले प्राणी मरते समय अपने शरीर में ऐसे हारमोन्स पैदा कर जाते हैं; जो दुःख और पीडा से भरे होते हैं। ऐसे हारमोन्स वाला मांस खाने वाले के शरीर पर जाने-अनजाने उस असह्य पीडा का असर फैलता है।
- ✱ कृषि क्षेत्र में मात्र दस हजार रुपये की रक्कम में एक व्यक्ति को रोजगार मिल सकता है जब कि दूसरे उद्योगों में लाख से भी ज्यादा रक्कम एक व्यक्ति एक व्यक्ति को रोजगार मिलता है।
- ✱ विधि की विचित्रता है कि विश्व में मांसाहारी प्रजा ज्यादा से ज्यादा शाकाहारी बनने लगी है, तब भारतीय आर्य संस्कृति वाली प्रजा मांसाहार की ओर आकर्षित होने लगी है। 'शाकाहार ही श्रेष्ठ एवं आरोग्यवर्धक आहार है' यह सूत्र हृदय में हर कोई व्यक्ति उतारे।

- ❖ दुनिया के सबसे भयंकर अग्निकांडों में गिना जानेवाला एक अग्निकांड सन् १९८७ में पूर्वोत्तर चीन में हुआ, जिसमें ४०० से अधिक लोग या तो मौत के शिकार हुए या गंभीर रूप से घायल हुए। ५६,००० लोग बेघर हो गए तथा १३ लाख हेक्टेयर की फसल बरबाद हो गयी। यह विनाशकारी अग्निकांड लापरवाही से सिगारेट पीने की वजह से हुआ।
- ❖ विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार तम्बाकू प्रत्येक वर्ष दुनिया भर में ३० लाख लोगों को मौत की गोद में सुला देता है। अकेले भारत में यह संख्या आठ लाख से अधिक है।
- ❖ पिछले कुछ वर्षों में किये गये अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि सिगारेट के धुंए से केवल धूम्रपान करनेवालों को ही नहीं बल्कि उनके सम्पर्क में रहनेवाले धूम्रपान परहेजियों को भी नुकसान होता है। उसी तथ्य के आधार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नारा दिया है कि स्मोकर्स आर डेन्जर्स फ्रेंड्स (धूम्रपान करनेवाले खतरनाक मित्र होते हैं)।
- ❖ भारत में दवाईयों का उत्पादन पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कब्जे में है और इन कम्पनियों को हमेशा लोगों के स्वास्थ्य से ज्यादा फिक्र अपने मुनाफे की होती है, इसीलिए बाजार में फलतू दवाईयों का तो ढेर दिखायी देता है, पर जिन दवाईयों की जरूरत होती है, वे नहीं मिल पाती।
- ❖ हजारों तरह की टेबलेट्स, कैप्सूल, इंजेक्शन, सीरप, टॉनिक्स आदि अंग्रेजी दवाईयों बाजार में उपलब्ध है लेकिन इसके बावजूद आम आदमी के स्वास्थ्य में सुधार की बात तो दूर वह निरन्तर बिगड़ता ही जा रहा है।
- ❖ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पादों के बारे में यह धारणा भी सही नहीं है कि इनकी औषधियों गुणवत्ता में श्रेष्ठतम होती है। हाल ही में एक गैर सहकारी संस्थान ने कुछ दवाईयों की गुणवत्ता का सर्वेक्षण किया है, जिसके निष्कर्ष आंखे खोल देनेवाले हैं। इससे पता चला कि सामान्य स्तर से खराब निकली औषधियों में आधी से अधिक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित थी।
- ❖ सम्पूर्ण औषधि उद्योग पर नियंत्रण रखनेवाली ड्रग कन्ट्रोल अथॉरिटी आफ इंडिया भी पर्याप्त सुविधाओं के अभाव में कारगर ढंग से अपने दायित्वों का निर्वाह नहीं कर पा रही है। सीमित साधनों के बावजूद वह समय-समय पर गजेटियर प्रकाशित करती हैं, जिसमें प्रतिबंधित दवाईयों के बारे में सूचनाएँ भी दी जाती हैं, लेकिन आधे से अधिक डॉक्टरों के पास इन गजेटियरों की प्रतियाँ होती ही नहीं हैं। लिहाजा निषिद्ध हुयी औषधियों को डॉक्टर अपने नुस्खे में लिखते रहते हैं और वे बाजार में बिकती रहती हैं।

• **मुस्यफिर...**

क्षमापना कार्ड

सुन्दर आकर्षक चार रंगों में ऑफसेट प्रिंटिंग किये गए लेमिनेशन युक्त क्षमापना कार्ड छपकर तैयार है। इच्छुकजन ८/- रुपये प्रति सेट (१० कार्ड) की दर से मनी ऑर्डर शाश्वत धर्म कार्यालय के पते पर भेज कर प्राप्त कर सकते हैं।— सम्पादक

क्षमापना कार्ड मंगवाने का पता — जे. के. संघवी (सम्पादक)

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका,

थाने—४०० ६०१, (महाराष्ट्र)

क्या आप जानते हैं कि

- ◆ नवम्बर १९८७ में लंदन में एक भूमिगत ट्रेन में भयंकर आग लगने से ३१ व्यक्ति मौत के ग्रास बन गये थे। इस अधिकांश की ९१ दिनों की जांच के बाद निष्कर्ष निकला कि ट्रेन की चलती सीढ़ी पर धूम्रपान की सामग्री गिर जाने से यह आग लगी।
- ◆ ब्रुसेल्स में चैन स्टोर इनोवेशन में आग लगने से ३०० से अधिक लोगों की मृत्यु हो गयी, जो कि सिगरेट के जलते हुए टुकड़े को लापरवाही से फेंक देने के कारण भड़की।
- ◆ चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार रोजाना पांच से दस सिगरेट पीनेवाले व्यक्तियों को दिल का दौरा पड़ने की आशंका सिगरेट न पीनेवाले सामान्य व्यक्ति की तुलना में दो गुनी होती है।
- ◆ जब सिगरेट या तम्बाकू जलाये जाते हैं या जलते हैं तो केन्सरजन्य रसायनों सहित अनेक कार्बनिक रसायन पैदा होकर वातावरण में फैल जाते हैं।
- ◆ अमेरिका के स्वास्थ्य और मानव सेवा विभाग ने सन् १९८५ में अनुमान लगाया कि वहाँ ३४ अरब डालर धूम्रपान के कारण स्वास्थ्य पर पड़नेवाले दुष्प्रभावों और बिमारियों के निबटारे में खर्च होते हैं।
- ◆ दुनियाँ के कुल टी. बी. मरीजों में से आधे हमारे देश में है। संख्या की भाषा में बात करें तो देश में लगभग एक करोड़ इस बीमारी से पीड़ित है।
- ◆ यहाँ १९५२ में सिर्फ १६४३ दवाई बनाने वाली कम्पनियाँ थी, अब यह संख्या बारह हजार से उपर पहुँच चुकी है। दवाई उद्योग में उस समय २५ करोड़ की पूंजी निवेशित थी आज इसमें ४० से ५० गुना वृद्धि हो चुकी है, इसके बावजूद स्वास्थ्य में सुधार एक सपना बना हुआ है।
- ◆ दवाई कम्पनियाँ कुल जितनी दवाइयों का उत्पादन करती हैं, उनमें से तीन चौथाई गैर जरूरी व अनुपयोगी है।
- ◆ दवाई कम्पनियों में ऐसी सैकड़ों दवाइयों थडल्ले से बनायी जा रही हैं जिन पर दुनियाँ के कई विकसित देशों में प्रतिबंध लग चुका है। इन प्रतिबंधित दवाइयों के उत्पादन का खास कारण मुनाफा है।
- ◆ बम्बई के अंडरवर्ल्ड का आक्टोपस यहाँ के सामाजिक जीवन को अपने शिंकंजे में जकड़े हुए है और स्थानीय युवा पीढ़ी को गुमराह कर रहा है। इस आक्टोपस की आठ भुजाएँ हैं - जिस्मफिरोशी, मटका, अवैध शराब, विडियो-जुआ, हफ्ता वसूली, हवाला रैकेट और स्थानीय आतंकवाद इसने पूरी व्यवस्था को बंधिया कर दिया है। इस व्यवस्था की व्यापक व्याख्या में पुलिस, राजनेता और नौकरशाह भी शरीक हैं।
- ◆ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के अनुसार तम्बाकू के शोधन में विश्व के बारह प्रतिशत वन नष्ट हो जाते हैं।
- ◆ एक हेक्टेर क्षेत्र में लगी तम्बाकू को साफ करने में उतने ही क्षेत्र में लगी लकड़ी या ईंधन अनिवार्य है।



- ◆ सिगरेट बनाने वाली मशीन चार मिल लंबा कागज एक घंटे में खा जाती है।
- ◆ विश्व में नवजात शिशुओं की मृत्यु दर बढ़ती जा रही है, विशेषकर डायरिया और अस्थमा से ज्यादा बच्चों की मौत हो रही है, इसका मुख्य कारण है बच्चे को स्तनपान से वंचित रखना।
- ◆ माँ का दूध शिशुओं के लिये सबसे सुरक्षित और पौष्टिक आहार है।
- ◆ स्तनपान से माता और-शिशु दोनों का ही कैंसर जैसी बिमारियों से बचाव होता है।
- ◆ डॉ. आर. के. आनंद के अनुसार स्तनपान करनेवाले बच्चे सामान्य बच्चे से २५ फीसदी ज्यादा होशियार होते हैं।
- ◆ भारतवर्ष में प्रतिमाह मार्ग दुर्घटनाओं में ५००० लोग मृत्यु को प्राप्त होते हैं।
- ◆ युनिसेफ की एक रपट के मुताबिक विश्व में हर सप्ताह ढाई लाख बच्चों की बिमारियों से मृत्यु हो जाती है और हर तीन बच्चों में से एक बच्चा स्थायी रूप से कुपोषण का शिकार रहता है।
- ◆ एक सर्वे के अनुसार आज भी देश में सवा करोड़ से ज्यादा बाल श्रमिक विभिन्न उद्योगों में काम करते हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे उद्योगों में कार्यरत हैं जिनका उनके स्वास्थ्य पर बेहद प्रतिकूल असर पड़ता है।
- ◆ मिर्जापूर व वाराणसी बेल्ट में १.५ लाख बच्चे और कश्मीर में ८०,००० बच्चे गलीचे बुनने का काम करते हैं। कांचीपुरम के हथकरथा उद्योग में २०,००० बच्चे व शिवाकाशी के माचिस व पटाखा उद्योग में ५०,००० बच्चे कार्यरत हैं।
- ◆ युनीवर्सिटी ऑफ मीनेसोटा डीन अब्राहमसन द्वारा एक रिपोर्ट के अनुसार न्यूयॉर्क से नई दिल्ली एक विमानी उड़ान में प्रति मुसाफिर ४.१ टन कार्बन डाय ऑक्साइड वातावरण में फैलती है।
- ◆ न्यूयॉर्क से सिडनी एक विमान उड़ान में २६६१ टन कार्बनडाइआक्साइड वातावरण में घुलती है।
- ◆ भारतीय संविधान के अनुच्छेद ५१ ए (जी) में अंकित है कि - प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के सभी प्राणियों के साथ सहानुभूति व दया का बर्ताव करे।
- ◆ मेंढक नदी-नालों व तालाब के आसपास की जमीन पर पैदा होनेवाले हानीकारक कीटाणुओं को अपना भोजन बनाकर कृषि उत्पादन में मदद करते हैं, इतना ही नहीं वे पर्यावरण स्वच्छ रखने में भी मदद करते हैं क्यों कि इन कीटाणुओं को मारने के लिये जंतुनाशक दवाओं की जरूरत नहीं रह जाती।
- ◆ वैज्ञानिकों के मुताबिक भारतीय जल संपदा का दो तिहाई भाग प्रदूषित हो चुका है।
- ◆ विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट बताती है कि विकासशील देशों में ८० प्रतिशत रोग पानी के संक्रमण से ही पैदा होते हैं।
- ◆ भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की जांच से पता चला है कि क्लोरिन युक्त पानी से कैंसर होने की आशंका रहती है। यह बात स्वास्थ्य राज्यमंत्री तारादेवी सिद्धार्थ ने राज्यसभा में बतायी।
- ◆ वनविभाग के आंकड़ों के अनुसार १९९१ में देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र के साठे उन्नीस प्रतिशत भाग में ही वन बाकी बचे हैं, जब कि सही मात्रा में प्राणवायु मिलने के लिये आवश्यक है कि देश के एक तिहाई क्षेत्र में वनावरण हो।
- ◆ प्रकृति ने हवा-पानी वगैरह सफाई के जो तरीके बना रखे हैं, वे ही सुरक्षित हैं। उसमें तमाम रसायन डाल देने से और गड़बड़ियाँ हो जाती है।

• धर्ममित्र •

पब्लिक स्कूलों का गोरख धंधा

— श्री राजीव बूलचंद

शिक्षा के व्यवसायीकरण और पब्लिक स्कूलों की लूट के विरुद्ध अनेक मंचों से आवाज उठने के बावजूद यह धंधा लगातार फलता-फूलता चला गया है। सरकार और उसका शिक्षा विभाग सब कुछ अपनी आंखों से देखते हुए भी धृतराष्ट्र बन गए हैं और अभिभावक इस लूट से त्रस्त होने के बावजूद अपनी जेबों पर स्वयं डाका पड़ने दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में क्या कभी इस लूट के बंद होने की उम्मीद की जा सकती है?

अंग्रेजी के व्यामोह और सरकारी स्कूलों की चौपट पढ़ाई देख कर आम अभिभावक पब्लिक स्कूलों के आकर्षक तामझाम की ओर सहज ही खिंचे चले जाते हैं। इन्हीं कारणों के चलते देश में पिछले डेढ़ दो दशक में पब्लिक स्कूलों की बाढ़-सी आ गई है। नगरों, महानगरों, कस्बों की तो बात ही क्या गांव-गांव में शिक्षा की ये दुकानें खुल गई हैं और भारी मुनाफा बटोर रही हैं। शिक्षा विभाग के अफसरों को चांदी का जूता मार कर इन दुकानों के मालिक उन्हें अपने वश में रखते हैं। शिक्षा विभागों प्रशासन, प्रादेशिक परिक्षा बोर्डों और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड आदि के पास इतने अधिकार भी नहीं हैं कि वे इनके खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई कर सकें। यदि कोई ईमानदार अडियल अफसर हैकड़ी दिखाता है तो उसे काबू में करने के लिए ये अपनी राजनैतिक पहुंच का हंटर फटकार देते हैं।

अनेक मामलों में तो राजनैतिक सीधे-सीधे इन पब्लिक स्कूलों से जुड़े होते हैं। राजनीतिकों को पब्लिक स्कूल का धंधा कितना रास आता है यह राजधानी में चलते अनेक पब्लिक स्कूलों की संख्या से जाना जा सकता है। दिल्ली की दोनों प्रमुख पार्टियों-भाजपा और इंका के अनेक नेताओं के सैकड़ों पब्लिक स्कूल चल रहे हैं। ऐसे में शिक्षा विभाग के किस अफसर की मजाल है जो उनकी तरफ टेढ़ी नजर डालने की जुर्रत कर सके। उदाहरण एक नहीं अनेक है। दिल्ली प्रदेश काँग्रेस के एक बड़े नेता जगदीश टाइलर का जेडी टाइलर स्कूल वर्षों से चल रहा है। शिक्षा विभाग के प्रभारी पार्षद रहे इंका के कुलानंद भारतीय खुद पब्लिक स्कूल चलाते रहे। जल मल व्ययन संस्थान के पूर्व अध्यक्ष रामजीलाल और दिल्ली के पूर्व कार्यकारी पार्षद राधारमण के स्कूल धड़ले से चल रहे हैं। जनता शासन के दौरान नगर निगम में महापौर रहे राजेंद्र गुप्ता का सीधा संबंध बाल भारती पब्लिक स्कूल से था।

इसी तरह नगर निगम में इंका के मनोनीत सदस्य रहे फ्रेंक एंथनी के फ्रेंक एंथनी पब्लिक स्कूल हैं। पूर्व निगम पार्षद राजेन्द्र जून, राम नारायण वर्मा और शिक्षा समिति के पूर्व सदस्य एस. एल. गुप्ता (अपनी पत्नी के नाम पर) पब्लिक स्कूल चला रहे हैं।

भाजपा नेता भी पब्लिक स्कूल चलाने में इंका से पीछे नहीं हैं। दिल्ली भाजपा के एक बड़े नेता रामभज भी पब्लिक स्कूल चलाते हैं। भाजपा के ही नगर निगम की स्थायी समिति के पूर्व

अध्यक्ष ईश्वरदास महाजन, पूर्व निगम पार्षद योगध्यान आहूजा, मास्टर सोमनाथ, श्रीकृष्ण वर्मा, साहिब सिंह वर्मा, आरएसएस से संबद्ध वीरेन्द्र भटनागर व भाजपा के विभिन्न मंडलों के पदाधिकारी, नेता व कार्यकर्ता सैकड़ों की तादाद में पब्लिक स्कूल चला रहे हैं।

स्पष्ट है कि इतने बड़े पैमाने पर राजनीतिक नेताओं के पब्लिक स्कूलों से संबद्ध होने या उन्हें वरदहस्त होने पर शिक्षा विभाग उनका क्या बिगाड़ सकता है। इनमें कुछ पब्लिक स्कूल शिक्षा और शिक्षार्थियों के कल्याण के लिए ईमानदारी से प्रतिबद्ध भी हो सकते हैं, मगर अधिकांश स्कूल तो नेताओं के लिए पैसा कमाने और राजनीति करने का जरिया ही है।

कुछ वर्ष पूर्व नोएडा के एपीजे स्कूल के प्रधानाचार्य की पिटाई के विरोध में दिल्ली व नोएडा के २०० से ज्यादा पब्लिक स्कूलों ने हड़ताल कर दी थी। फोरम आफ पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष कर्नल आर के कपिला ने तब इस हमले को शिक्षक समुदाय और उन सभी नैतिक मूल्यों पर प्रहार बताया था जिनका पालन स्कूलों द्वारा किया जाता है। उनके अनुसार 'शिक्षक पर हमला इस बात की साफ चेतावनी है कि स्कूलों में गुंडागर्दी किस कदर घुस गई है।' एक स्कूल के, चाहे वह शिक्षा की दुकान ही क्यों न हो, प्रधानाचार्य पर हमला करना बहुत निंदनीय और दंडनीय हरकत है - इसमें दो राय नहीं हो सकती। लेकिन उस प्रधानाचार्य पिटाई कांड में चर्चित हुए कुछ महत्वपूर्ण सवालों की क्या अनदेखी की जा सकती है?

इन सवालों में एक तो यही था कि पब्लिक स्कूलों के प्रबंधक सरकार से रियायती दरों पर जमीन ले लेते हैं और वहां अर्धनिर्मित ढांचों में बच्चों को पढ़ाते हैं तथा भारी रकमें हर महीने फीस व चंदा के रूप में वसूल करते हैं। क्या जिन किसानों से अधिग्रहीत कर सरकार ने बेशकीमती जमीन उन्हें लगभग कौड़ियों के भाव दी हुई होती है, उनके बच्चों को उन स्कूलों में दाखिले का कोई अधिकार नहीं मिलना चाहिए? प्रधानाचार्य पर हमला अगर नैतिक मूल्यों पर प्रहार है तो अभिभावकों को लूटना और शिक्षा की आड़ में अभिभावकों की जेबतराशी करना क्या है? क्या ऐसा करना भी उन नैतिक मूल्यों पर प्रहार नहीं है जिनके मुताबिक शिक्षा दान देने की वस्तु है, बेचने का माल नहीं? पब्लिक स्कूलों में होनेवाली गुंडागर्दी पर तो फोरम आफ पब्लिक स्कूल चिंता व्यक्त करता है लेकिन ये स्कूल अभिभावकों से जो सलूक करते हैं, उनका जैसा शोषण करते हैं उसकी तरफ से वह आंखें मूंदे रहता है। ऐसा क्यों?

पब्लिक स्कूलों में पढ़नेवाले बच्चों के अभिभावक पढ़ाई की फीस, दाखिले की राशि और दान की राशि बेईतहा बढ़ा देने पर अक्सर चिंता व्यक्त करते रहे हैं। कुछ बड़े पब्लिक स्कूलों को छोड़ दें तो अधिकांश स्कूलों के कमरों पर सीमेंट की चादरें होती हैं जो गर्मी में तपती हैं, सर्दियों में ठंडी रहती है और बरसात में उनसे पानी रिसता रहता है। कई स्कूलों के बड़े-बड़े कमरों में एक एक ही पंखा रहता है, परिणाम स्वरूप बच्चे पसीने से तर हो जाते हैं। इसके अलावा अनेक पब्लिक स्कूलों में वहां के कर्मचारियों और शिक्षक-शिक्षिकाओं का शोषण किए जाने के आरोप भी लगाए जाते हैं। ये स्कूल शिक्षक-शिक्षिकाओं को कम पैसा देकर ज्यादा रकम पर हस्ताक्षर करवा कर आयकर विभाग को भी चूना लगाते हैं। पब्लिक स्कूलों का यह शोषण और मनमानी रोकने में सरकार स्वयं को असमर्थ पाती है। मगर इतना तो वह कर ही सकती है कि पब्लिक स्कूलों के लिए एक जैसे नियम-कानून लागू करे और अनधिकृत रूप से चंदा लेने पर रोक लगाए।

.....'जनसत्ता' से साभार.....

पारंपारिक भोजन मधुमेह रोक सकता है।

— रणबीर सिंह

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भौगोलिक अवस्थाओं, तकनीकी का स्तर और शहरीकरण की स्थिति में काफी फर्क होने की वजह से ही पश्चिमी सभ्यता और पूर्वी सभ्यता के पालक देश के लोगों में मधुमेह के प्रसार में भी काफी फर्क देखने में मिलता है। पश्चिम के देशों में या पश्चिमी जीवनशैली के हामियों में मधुमेह का प्रसार जनसंख्या में औसतन १० से १५ प्रतिशत है जबकि साधारण, पारंपरिक ग्राम्य अथवा आदिवासी खान-पान कायम रखनेवाली जनसंख्या में मधुमेह के रोगियों की संख्या २ से ३ प्रतिशत है।

विश्व के अनेक भौगोलिक हिस्सों में खान-पान संबंधी आदतों और मधुमेह के प्रसार के आपसी संबंध को जानने के पश्चात जो जानकारी मिली है उसका अब अच्छा इस्तेमाल होने लगा है। प्रोएँसैसुड और रेशेविहीन भोजन का रसास्वादन करनेवाले पश्चिमी देश अब डाकटरी सलाहों को मान कर पारंपारिक भोजन की ओर लौट रहे हैं। यह विडंबना है कि अपने देश में हम पश्चिम का बासी भोजन (जंक फूड) से लोगों को बचा पाने में असमर्थ हैं। पोषण विज्ञान और पोषण बीमारियों पर अनुसंधान करनेवाले वैज्ञानिकों की हिदायतें आधुनिक सभ्यता के रंग में डूबे लोगों के मन पर से चिकने घड़े की तरह फिसल जाती है।

आयुर्वेद के जमाने में और आधुनिक शोध के विकास से पहले यह ज्ञान गांव-गांव उपलब्ध था कि मधुमेह से छुटकारा पाने के लिए कड़वी चीज का सेवन अच्छा रहता है। मेथी के बीज, करेला, देसी खीरा, जामुन का फल और गुठली तथा निबोलियों का तेल मधुमेह के रोगियों के लिए विशेष लाभकारी है। इनके अलावा किशमिश, फलीदार सब्जियां और साबुत दालों को भी मधुमेह के रोगियों के लिए फायदेमंद बताया गया है। प्राचीन काल में वर्षों तक सीधे ही मनुष्यों पर परीक्षण करके यह तो मालूम कर लिया गया था कि उपरोक्त सभी खाद्य पदार्थों के सेवन से मधुमेह के रोगी को आराम मिलता है परंतु आधुनिक शोधतंत्र के विकसित होने के बाद ही यह अच्छी तरह साबित किया जा सका है ये कि खाद्य पदार्थ मनुष्य के शरीर में पहुंचकर किस प्रकार मधुमेह जैसी चयापचयी बीमारियों की प्रबलता को कम करते हैं।

तत्पश्चात आरोग्यकर आहारों की सूची तैयार करने में वैज्ञानिकों ने तत्परता दिखाई। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने मधुमेह के लिए आरोग्यकर आहारों के निर्धारण और मनुष्यों पर इनके प्रभाव की जांच करने के लिए बड़े पैमाने पर काम किया है। इन शोधों का ज्यादा प्रचार होना चाहिए था ताकि पश्चिमी जीवनशैली की ओर झुकनेवाले व्यक्तियों को यह मालूम रहता कि जिस रास्ते पर वे जा रहे हैं उससे मधुमेह जैसी कई चयापचयी बीमारियों और कैंसर तक के वे शिकार हो सकते हैं।

चंडीगढ़ में पी. जी. आई. में गैस्ट्रोएंटैरोलॉजी विभाग में डाक्टर जे. बी. दिलावरी ने दस साल

तक कठोर मेहनत करके यह सिद्ध किया है कि राजमा, चना, दालों के साबुत बीज और फलीदार हरी सब्जियों के सेवन से मधुमेह के रोगियों के शरीर में रक्त में शर्करा की अधिक मात्रा को कम करके सामान्य स्तर तक लाया जा सकता है। डाक्टर दिलावरी के शोध से इस बात की पुष्टि हुई है कि आरोग्यकर आहार में गैलेक्टोमेनस नाम का एक खास रेशा होता है। इस रेशे की मौजूदगी में आंतों में शर्करा अवचूषण (एबजाप्शन) काफी धीमा हो जाता है। शर्करा, भोजन में मौजूद कार्बोहाइड्रेटों का विघटन होने से पाचनक्रिया से तैयार होती है। धीमा अवचूषण होने से रक्त में शर्करा की मात्रा सामान्य या सहयस्तर से कभी ऊपर नहीं जाती है।

डा. दिलावरी के अलावा एक और अध्ययन जयपुर विश्वविद्यालय की प्लांट फिजियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री प्रयोगशाला में डॉ. पुष्पा खन्ना ने किया है। डाक्टर पुष्पा ने करेले में मौजूद उस सक्रिय यौगिक को पृथक करने में सफलता हासिल की है जिसकी वजह से मधुमेह के रोगियों में रक्तशर्करा का बढ़ा हुआ स्तर सामान्य स्तर तक आ जाता है। यह यौगिक पोलिपेप्टाइडपी है। यह कई अमीनो अम्लों से मिलकर बना हुआ बड़े आकार का एक प्रोटीन अणु है। वैसे तो करेले के रस के सेवन से या करेले को उबाल कर खाने से मधुमेह के रोगियों को आराम पहुंचता है।

टिशु-संवर्द्धनतकनीक से इस प्रोटीन को काफी मात्रा में तैयार किया जा सकता है। इसकी कम खुराक ही काफी असरदार होती है। इस अवस्था में इससे तैयार दवा सस्ती भी होगी।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान की पत्रिका न्यूट्रीशन न्यूज के मई, १९८७ अंक में मेथी के बीजों के सेवन से मधुमेह के उपचार पर विस्तार से चर्चा की गई है। २५ से १०० ग्राम मेथी के दानों के सेवन से इंसुलिन पर पूरी तरह निर्भर रहनेवाले रोगी (इंसुलिन डिपेंडेंट डायबीटिक) और इंसुलिन न लेनेवाले रोगी (नॉन इंसुलिन डिपेंडेंट डायबीटिक) को काफी फायदा पहुंचता है। मेथी के बीजों के सेवन से रक्त में कालेस्टेरॉल और शर्करा दोनों की मात्रा में काफी हद तक गिरावट आ जाती है। इंसुलिन का सेवन रक्त में कोलेस्टेरॉल की मात्रा को बढ़ाए रखता है इसलिए मधुमेह के रोगियों में सूक्ष्म रक्तवाहिकाओं के रोग और हृदयवाहिकीय (कार्डियोवास्कुलर) विकारों के रूप में इसका दुष्प्रभाव प्रकट होता है। आमतौर पर होनेवाले दुष्प्रभाव है आंखों की सूक्ष्मरक्तवाहिकाओं का विकृत होना, एथीरोकाठिन्य और गैंग्रीन लेकिन मेथी के दानों का सेवन करनेवाले मधुमेह के रोगियों में काफी समय बाद तक भी किसी दुष्प्रभाव का पता नहीं चला। एथीरोकाठिन्य, रेटीनोपैथी और गैंग्रीन होना तो दूर की बात रही। मेथी के बीजों की उचित मात्रा में ली गई खुराक से मधुमेह के रोगियों के मूत्र में आनेवाली शर्करा काफी हद तक कम हो जाती है। इसके लिए २५ ग्राम मेथी के दाने २१ दिन लगातार खाने पडते हैं। आधुनिक एलोपैथी चिकित्सक भी मेथी के गुणों की वजह से मधुमेह के मरीजों को इसके नियमित सेवन की अब सलाह देने लगे हैं।

भूल सुधार

● माह जुलाई में चातुर्मास निर्णय शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ १८ नं. पर पू. साध्वीजी श्री का चातुर्मास थराद के स्थान पर पाठक गण धानेरा पढ़े।

● जुलाई अंक में पृष्ठ ४६ पर पंक्ति १९ में शा झुमरलालजी सिंघवी, आहोर की जगह शा झुमरमलजी रिखबाजी वेदमुथा पढ़ें।

ज्ञानकसौटी (१७)

— महेंद्र जे. संघवी — थाने

स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ ३० पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। — सम्पादक)

(नोट — सभी उत्तर 'म' अक्षर से शुरू होते हैं।)

- ४०१) वर्तमान समय में --- का शासन चल रहा है।
 ४०२) मोक्ष गति में आत्मा शुद्ध बुद्ध --- हो जाती है।
 ४०३) --- विनय का नाशक होता है।
 ४०४) --- भगवान महावीर का प्रमुख विरोधी था।
 ४०५) प्रथम गुणस्थान का नाम --- है।
 ४०६) कर्मों का राजा --- राजा।
 ४०७) सन्नी पंचेन्द्रियों के मन की बात जाननेवाला --- ज्ञान कहलाता है।
 ४०८) वीस विहरमान --- में विचरण कर रहे हैं।
 ४०९) --- के भव में महावीर स्वामी ने जाति का मद किया था।
 ४१०) शांतिनाथ भगवान ने जन्म लेते ही --- रोग शान्त कर दिया था।
 ४११) 'मिति मे सव्व भूएसु' से --- भावना झलकती है।
 ४१२) श्रावकों एवं साधुओं के लिये क्रमशः अणुव्रतों एवं --- की व्यवस्था है।
 ४१३) --- भक्तामर स्तोत्र के रचयिता थे।
 ४१४) कोंकण शत्रुंजय (थाने) तीर्थ के मूलनायक भगवान --- हैं।
 ४१५) राजेन्द्रसूरिजी म. सा. का समाधिमंदिर --- में है।
 ४१६) चार गतियों में से एक।
 ४१७) चार कषायों में से यह कषाय तिर्यच में अधिक पाया जाता है।
 ४१८) चार कषायों में से यह कषाय मनुष्य में अधिक पाया जाता है।
 ४१९) --- के हारे हार है, --- के जीते जीत।
 ४२०) वह सज्जाय जिसमें श्रावक के ३६ कर्तव्यों का वर्णन किया गया है।
 ४२१) साधु, श्रमण, निग्रंथ, अणगार, ---।
 ४२२) उपधान की --- पहनना, उपधान का उजमणा है।
 ४२३) महाराष्ट्र का वह पर्वत जहाँ पर राजेन्द्रसूरिजी म. सा. ने सवा करोड़ नवकार मंत्र का जाप किया था।
 ४२४) वह ज्ञान जो तीर्थकरों को दीक्षा ग्रहण करते ही होता है।
 ४२५) 'जयवीयराय' सूत्र बोलते समय यह मुद्रा होती है।



॥ प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् राजेन्द्रगुरुभ्यो नमः ॥

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

(प्रेरणा दाता - राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज)

- समाज संगठन
- धार्मिक शिक्षा प्रसार
- समाज सुधार
- आर्थिक विकास

के चतुः दिव्य उद्देश्यों को लेकर स्थापित
युवाओं का विशाल संगठन है।

हमारी प्रवृत्तियाँ -

- शाश्वत धर्म का प्रकाशन
- सम्यग्ज्ञान शिविरों का संचालन
- धार्मिक पाठशालों को अनुदान
- अल्पबचत योजनाओं का संचालन
- स्वयंसेवक दल का गठन
- प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति
- साहित्य का प्रकाशन
- परिषद भवन राजगढ़ की स्थापना

आप भी आज ही सदस्य बनिए। अपने ग्राम/नगर में परिषद
की शाखा स्थापित किजिए। परिषद शाखा को उन्नत किजिए।

‘परिषद की प्रगति-समाज की प्रगति है’ श्रीमद् यतीन्द्रसूरी

सुरेन्द्र लोढ़ा
महामंत्री

चैतन्य काश्यप
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

सेवन्तीलाल एम. मोरखिया
अध्यक्ष

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद



सम्पर्क सूत्र :- सुरेन्द्र लोढ़ा, राष्ट्रीय महामंत्री,
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद,
धानमंडी - मन्दसौर (म. प्र.)

सरेह चलते-चलते

- ❁ **पृथ्वी सम्मेलन के दौरान यह रहा पृथ्वी का हाल** – रियो डि जनेरियो में पर्यावरण पर हुए सम्मेलन के दौरान पृथ्वी की बिगड़ती हालत की रफ्तार के आंकड़े विशेषज्ञों ने पेश किये हैं, उस अनुसार इन १२ दिनों के बीच विश्व भर में पेड़ पौधों और जंतुओं की ५०० से ९०० प्रजातियाँ हमेशा के लिए खत्म हो गईं। ४ लाख ८७ हजार २८० एकड़ जमीन रेगिस्तान में बदल गई। इस दौरान ११ लाख ३० हजार एकड़ पर हरा भरा जंगल तबाह हो गया। आबादी ३३ लाख बढ़ गई। ये सारे आंकड़े सम्मेलन में आये कई संगठनों की साझी कोशिशों से निकाले गए। इनमें मुख्य हैं – वर्ल्ड वाइड फंड फोर नेचर, फ्रेन्ड्स ऑफ अर्थ इन्टरनेशनल और क्राइसिस पापुलेशन कमेटी।
- ❁ **युनियनवाद और देश** – युनियनवाद से देश को जो लाभ हुआ है, उससे अनेक गुना नुकसान भी हुआ है। अब जैसे वह मनमानी एवं दादागिरी का पर्याय बन गया है। राज्य अथवा शहर का बस व्यवहार हो या बैंकों की कार्य पध्दति या मिलों का संचालन – जनता को दादागिरी का अनुभव पग-पग पर होने लगा है। इनसे देश के अर्थतंत्र को ही नहीं बल्कि नैतिकता और निष्ठा का भी न्हास हुआ है।
- ❁ **मांसाहार से रोगोत्पत्ति** – पिछले दस वर्षों में विविध चिकित्सा विज्ञान के अनेकानेक परिक्षणों ने सिद्ध किया है कि मनुष्य के लिये शाकाहार ही श्रेष्ठ भोजन है।
- ❁ **प्रोटीनयुक्त भोजन से नुकसान** – वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार ज्यादा प्रोटीनयुक्त भोजन मानव के मूत्रपिण्ड पर बुरा असर करता है। स्वास्थ्य विज्ञान की पत्रिका 'लेन्सेट' में प्रकाशित लेख के अनुसार उपरोक्त बात स्पष्ट की गयी है। प्रोटीन की जरूरत मानव को एक किलो वजन पर १ ग्राम के अनुसार चाहिये।
- ❁ **पर्यावरण संतुलन** – आजादी के बाद देश में बड़ी संख्या में वृक्षों का सफाया किया गया, जिससे दुष्काल, अनावृष्टि, अतिवृष्टि एवं वायुमंडल में प्रदूषण आदि प्रश्न बढ़ गये हैं। पर्यावरण निष्णातों के अनुसार जो जीव-जंतुओं को मारने पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया तो देश में कुदरती आफतों की समस्याएँ बढ़ जायेगी।
- ❁ **जवाहर रोजगार योजना** – राजीवगांधी सरकार के समय प्रारंभ की गयी जवाहर रोजगार योजना में प्रतिवर्ष २६,२३,००,००० के हिसाब से तीन वर्षों में ७८,६९,००,००० की रूषि खर्च की जा चुकी है, उससे किसको कितना लाभ हुआ, यह शोध का विषय है। ★ – प्रवासी

दुष्टों की एकजुटता ही जगत में कष्टों की वजह है, जब तक सज्जन एकजुट नहीं होंगे, तब तक जगत की कोई समस्या हल नहीं होगी। और सज्जनों का एकजुट न होना ही दुष्टों का असली बल है। ●●●●●●●●●●

१-४-१९९१ से ३१-३-१९९२ तक बनाए गए शाश्वत धर्म के सदस्यों की सूची

क्र.	सदस्य बनाने वाले का नाम एवं गाँव	बीस वर्षीय	पाँच वर्षीय	एक वर्षीय	कुल सदस्य
१	शाश्वत धर्म कार्यालय, थाने	३४	८९	४६	१६९
२	श्री जे. के. संघवी, थाने	४९	२९	५	८३
३	श्री रमेशभाई एच. गांधी, बम्बई	३	३३	--	३६
४	श्री उत्तमजी जैन आदिनाथ केबल्स, दिल्ली	६	२२	--	२८
५	श्री गौतमबुद्धजी बागरेचा, बालोतरा	--	२२	२०	४२
६	श्री सोहनराजजी जैन, कराड़	९	--	--	०९
७	श्री विजयकुमारजी दसेड़ा, जावरा	४	१४	--	१८
८	श्री धीमुलालजी जैन, काकीनाड़ा	६	५	--	११
९	श्री नरेन्द्रकुमारजी धाड़ीवाल, महिदपुर	२	१३	१४	२९
१०	श्री पारसमलजी सेठिया, नीमच	१	१६	१०	२७
११	श्री कांतिलालजी भंडारी, राजगढ़	--	१८	२	२०
१२	श्री देवीचंदजी जैन, भीनमाल	४	--	२	६
१३	श्री हरकचंदजी खिमावत, ईरोड़	--	१२	१	१३
१४	श्री मोहनलालजी एच. जैन, जोगेश्वरी	--	११	४	१५
१५	श्री ओच्छबलालजी एन. जैन, रानापुर	--	११	४	१५
१६	श्री पारसमलजी वी. मुथ्या, लोनावला	--	१२	--	१२
१७	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, मन्दसौर	२	--	२१	२३
१८	श्री नरेन्द्रकुमारजी पोरवाल, मद्रास	--	७	--	७
१९	श्री कमलेशकुमारजी काकड़ीवाला, अलीराजपुर	--	२	१८	२०
२०	श्री सुरेशचंद्रजी जैन, इन्दौर	--	५	--	५
२१	श्री कालुराजजी मेहता, जालोर	--	५	--	५
२२	श्री चम्पालालजी हिराणी, मद्रास	१	२	--	३
२३	श्री भीखालाल एम. जैन, डीसा	--	१	१६	१७
२४	श्री धनराजजी मेवाड़ा, चाणोद	--	३	०७	१०
२५	श्री हस्तीमलजी, हैद्राबाद	१	--	--	१
२६	श्री राजुभाई, दादर	१	--	--	१
२७	श्री पुखराजजी जैन, विजयवाड़ा	१	--	--	१
२८	श्री प्रवीणजी जैन, भांडुप (बम्बई)	१	--	--	१
२९	श्री पदमचंदजी जैन, भरतपुर	--	--	१०	१०
३०	श्री उत्तमचंदजी जैन, विजयवाड़ा	--	२	--	२
३१	श्री बाबुलालजी बोहरा, नागदा	--	१	३	४
३२	श्री जसवंतसिंहजी सोलंकी, जालोर	--	१	१	२
३३	श्री पारसमलजी सेठिया, कुशलगढ़	--	१	१	२
३४	श्री अशोकजी श्री श्रीमाल, टाण्डा	--	१	१	२
३५	श्री नेमीचंदजी जैन, भीवंडी	--	१	--	१
३६	श्री देवेन्द्रजी पोरवाल, भायन्दर	--	१	--	१
३७	श्री माणकलालजी छाजेड़, महिदपुर	--	१	--	१
३८	श्री धर्मचंदजी जैन, खाचरोद	--	१	--	१
३९	श्री उत्सवलालजी जैन, इन्दौर	--	--	४	४
४०	श्री नीरजजी सुराणा, इन्दौर	--	--	४	४
४१	श्री मुनीलालजी एन. भंडारी	--	--	२	२
४२	श्री राजमलजी भंडारी	--	--	१	१
		१२५	३४२	१९७	६६४

युद्ध-वीर चाँपाशाह

-श्री कन्हैयालाल गौड़

चाँपाशाह नामक वणिक ऊँट पर जवाहरात लेकर अपने गाँव से खाना हुआ। गाँव से कुछ दूर ही भयानक जंगल पड़ता था। उसमें लुटेरे छिपे रहते थे और आने-जाने वाले यात्रियों को लूट लेते थे। चाँपाशाह इस बात को जानता था, फिर भी वह बेधड़क होकर जा रहा था। जंगल के मध्य में ही लुटेरे मिल गये। उन्होंने चाँपाशाह को ललकारा—“ए बनिये! खड़ा रह ठहर जा यहाँ।” चाँपाशाह बलवान और मजबूत दिल का था। उसका मनोबल मजबूत था। चाँपाशाह ने लुटेरों के सामने बिना ऊँट खड़ा किये और बिना भय के पूछा—“बोलो, क्या बात है?”

लुटेरे—“कौन है तू?”

चाँपाशाह—“मैं वणिक हूँ।”

लुटेरे—“तेरे पास क्या है?”

चाँपाशाह—“मेरे पास जवाहरात हैं।”

लुटेरे—“जीना चाहता है तो हमें शीघ्र यह जवाहरात सौंप दे।”

चाँपाशाह—“किस तरह माँग रहे हो तुम? यदि तुम दान के रूप में माँग रहे हो कि मैं तुम पर दया करके दे दूँ तो मैं विचार कर सकता हूँ। पर यदि तुम लूटने के इरादे से माँग रहे हो तो तुम्हारी आशा सफल नहीं हो सकेगी।”

उसका ऐसा साहस देख कर वे लुटेरे क्षण भर के लिये स्तब्ध हो गये। चाँपाशाह ऊँट पर से उतरा, उसका पाँच हाथ का भीमकाय मांसल शरीर और वैरी को भी कंपा देने वाली उसकी निर्भीक आँखें तथापि मुस्कराता हुआ मुख देख कर लुटेरों ने पूछा—“तुम नीचे क्यों उतर पड़े?”

“इसलिये कि तुम जमीन पर हो। युद्ध का यह नियम है कि शत्रु जिस स्थिति में हो, उस स्थिति में ही योद्धा को खड़ा रहना चाहिये।” चापाशाह ने कहा।

लुटेरों के आश्चर्य के बीच उसने अपने तरकश से ५ तुरीय निकाले और उनमें से दो तोड़ डाले। यह देख कर लुटेरों ने पूछा—“ये तीर क्यों तोड़ डाले?”

“क्योंकि तुम तीन हो और एक के लिये मेरा एक ही बाण बहुत है।”

“यदि तू ऐसा तीरन्दाज है तो इस उड़ती हुई चिड़िया पर तीर मार कर इसे भूमि पर गिरा दे।”

“मैं तीरन्दाज अवश्य हूँ, लेकिन मेरा नियम है किसी निर्दोष पर तीर न चलाने का। चिड़िया निरपराध है, इसने मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ा। तुम्हें मेरी बाण विद्या का चमत्कार देखना है न? तो लो, मैं दिखाता हूँ।” इतना कह कर उसने तीनों तीर प्रत्यंचा पर चढ़ाये और लुटेरों के देखते ही देखते उनके धनुष को काटते हुए और तरकश को दूर ठेलते हुए सरसर करते हुए निकल गए। चाँपाशाह ने पूछा, “तुम ही बताओ, मुझे तुम्हारे प्राण लेने में क्या देर लग सकती है?”

लुटेरे आश्चर्य से आँखें फाड़ते रह गये। वे लुटेरे और कोई न थे। विदेशी सत्ता को राजगद्दी से हटाने के लिये घूमते हुए वीर वनराज चावड़ा और उसके दो साथी थे। चाँपाशाह की वीरता से प्रभावित होकर उन्होंने उसे मित्रता कर ली और उनकी सहायता से अपनी राजसत्ता पुनः प्राप्त कर ली।

श्री आहारे जैन सेवा संघ - बम्बई का चतुर्थ सम्मेलन श्री कल्याण
आहारे जैन संघ के सौजन्य से कल्याण में १३ सितम्बर को होगा।
शशिवत धर्म/अगस्त/९२ (१३)



आपका पत्र मिला



❁ आप द्वारा प्रेषित शाश्वत धर्म का जून अंक प्राप्त हुआ। आवरण अत्यन्त सार्थक एवं समीचीन है। विषय वस्तु भी सामयिक समाजोपयोगी एवं संग्राह्य है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

- सुमन्त भद्र (सम्पादक - जिनेश्वर) चिंचवड़-पूना

❁ आपके द्वारा प्रकाशित शाश्वत धर्म पत्रिका का जून अंक विशेष आकर्षक लगा जिसमें 'नमो व णमो' की व्याख्या विशेष रूची कर लगी। समाचार दर्शन, सरे राह चलते-चलते आदि स्थाई स्तम्भों द्वारा नवीन व सैद्धान्तिक जानकारी के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका दिन दुगना और रात चौगुना तरक्की करे। यही शुभकामना।

- अनिलकुमार डूंगरवाल - जमुनियाकलाँ

❁ आपके कुशल निर्देशन सम्पादन के अधीन शाश्वत धर्म देखने को मिला। प्रयास काफी स्तुत्य एवं सराहनीय है।

- रमेश (व्यवस्थापक-कुन्दकुन्दाचार्य पुस्तकालय) जयपुर

❁ आपके द्वारा समय-समय पर जो लेख अहिंसा पर्यावरण अनिक घी, कोलगेट पेस्ट बिस्किट्स एवं इस बार मच्छर भगाने में काम आनेवाले उपक्रमों के बारे में छपते हैं वे काफी रुचिपूर्ण एवं दिल दहला देनेवाले होते हैं, उन्हें पढ़कर ऐसा लगता है मानों इस संसार में एक अहिंसक मानव का रहना दुष्वार हो गया है। किन-किन चीजों से बचेंगे हम? जो आवश्यक हो वह तो वापरना ही पड़ती है फिर भी उक्त बातों को पढ़कर काफी वस्तुओं का त्याग हमने और हमारे कोई मित्रों ने किया है। धन्यवाद। भविष्य में भी ऐसे लेख लिखते रहें।

- आजादकुमार जैन - अलीराजपुर (म.प्र.)

❁ हमें शाश्वत धर्म का जुलाई अंक बहुत अच्छा लगा। शाश्वत धर्म बहुत ही अच्छा प्रकाशित हो रहा है। यह निरंतर सुन्दर एवं सुव्यवस्थित बनता रहे। हमारी यह कामना है।

- रमेश डामरानी - हैदराबाद



१ जुलाई १९९२ से ३१ जुलाई तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री कालुराजजी मेहता - जालोर	--	--	४	४
श्री पारसमलजी मुथा - लोनावला	--	--	१०	१०
जे. के. संघवी - थाने	४	--	५	९
श्रीमाणकचंदजी गुन्देचा	--	--	३	३
के. के. संघवी	--	--	१	१
कार्यालय - थाने	--	--	४	४
	४	--	२७	३१

युवासंदेश

संघर्ष से सिद्धि

सागर रलों का भंडार है,
परंतु वे रत्न
उसकी अतल गहराई में होते हैं ।
उन रलों को पाने के लिए
गोताखोर बनना पड़ता है ।
सागर के तूफानों को
सहना पड़ता है ।
सरोवर में कोई संघर्ष
सहन करना नहीं पड़ता है,
परंतु इसके साथ ही
सरोवर में
डुबकी लगाने वाला
रलों को भी प्राप्त नहीं करता है ।
साधना के शिखर पर पहुंचना है तो
संघर्षों का स्वागत करना ही पड़ेगा ।
बिना संघर्षों को सहन किए
महान् सिद्धियाँ कभी प्राप्त नहीं होती हैं ।



वाणी में विवेक रखो

पानी को छानकर पीने से
दो फायदे हैं -
जीव रक्षा और स्वास्थ्य-रक्षा ।
उसी प्रकार
वाणी का भी छानकर
उपयोग करना चाहिये ।
वाणी को छानने का वस्त्र है-विवेक
बोलने के पूर्व
विवेक रूप वस्त्र से
वाणी को छानना चाहिये ।
विवेक युक्त वाणी का
उपयोग करने से
वह वाणी
कलह और क्लेश का निवारण करती है ।
और
जीवन के वातावरण में
शांति पैदा करती है ।



महावीर-वाणी

तोल तोल कर बोल

बहुत बोलने से कोई उत्तम वक्ता नहीं होता और कम बोलने से कोई मूर्ख नहीं होता ।
यद्यपि व्यवहार में यह लोकोक्ति प्रचलित है कि - 'बोले उसके बेर बिके और न बोले उसके
भूँगडे (चने) भी पडे रहे; पर उसके उत्तर में यह कहावत भी प्रचलित है कि 'थोथा चणा वाजे
घणा ।' अतः अपनी बुद्धिमता से समझ पूर्वक खूब सोच कर वचन व्यवहार करना
चाहिये; जिससे जीवन में कभी निराशा या बेचैनी का अनुभव न हो ।

● मधुकर

शोक श्रद्धांजली

साध्वीजी मलयाश्रीजी का स्वर्गवास

- **अहमदाबाद** - गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री दर्शनसागर सूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्ती साध्वीजी श्री मलयाश्रीजी का स्वर्गवास ८१ वर्ष की उम्र में आषाढ सुदी १३ रविवार रात्रि में १०-२३ पर समाधिपूर्वक हुआ। स्वर्गवास निमित्त श्रावण सुदी १ से विविध पूजनसह पंचान्तिका महोत्सव आयोजित किया गया।
- **मन्दसौर** - श्री सौधर्म बृहत्पागच्छीय जैन श्वे. संघ के संरक्षक श्री मीश्रीलालजी हिंगड़ की धर्म पत्नी तथा अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य - श्री गजेन्द्रकुमारजी हींगड़ की मातेश्वरी श्रीमती कंचनबाई का दीर्घ बीमारी के पश्चात निधन हो गया। परिषद एवं संघ द्वारा श्रद्धांजली अर्पित की गई।
- **खाचरोद** - खाचरोद के श्री वरदीचंदजी पत्रालालजी भटेवरा का ८० वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आप पू. आचार्य गुरुदेव के भक्तों में से थे। आपकी सुवाच्य स्वच्छ हस्तलिपी होने के कारण आप आचार्य गुरुदेव श्री यतिन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के व्याख्यानों का एवं अन्य साहित्य लेखन का कार्य करते थे।
- **आंहोर** - गुरुभक्त सुश्रावक श्री कुशलराजजी बुटा का गत दिनों स्वर्गवास हो गया।
- **महिदपुर** - अ. भा. श्री रा. जै. न. परिषद के प्रान्तीय ईकाई के शिक्षामंत्री एवं स्थानीय परिषद शाखा के अध्यक्ष श्री माणकलालजी छाजेड़ के पिता श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ का आकस्मिक निधन हो गया। स्व. श्री छाजेड़ की स्मृति में उनके परिवारद्वारा श्री राजेन्द्र जैन ट्रस्ट महिदपुर को ७०००/- एवं त्रिस्तुतिक जैन संघ बडावदा को ६०००/- रु. की राशि भेंट दी जाने की घोषणा की गयी।

परिषद व शाश्वत धर्म परिवार की ओर से स्वर्गस्थ आत्माओं को हार्दिक श्रद्धांजली।

शब्द सागर इनामी स्पर्धा ११ के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम - कु. संगीता जे. संघवी, आहोर

उत्तर - बाएं से दांयी ओर - (१) श्री (३) अक्ष (५) सच्चीक्षमा (९) शाश्वत पत्रिका (११) रम्यक (१२) शाश्वत (१३) नायक (१४) तात (१७) कुरगडू (१९) राणकपुर (२१) दण्डक (२२) मित (२३) सुपात्र (२५) अंकन (२६) यश (२८) गौकुल (२९) जत्ता (३१) तमाकु (३२) कान (३३) आप (३५) मलमास (३७) पद्य (३८) सुरक्षा (४०) रङ्ग (४१) दाना (४३) मजा (४६) वरकनक (४७) इलायची

उपर से नीचे की ओर - (२) शाश्वत (४) क्षत्रिय (६) चीर हरण (७) क्षम्य (८) माकन्दी (९) शाश्वत (१०) काकन्दी (१२) शातावेदनिय (१५) जर (१६) भरत (१७) कुकड़ा (१८) गजसुकुमाल (१९) रात (२०) कलकत्ता (२२) मित्र (२४) पालकुमार (२५) अंजनगिरि (२७) शनि (२८) गौतम (३०) श्री पद्यनाभ (३३) आपदा (३४) वासुदेव (३६) सङ्गम (३९) क्षायिक (४२) धाक (४४) जाइ (४५) भय।



समाचार - दर्शन

राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिश्वरजी का सुरत में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश तथा श्री राजराजेन्द्र ज्ञान मन्दिर का भव्य उद्घाटन सम्पन्न

सुरत - अभिधान राजेन्द्र कोप के रचयिता चारित्रचूड़ामणी गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी की पट्ट परम्परा में आचार्यदेव श्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी के शिष्यरत्न राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी, मुनिश्री नित्यानंदविजयजी, मुनि श्री हेमरत्नविजयजी, मुनि श्री विश्वरत्नविजयजी, मुनि श्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनि श्री प्रशान्तरत्नविजयजी एवं साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी, चन्द्रयशाश्रीजी, शशिकलाश्रीजी, दिव्यदृष्टाश्रीजी, अविचलदृष्टाश्रीजी, अनुपमदृष्टाश्रीजी, अमीतदृष्टाश्रीजी, अनंतदृष्टाश्रीजी, मयुरकलाश्रीजी, चारित्रकलाश्रीजी, भक्तिरसाश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश सुरत में आषाढ़ सुदी १० गुरुवार दि. ९ जुलाई १९९२ को हर्षोल्लास के साथ हुआ। जगह-जगह स्वागत द्वार बनाये गये थे। प्रवेश जुलूस में स्थानीय नगरजनों के साथ मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तामिलनाडु से आये हजारों गुरुभक्त भी शामिल थे।

इस अवसर पर आचार्य श्री के सानिध्य में नवनिर्मित श्री राजराजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर का उद्घाटन अखिल भारतीय सौधर्मवृहत्पोगच्छ जैन संघ के अध्यक्ष - जैन रत्न श्री गगलदास संघवी के करकमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखिया, महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा, त्रिस्तुतिक जैन संघ के उपाध्यक्ष श्री चेतन काश्यप एवं महामंत्री श्री भंवरलाल छाजेड़ भी पधारे थे।

नूतन ज्ञानमंदिर में दादा गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी का वृहत् अप्रिमत चित्र विराजमान करने का लाभ वोहेरा हालचंद ने लिया। दादा गुरुदेव का छोटा चित्र श्री पारेख केशवलाल खेतशीभाई द्वारा; श्रीमद् धनचन्द्रसूरिजी का फोटो चौराऊ निवासी अ. एम. ओसवाल द्वारा; श्रीमद् भूपेन्द्रसूरिजी का फोटो वोहेरा चिमनलाल नत्थूचंद (थराद) द्वारा; श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी का फोटो भंसाली अमूलख भाई शामजीभाई (थराद) द्वारा; श्रीमद् विद्याचंद्रसूरिजी का फोटो संघवी हरीलाल शामजीभाई द्वारा; वर्तमानाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरिजी का फोटो अदाणी चुनीलाल नागरदास द्वारा; उपाध्याय श्री मोहनविजयजी का फोटो संघवी माणकचंदजी भाईचंदजी द्वारा; उपाध्याय श्री गुलाबविजयजी का फोटो वोहेरा भाणजीभाई केवलभाई द्वारा; मुनि श्री हर्षविजयजी का फोटो भणसाली वीरचंद जीतमलजी द्वारा; मुनि श्री शान्तिविजयजी का फोटो वोहेरा जयंतीलाल मानचंद द्वारा स्थापित किये गये। गुरुमहाराज के पाट को स्थापित करने का लाभ भंसाली अमूलखभाई शामजीभाई ने लिया। गुरुभण्डार अदाणी गगलदास नागरदास की ओर से स्थापित किया गया।

गुरूदेव की वासक्षेप पूजा का लाभ वोहेरा जयंतीलाल मानचंद ने एवं आरती का लाभ अदाणी नरपतलाल टीलचंदभाई ने लिया। धूप पूजा व चामर ढालने का लाभ क्रमशः बलू हालचंद माणीकलाल व संघवी खेमचंद नेमचंद ने लिया इस पावन अवसर पर पू. राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेनसूरिजी को कांबली वोहराने का लाभ रतलाम निवासी श्री चेतनकुमार काश्यप ने लिया। पू. साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी को कांबली श्री केशवलालभाई खेतशीभाई ने वोहराई। फोटो वधाने का लाभ अदाणी हालचंदभाई वीरचंदभाई, झालर बजाने का लाभ दोशी उगमचंदभाई, चंद्रवा पुंठीया का लाभ दोशी कालीदास सताचंद ने लिया। स्वामिवात्सल्य का लाभ चौराऊ निवासी श्री

ने लिया

प्रतिदिन सुबह ६ बजे मांगलिक भक्तामर स्तोत्र एवं गुह गुणानुवाद व ९ बजे व्याख्यान में श्री उत्तराध्ययन सूत्र व भावनाधिकार में विक्रमनृप चरित्र चल रहा है। उत्तराध्ययन सूत्र वोहराने का लाभ धानेरा वाले श्री कांतिलाल भाइचंदभाई सवाणी ने लिया।

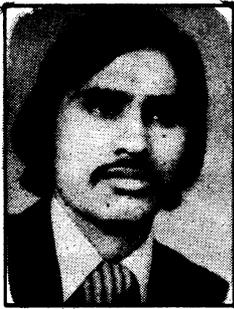
महिलाओं एवं बालिकाओं की धार्मिक शिक्षण शिबिर प्रति रविवार को साध्वीजी महाराज की निश्रा में चल रही हैं।

पूज्य श्री की निश्रा में विविध तपश्चर्याएं चल रही है। पूज्य साध्वीजी. श्री अमितदृष्टाश्रीजी ने मासक्षमण (३० उपवास) एवं पूज्य साध्वीजी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी, अनुपमदृष्टाश्रीजी एवं चंद्रयशाश्रीजी ने सिद्धि तप की तपश्चर्याएँ की।

नवकार आराधना का नवदिवसीय कार्यक्रम श्रावण सुदी ८ दि. ५ अगस्त से प्रारंभ हुआ।



अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का वार्षिक सम्मेलन ३ अगस्त सोमवार को केन्द्रीय अध्यक्ष श्री सेवतीभाई मोरखिया की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की विस्तृत जानकारी सितम्बर अंक में प्रकाशित की जायेगी।



बधाई!

पारा - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के भूतपूर्व अल्पबचत मंत्री श्री प्रकाश छाजेड़ द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा झाबुआ के तहसील क्षेत्र में एक करोड़ से ज्यादा के बीमे करवा कर प्रथम करोड़पति अभिकर्ता बनने निमित्त हार्दिक बधाई!

राष्ट्रसंत परमश्रद्धेय आचार्य श्री का नवसारी में भव्य स्वागत

नवसारी : श्री त्रिस्तुतिक श्वेताम्बर जैन संघ - नवसारी की विनंती को मानकर प. पू. राष्ट्रसंत गुरुदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का अपने शिष्य परिवार के साथ शनिवार दि. ४/७/९२ को प्रातः ८.३० बजे मंगल पदार्पण हुआ। सामैया, गुरुवंदन, गहुंली के पश्चात् आचार्य श्री चिन्तामणी जैन मन्दिर - मधुमती पधारे। व्याख्यान के पश्चात् श्रीफल की प्रभावना हुयी। पूज्य श्री की निश्रा मं त्रिस्तुतिक संघ की स्थापना होकर कार्यकारिणी समिति की रचना की गयी। रात्रि में ज्ञानाचार्य के बाद प्रातः आदिनाथ जैन मंदिर के नूतन उपाश्रय में ट्रस्टियों के आग्रह से पधारे। मंगलाचरण के बाद दोपहर मे जाहिर प्रवचन रखा गया। पूज्य श्री के साथ ही आचार्य श्री प्रमोदसागरसूरिजी का भी प्रवचन हुआ।

पूज्य श्री की निश्रा में रात्रि में जितना जल्दी संभव हो गुरु मन्दिर बनाने का निर्णय लिया गया। सोमवार को प्रातः पूज्य श्री ने सुरत की ओर विहार किया।

- प्रेषक - श्री जयन्तिभाई एन. वोरा (नवसारी)

पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञा से

चातुर्मासिक आराधनाएं निम्नानुसार है -

चातुर्मासी चौदस.....	आषाढ सुदी १४ सोमवार १३-७-९२
मासीघर.....	श्रावण सुदी ४ रविवार २-८-९२
पक्षघर.....	श्रावण वदी ४ सोमवार १७-८-९२
अट्टाई घर.....	पर्युषण पर्व प्रारम्भ श्रावण वद ११ सोमवार २४-८-९२
लघुकल्प.....	श्रावण वदी १३ बुधवार २६-८-९२
बड़ाकल्प.....	श्रावण वदी १४ गुरुवार २७-८-९२
महावीर जन्मवांचन.....	श्रावण वदी ३० शुक्रवार २८-८-९२
तेलाघर.....	भाद्रव सुदी २ शनिवार २९-८-९२
संवत्सरी महापर्व.....	भाद्रव सुदी ४ सोमवार ३१-८-९२
शाश्वती नवपदजी ओली.....	आसोज सुदी ७ से १५ दि. ३-१०-९२ से १३-७-९२
प्रभु महावीर निर्वाण कल्याणक.....	आसोज वदी ३० रविवार २५-१०-९२
नूतन वर्षारम्भ गौतम स्वामी केवलज्ञान.....	कार्तिक सुदी ०१ सोमवार २९-१०-९२
ज्ञानपंचमी.....	कार्तिक सुदी ०५ शुक्रवार ३०-१०-९२
चातुर्मास चौदस.....	कार्तिक सुदी १४ सोमवार ९-११-९२

भेंट मंगवाये

मुनिराजश्री जयानन्दविजयजी द्वारा लिखीत

१. सम्यग्दर्शन २. वाचक यशवाणी ३. श्रीचम्पकमालाचारित्र

पोस्टेज खर्च हेतु ३/- तीन रुपये के पोस्टेज स्टैम्प

शाश्वतधर्म कार्यालय, जमलीनाकर, थाने- ४००६०१ के पते पर

भेजने से भेंट भेजी जायेगी।

परिषद के प्रांगण से

राष्ट्रीय अध्यक्ष की ओर से

प्रिय परिषद बन्धुगण,
सादर जयजिनेन्द्र !



आषाढ शुक्ला चतुर्दशी से चातुर्मास काल प्रारम्भ होने जा रहा है। जैन संस्कृति में चातुर्मास की परम्परा धर्मारोपण तथा आत्म कल्याण की प्रवृत्तियों को जीवन में ग्रहण करने के लिए है। इस काल में पूज्य आचार्य देव, मुनिराज गण तथा साध्वीजी महाराज एक स्थान पर स्थिरता करते हैं अतएव जहां उनके चातुर्मास होते हैं, वहां के संघ उनके सानिध्य में संवेग वर्धक धर्म क्रियाएं कर अपना जीवन सफल बनाते हैं। जहां पर ऐसा संयोग नहीं है, वहां पर भी संघ में धर्माक्रियाओं को परम्परागत रूप से सम्पन्न कर जीवन कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। इस चातुर्मास काल में प्रत्येक परिषद बन्धु का कर्तव्य है कि वह जीवन में अधिक से अधिक व्रत तथा नियम धारण कर अपने जीवन को आराधनामय बनाने का प्रयास करें। रात्री भोजन निषेध, हराशाक त्याग, प्रतिदिन नवकार मंत्र की माला की गणना, अष्टमी, चतुर्दशी व्रत रखना जैसे नियमों का पालन यथाशक्ति करें। जो अधिक नहीं कर पाते वे कम से कम एक नियम तो ग्रहण करें ही !

इस काल में पर्व सम्राट पर्वधिाराज पर्युषण पर्व भी उत्तुंग आराधना का अवसर देते हैं। आठ दिनों तक खूब धर्म ध्यान में प्रवृत्त रहकर हम अपनी आत्मोन्नति करें। पर्युषण के काल का उपयोग सामाजिक वाद विवादों में न हो, इसकी सतर्कता रखें। कई स्थानों पर सामाजिक विवाद इसी समय उभर आते हैं। ऐसे मनोविज्ञान को हतोत्साहित करना चाहिए। परिषद का प्रथम उद्देश्य समाज संगठन है। हमें समाज में एकता तथा संगठन का वातावरण निर्मित करना है। पूज्य राष्ट्र संत जैनाचार्यश्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज का भी उद्घोष है - “संगठन में ही शक्ति है। जिस समाज में संगठन नहीं है, यह समाज कभी विकास नहीं कर सकता। परिषद समाज संगठन के लिए निरंतर गतिशील रह कर अपने उद्देश्यों की सही प्राप्ति कर सकती है।” चातुर्मास काल में हम परिषद के उद्देश्यों के अनुरूप अधिक से अधिक गतिविधियां कर समाज को समुन्नत व परिषद को शक्तिशाली बनाएं।



सेवन्तीलाल एम. मोरखिया

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

राजगढ़ में 'प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन'

राजगढ़ : अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में परिषद के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु एक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन ता. १५ जुलाई से १७ जुलाई तक परिषद भवन राजगढ़ में आयोजित किया गया जिसके संयोजक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री - श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा - मन्दसौर, प्रायोजक श्री मोतीलालजी हरण - राजगढ़ एवं मुख्यवक्ता श्री सौधर्म वृहत्पागच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर संघ के राष्ट्रीय महामंत्री - श्री भंवरलालजी छाजेड़ - नीमच थे। शिविर का संचालन शिविर के तथा परिषद के संगठन मंत्री राजगढ़ निवासी श्री कांतिलालजी भंडारी ने किया।

प्रथम दिवस सर्वप्रथम गुरुदेव के चित्र के सन्मुख दीप प्रज्वलित कर श्री मोतीलालजी हरण ने शिविर का शुभारंभ किया। श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने शिविर की आवश्यकता पर बल देते हुए विषय निर्धारित किया कि "परिषद का कार्यकर्ता कैसा हो?" इस पर बाहर से आये हुए कार्यकर्ताओं में से १०/१५ ने अपने-अपने संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित विचार प्रकट किये। अलग-अलग समूहों में सदस्यों ने अलग-अलग विषयों पर लेखी में प्रतिवेदन तैयार किए। कार्यकर्ताओं ने काफी उत्साह एवं लगन के साथ अपने-अपने विचार प्रकट/संलग्न किये। शाम को सभी शिविरार्थी तीर्थदर्शन हेतु मोहनखेड़ा गए। रात्री में ज्ञानवर्धक मनोरंजन के साथ प्रश्नमंच का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कई महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

दूसरे दिन सुबह सभी शिविरार्थी मंदिरों में सामूहिक रूप से दर्शन तथा चैत्यवंदन करने गये। इसके बाद सुबह के सत्र में श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा द्वारा परिषद के इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कई महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करवाई गईं। उन्होंने बताया कि परिषद तथा (समाज) संघ अलग-अलग नहीं है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। परिषद के द्वारा जनकल्याण के कई कार्य किए गये एवं किये जा रहे हैं वर्तमान आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. ने अपने परिभ्रमण के दौरान नगरों व गांवों में नवयुवकों को समाज सेवा के लिए आन्धान किया तथा हर जगह परिषद की शाखाओं की स्थापना की और परिषद के मूल उद्देश्यों समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा, समाज सुधार एवं आर्थिक विकास की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए समाज सेवा पर बल दिया जिसके फलस्वरूप आज परिषद के कार्यकर्ता एवं अधिकारी गण इस ओर अग्रसर हुए तथा हो रहे हैं। श्री छाजेड़जी ने अपने उद्बोधन में बहुत ही व्यथित स्वर में आज की सामाजिक कुरितियों का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि बरात के भोंडे नाच व महिलाओं द्वारा बाजेवालों को अपने हाथ से नोट झपटने का आन्धान करना बुरी एवं हास्यास्पद बात है। इस कुप्रथा को तुरन्त बन्द करने के लिए उन्होंने युवकों को बताया तथा आन्धान करते हुए प्रेरणा दी कि समाज सेवा के लिए कुछ ठोस एवं रचनात्मक कार्य सदस्यों को करते रहना है। आगे आपने कहा कि परिषद के कार्यकर्ता को नियमित रूप से ५/६ नियमों का तों पूर्ण पालन करना ही चाहिए। दर्शन, पूजन आदि नियमित करना चाहिये। श्रद्धा, विनय एवं विवेक उसमें होना चाहिए। नशीली वस्तुओं से दूर रहे रात्री भोजन का त्याग करें। अनुशासन में रहे और अनुशासन रखे। स्वयं को सुधारें।

तीसरे दिन सामूहिक रूप से मन्दिर दर्शन के पश्चात कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। उपरोक्त महानुभावों द्वारा सभी शिविरार्थियों को बहुत ही सुन्दर उद्बोधन दिया गया। इस शिविर की उपलब्धियों पर

सदस्यों द्वारा अपने-अपने विचार प्रकट किये गये। शिविर समापन समारोह के अवसर पर राजगढ़ श्री संघ के वरिष्ठ एवं प्रतिष्ठित महानुभाव श्री बाफनाजी के द्वारा मोतीलालजी हरण को साफा बंधवाकर बहुमान किया गया। श्री छाजेड़जी एवम् श्री सुरेन्द्रजी लोढा का भी बहुमान किया गया।

शिविरार्थियों के लिए तीनों दिन चाय, नाश्ता एवं भोजन की आदि की बहुत ही उत्तम व्यवस्था सुन्दर और व्यवस्थित रूप से श्री मोतीलालजी हरण के द्वारा की गई थी। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से इस सेवा का लाभ लिया। शिविर में १४ शाखाओं के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सभी शिविरार्थियों को प्रशंसापत्र प्रदान किये गये तथा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखिया बम्बई के द्वारा प्रदत्त स्टील का एक-एक डिब्बा सभी को प्रभावना के रूप में भेंट किया गया। राजगढ़ परिषद की ओर से संघपूजा की गई।

परस्पर क्षमा याचना का आदान प्रदान आभार प्रदर्शन एवं जयघोष के साथ अगलें शिविर में फिर मिलने की आशा के साथ आनन्दपूर्ण वातावरण में इस त्रिदिवसीय शिक्षण शिविर का समापन सम्पन्न हुआ।

— मोहनलाल जैन, दलौदा

जैनाचार्य श्री को ग्रंथ भेंट

जमुनिया कला : यहां चातुर्मास स्थापना के भव्य समारोह में दिगम्बर जैनाचार्य श्री कल्याणसागरजी महाराज को श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ की एक प्रति ग्रंथ के प्रधान सम्पादक सुरेन्द्रजी लोढा द्वारा अर्पित की गई। समारोह में कोई बीस हजार धर्मावलम्बी उपस्थित थे। ग्रंथ की एक प्रति जिला कलेक्टर — श्री यशपालकुमार, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष — श्री सम्पतलालजी पटवा तथा विद्वान श्री विनयकुमारजी जैन (फिरोजाबाद) को भी भेंट की गई। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने कहा कि महापुरुषों के जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। पूज्य श्री की निश्रा में २७/९/९२ को २७, २७, २७, २६७ नवकार जाप किये जाने का कार्यक्रम चल रहा है।

परिषद के चुनाव

लोनावला (महाराष्ट्र) : स्थानिय परिषद शाखा के चुनाव में शा. गणेशमलजी फूलचन्दजी फुलफगर - अध्यक्ष; शा. अमीचंदजी हंजारीमलजी पालरेशा - उपाध्यक्ष; शा. पारसमलजी वालचंदजी मुथा - सेक्रेट्री; शा. मांगीलालजी गणेशमलजी नागोत्रा - कोषाध्यक्ष तथा केन्द्रीय सदस्य शा. शंकरलालजी चुनीलालजी फुलफगर शा. शेषमलजी रतनाजी नागोत्रा सोलंकी, शा. शांतिलालजी जवेरचंदजी पालरेशा, शा. हीराचंदजी नरसालालजी फुलफगर, शा. गणेशमलजी जवानमलजी तथा शा. अमृतलाल चुनीलालजी निर्वाचित किए गए।

भाटपचलाना : यहां इस वर्ष परिषद के नये चुनाव परिषद के संरक्षक श्री बसंतीलालजी कटलेचा के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुए जो इस प्रकार है :-

अध्यक्ष : श्री राजकुमार गिरिया; उपाध्यक्ष : श्री जयंतिलाल बुपक्या; सचिव : श्री पंकज मेहता; कोषाध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओरा; सहसचिव : श्री संजय गिरिया; प्रचारमंत्री : श्री संजय रून्वाल; कार्यालयमंत्री : श्री राजेश गिरिया; संगठनमंत्री : श्री राजकुमार कटलेचा

इन्दौर : शाखा परिषद इन्दौर के चुनाव केन्द्रीय प्रतिनिधी श्री एस. एम. संघवी की अध्यक्षता में निम्नानुसार सर्वसम्मति से सम्पन्न हुए।

अध्यक्ष : श्री यशवन्तकुमारजी बोराणा; **कोषाध्यक्ष :** श्री सुभाष कुमारजी जैन;
सचिव : श्री जयकुमारजी कोठारी एवं **प्रचारमंत्री श्री सुरेशकुमारजी जैन (बागवाला)।**

सूरत : स्थानीय महिला परिषद शाखा का गठन पू. साध्वी श्री शशिकलाश्रीजी म.सा. एवं अविचलदृष्टाश्रीजी के सानिध्य एवं डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय के निर्देशन में किया गया जिसमें निम्नानुसार सर्वानुमती से पदाधिकारी नियुक्त की गई।

अध्यक्ष : श्रीमती सविताबहन अदाणी, **मंत्री :** मंजुबहन शाह, **कोषाध्यक्ष :** चन्द्रिकाबहन धरू एवं **प्रचारमंत्री :** सरोजबहन पूनमचंद शाह।

परिषद राष्ट्रीय कार्यसमिती की बैठक

सूरत : पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में गत ९ जुलाई को पूज्य श्री के चातुर्मास प्रवेश के शुभ दिन दोपहर को अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की राष्ट्रीय कार्यसमिती की बैठक केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें परिषद शाखा सूरत के कार्यकर्ता भी भारी संख्या में उपस्थित थे। बैठक का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा ने किया।

बैठक को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. ने कहा कि प्रत्येक ग्राम में एक सक्षम परिवार एक-एक स्वधर्मी भाई को ऊंचा उठाने के लिये कोई भी कार्य करे तो काफी काम हो सकता है। कई परिवार सक्षम बन सकते हैं।

बैठक को अ. भा. श्री सौधर्मत्यागच्छीय श्वेताम्बर जैन संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप, महामंत्री श्री भँवरलालजी छाजेड़, परिषद के उपाध्यक्ष - श्री मीठालालजी हीराणी, महामंत्री - श्री नगीनचंदभाई देसाई, संगठनमंत्री - श्री कांतिलालजी भंडारी, अल्पबचत मंत्री श्री जवाहरलालजी जैन, पूर्व प्रचारमंत्री - श्री भीखमचंदजी आजाद, श्री प्रकाशजी खीमावत, सूरत शाखा अध्यक्ष - श्री भूपेन्द्रभाई सी. जैन आदि ने भी सम्बोधित किया।

केन्द्रीय शुल्क भेजें

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री - श्री सुरेन्द्र लोढा ने बताया कि परिषद का वित्तीय वर्ष १९९२-९३ अप्रैल माह से प्रारंभ हो गया है, जिन परिषद शाखाओं ने एक रू. प्रति सदस्य के हिसाब से शुल्क नहीं भेजा है, वे तत्काल भिजवाएं ताकि उन्हें इस वर्ष के मान्यता पत्र भिजवाएं जा सकें।

पत्राचार स्पर्धा होगी

श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की ओर से राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक 'णमोकार मंत्र' पर पत्राचार स्पर्धा का आयोजन किया जा रहा है। इसके नियम तथा जानकारी शीघ्र ही घोषित किए जा रहे हैं।

'परिषद की प्रगति समाज की प्रगति है' - आचार्य यतीन्द्रसूरि

समाचार - सार

दिल्ली - केलादेवी सुमतिप्रसाद ट्रस्ट दिल्ली द्वारा ६-७-८ अक्टूबर १२ को गणोकार मंत्र के वैज्ञानिक पक्ष पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है इस अवसर पर के. सी. टी. पुरस्कार ११ डॉ. रविन्द्रकुमार जैन डी. लिट - मद्रास को दिया जाएगा। के. सी. टी. पुरस्कार १२ हेतु विद्वानों से प्रस्ताव आमंत्रित है। सम्पर्क सूत्र - मेघराज जैन, अरिहंत इन्टर नेशनल २३९ गली कुंजस दरीबा - दिल्ली - ११०००६

धानेरा - पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीजी श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा एवं निश्रा में धानेरा में अषाढ़ वदी ९-१०-११ को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी भगवान के अष्टम की आराधना सम्पन्न हुई। जिसके पारणे का लाभ शेट श्री सेरमलजी उकजी भाई ने लिया।

लोनावला - यहां श्री जैन नवयुवक संगीत मंडल लोनावला के वर्ष १९९२-९२ के लिये चुनाव हुए जिसमें अध्यक्ष श्री सुनिलकुमार लुणावत, उपाध्यक्ष - श्री धनराजजी फुलफगर, कोषाध्याक्ष - श्री हीराचंदजी फूलफगर, संगीत प्रमुख - श्री जयंतीलालजी पाल्नेशा, सलाहकार श्री शंकरलालजी फुलफगर निर्वाचित किये गए।

रानापुर - पू. साध्वीजी श्री अनंतगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सांकली तेले (अष्टम) का आयोजन चल रहा है। पू. साध्वी श्री समकितगुणाश्रीजी म.सा. के १६ उपवास की तपस्या का पारणा १ अगस्त को हुआ।

भीवन्डी - पू. साध्वीश्री दिनमणीश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में तपाराधना जाप शिबिर आदि धार्मिक कार्यक्रम सानन्द चल रहे हैं।

हुबली - राजस्थान युथ फेडरेशन हुबली की

ओर से प्रथम बार राजस्थानी भाईयों के टेलिफोन एवं पते की जानकारी युक्त एक निर्देशिका का प्रकाशन 'गागर में सागर' नाम से किया जा रहा है। निर्देशिका का सम्पादन प्रवीण बाफना कर रहे हैं।

बम्बई - श्री आहोर जैन चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई द्वारा आहोर तेहसील के निर्धन छात्र एवं छात्राओं को निःशुल्क नोट बुक का वितरण किया गया। श्री आहोर जैन सेवा संघ बम्बई की कार्यकारिणी की मिटींग शा. ओटमलजी जैरूपजी के निवास पर दि. १९-७ को सम्पन्न हुई जिसमें समाज सुधारक कार्य हेतु एवं मेडिकल सहायता फन्ड हेतु विचार विमर्ष किया गया तथा आगामी स्नेह सम्मेलन आयोजित करने सम्बन्धी निर्णय लिये गए।

बैंगलोर - पू. साध्वी श्री मुक्तिश्रीजी म. सा. के चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर आयम्बिल तप की आराधना की गई एवं चातुर्मास काल में प्रति रविवार को आध्यात्मिक ज्ञानशिबिर का आयोजन किये जाने हेतु निर्णय लिया गया।

बैंगलोर - पू. साध्वी श्री मुक्तिश्रीजी म. सा की निश्रा में श्री अरिहंत जैन प्राणी कल्याण संस्था की ओर से विगत दस वर्षों की भांति इस वर्ष भी २५० छात्रों को छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम विधानसभा सदस्य श्री पेरिकल एम. मलप्पा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के सचिव श्री एस. सयंगी एवं उपसचिव श्री अब्दुलअलीम भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर स्थानीय गणेश स्कुल की ६० वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में स्कुल के २०० बच्चों का एक विशाल मेला आयोजित किया गया जिसमें पू. साध्वीजी ने सरकार द्वारा बच्चों को स्कुलों में दोपहर के नाश्ते में अंडा दिये जाने का तीव्र

विरोध किया एवं भारत के भावी नागरिकों को शाकाहार का पालन करने की सलाह दी। स्कूल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये गये। कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों का संस्था की ओर से साफा एवं हार से स्वागत किया गया। समारोह का आयोजन राजेन्द्र पेपर्स (आहोर) एवं स्कुली बच्चों आदि के लिये स्वल्पाहार का आयोजन में मेसूर सेल्स कार्पोरेशन के सौजन्य से किया गया।

(फ्लेटे ट्यूबल ट्रस्ट) प्रषक - देवकुमार के. जैन
जयपुर - श्री सूरजमल प्रेमकुमारी मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट अलवर एवं भगवान महावीर विकलांग सहायता समिती - जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय एस.एम.एस. हॉस्पिटल में ७ जून को विकलांग दिवस एवं श्री डी. आर. मेहता के ५७ वें जन्म दिन के उपलक्ष में एक विशाल विकलांग सहायता समारोह का आयोजन कपड़ामंत्री श्री अशोक गेहलोत के मुख्य आतिथ्य एवं श्री कल्याणमल लोढ़ा की अध्यक्षता में किया गया। समारोह का उद्घाटन श्री मोफतराज मुणोत ने किया। इस अवसर पर श्री डी. आर. मेहता को उनकी प्राणीमात्र के लिये सतत सेवा के लिये सर्वोच्च उपाधि 'प्राणीमित्र' से अलंकृत किया गया।

विलेपार्ले - श्री चंदनबाला कन्या शिक्षण शिबिर (१५ वीं व १६ वीं वर्ष) पू. साध्वी म. सा. (कुमार श्रमण) आदि ठाणा एवं पू. साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में दि. १५-७-९२ को श्री घेलाभाई करमचंद जैन सेनेटोरियम ट्रस्ट की ओर से आयोजित किया गया। शिबिर चातुर्मास काल में प्रति शनिवार को होगी।

कांदिवली - पू. साध्वीजी श्री सौम्ययशाश्रीजी आदि ठाणा ५ की निश्रा में अद्भुत, क्षीरसमुद्रतप आदि सामुहिक आराधना, रविवारीय महिला धार्मिक शिबिर आदि विविध कार्यक्रम चल रहे हैं।

मोहने (कल्याण) - आषाढ सुदि ७ को साध्वीश्री पुष्पाश्रीजी आदि ठाणा का मोहने नगर में चातुर्मासार्थ प्रवेश धूमधाम से हुआ।

पुणे (महाराष्ट्र) - आचार्य श्री यशोभद्रसूरिजी म. सा. चातुर्मासार्थ गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिर, पुणे - २, में बिराज रहे हैं। व्याख्यान का समय सुबह ९ बजे से १० बजे तक।

चेम्बुर - चेम्बुर आदिनाथ जैन मन्दिर में श्री पार्श्वचन्द्रगच्छीय साध्वी श्री उंकारश्रीजी व पू. मुनिश्री भव्यानन्दजी म. सा. का चातुर्मासार्थ प्रवेश आषाढ सुदि १३ सात्रदसोह्लास हुआ।

नागौर (राजस्थान) - श्री पार्श्वचन्द्रगच्छीय पू. साध्वी श्री उंकारजी की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी श्री पदोखाश्रीजी चातुर्मासार्थ विराजमान हैं। व्याख्यान सुबह ९ से १० तक।

बम्बई - दिल्ली के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रमेशचन्द्र जैन भारत जैन महामंडल के ४७ वें अध्यक्ष २८ जुलाई को सम्पन्न मंडल की कार्यकारिणी की बैठक में सर्वानुमति से निर्वाचित किये गए हैं। अक्टुबर-नवम्बर में दिल्ली में मंडल के अधिवेशन में श्री जैन विधिवत् कार्यभार ग्रहण करेंगे।

मद्रास-पू. साध्वी श्री महेन्द्रश्रीजी म. सा. की निश्रा एवं सानिध्य में श्री नमस्कार महामंत्र की आराधना एवं चातुर्मास आराधना का कार्यक्रम सानन्द हे रहा है।

रतलाम - रतलाम जैन श्योसलगुप (ग्रेटर) का गठन मुख्य अतिथी श्री चैतन्यजी काश्यप एवं विशिष्ट अतिथी श्री जी. एस. सिंघवी (दिल्ली) के सानिध्य में किया गया जिसमें श्री विनोद कुमार लुनिया अध्यक्ष एवं श्री अजीत नाहर सचिव नियुक्त किए गए। गुप के माध्यम से समस्त सदस्यों के साथ समाज सेवा में रत रहने का संकल्प करते हुए जैन परिवारों के २१ निर्धन बच्चों को पूरे वर्ष शैक्षणिक सुविधाएं व सदस्यों के माध्यम से नगर के १००० लोगों को नेत्रदान हेतु प्रेरित कर संकल्प पत्र भरणों

की घोषणा श्री लुनिया द्वारा की गई।

डीसा - पू. आचार्य श्री स्व. रामचंद्रसूरिजी म. सा. के समुदाय के पू. आचार्य श्री महोदयसूरिजी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मासार्थ नगर प्रवेश १-७-९२ को सानन्द सम्पन्न हुआ।

पुणे - श्रीमती गजराबाई सरदारमलजी बोहरा (पालीवाला) के समाधीपूर्वक स्वर्गवास निमित्ते श्री मोहनलालजी (भैरव मेटल इंजीनीयरींग वर्क्स) द्वारा श्री सिद्धचक्रमहापूजन सह जिनेन्द्र भक्ति स्वरूप पंचान्हिका महोत्सव दि. ५ अगस्त से ९ अगस्त तक भवानी पेठ - पुणे में आयोजित किया गया। (मनमोहन पार्श्वनाथ मंदिर) दि. ९ अगस्त को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

महिदपुर - पू. साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी म. सा. द्वारा प्रतिदिन धान्य चारित्र एवं आत्म तत्वविचार पर व्याख्यान दिया जा रहा है।

लोणावला - दि. ६/८/९२ को शा. सूरजमलजी हंजारीमलजी ओसवाल (शिवगंज निवासी) सर्वानुमति से श्री राजस्थान जैन संघ के अध्यक्ष बनाये गये।

गाडरवाड़ा - पू. मुनिश्री तरूणसागरजी आदि ठाणा की प्रेरणा एवं सानिध्य में पांच दिवसिय आध्यात्मिक ज्ञान शिबिर का आयोजन किया गया जिसमें २०० शिबिरार्थियों ने भाग लिया।

इन्दौर - अ. भा. जैन युवक युवती परिचय एवं विधवा विधुर परित्यक्ता सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन दि. २-३ एवं ४ अक्टूबर १९९२ को रविन्द्र नाट्यगृह इन्दौर में जैन श्योसल ग्रुप, ४ - कल्याण विश्रान्तिगृह, यशवंत टाकीज के पास, इन्दौर द्वारा किया जा रहा है। इच्छुक जन उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

काकीनाड़ा - पू. मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी म. सा. के ९० वीं वर्धमान तप की ओलीजी के पारणा निमित्त सामूहिक अष्टम तप का

आयोजन २-८-९२ से ५-८-९२ तक किया गया। इसके अतिरिक्त सिद्धितप, सांखली अष्टम आदि अन्य तपश्चर्याओं का कार्यक्रम चल रहा है। पू. मुनिश्री की निश्रा में ही एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में जैन धर्म के पांचों सिद्धान्तों पर विशेष चर्चा की एवं हैदराबाद के निकट मेदक जिले में स्थापित होनेवाले कत्तलखाने के विरोध स्वरूप पत्रकारों से अपील की एवं केन्द्रिय सरकार की अहिंसाविरोधी नितियों का खण्डन किया।

बम्बई (प्रार्थनासमाज) - पू. आचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में स्व. पू. आचार्य श्री लब्धिसूरीश्वरजी म. सा. की ३१ वीं पूण्यतिथि निमित्ते नवान्हिका महोत्सव का आयोजन स्थानीय चन्द्रप्रभु जिनालय में दि. २८/९/९२ से ६/८/९२ तक किया गया।

भीनमाल - पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी आदिठाणा की निश्रा में श्रीमती मंजुलादेवी पृथ्वीराजजी कावेडी ने मासक्षमण (३० उपवास) की महान् तपश्चर्या निमित्त १० अगस्त को जुलूस रात्रि-भावना एवं ११ अगस्त को पारणा व प्रीतिभोज आयोजित किया गया।

राणापुर - साध्वीजी श्री अनन्तगुणाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में साध्वीजी श्री समकितगुणाश्रीजी के १६ उपवास की तपश्चर्या निमित्त २७ जुलाई से १ अगस्त तक पंचान्हिका महोत्सव व अंतिम दिन श्री संघ की ओर से स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया।

धार - साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी आदि ठाणा के चातुर्मास में व्याख्यान में वैराग्यशतक व मलयसुन्दरी चरित्र चल रहा है। श्रावण सुदि ८ से १५ तक नवकार आराधना का आयोजन किया गया।



ध्यात्रवृत्ति प्रदान करते हुए विधायक श्री येरेकल एवं संस्था अध्यक्ष श्री देवकुमार. के. जैन. पिछे खडे हैं मंत्री श्री तेजराज जैन.
समाचार पृष्ठ 55

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

- ११००/- श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ सूत द्वारा पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश एवं श्री राजराजेन्द्र जैन ज्ञानमंदिर का उदघाटन निमित्ते....
- ६००/- पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की प्रेरणा एवं निश्रा में जालोर में आयोजित श्री राजेन्द्र जयन्त सम्यग् शिक्षण शिबिर निमित्ते....
- ५०/- पू. साध्वीजी श्री मुक्ति म. सा. आदि ठाणा के बेंगलोर चातुर्मासार्थ प्रवेश निमित्ते....
- १०१/- शा. पोपटलाल पूनमचंद सवाणी फर्म - (जयंत वस्त्र भण्डार) धानेरा निवासी की ओर से स्व. श्रीमती दिपिका बहन रजनीकांत सवाणी की पुण्य स्मृति निमित्ते....
- १०१/- कोरटा निवासी स्व. शा. नरसाजी फुलाजी फुलफगर की पुण्य स्मृति में पुत्र कुन्दनमल शांतिलाल एवं हिराचंद लोनावला की ओर से...
- २०१/- श्री प्रकाशचंद्रजी छाजेड़, पारा द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा झाबुआ के झाबुआ तेहसील क्षेत्र में प्रथम करोड़पति अभिकर्ता बनने निमित्त...
- २५१/- मन्दसौर निवासी श्री राजमलजी लोढ़ा की पौत्री एवं परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा की सुपुत्री चि. नीता का शुभविवाह भोपाल निवासी श्री कांतिलालजी संघवी के सुपुत्र चि. मनोजकुमारजी के साथ सम्पन्न हुआ इस उपलक्ष में...

આત્મસંયમયોગ

ગુણવંત શાહ

યોગ એટલે પરમ તત્ત્વ સાથેનું અનુસંધાન

‘યોગ’ શબ્દ યુજ્-ધાતુ પરથી આવ્યો છે, જેનો અર્થ છે, ‘જોડવું’ આ માટે સતત મથનારો તે યોગી. જ્ઞાનયોગી હોય કે કર્મયોગી, બંનેની મથામણ પરમ તત્ત્વ સાથેના અનુસંધાનની. ધ્યાની જરૂરત બંનેને રહે છે. આત્મભાવ કેળવવા માટે યોગ જરૂરી, યોગાવસ્થા માટે ધ્યાન જરૂરી. ધ્યાન એટલે મનની મોટરગાડીને ન્યુટ્રલ ગિયરમાં મૂકવી તે. સમત્વબુદ્ધિ વગર એ અશક્ય. યોગીની જે મથામણ હોય તે સાવ ઢંગધડા વગરની ન હોઈ શકે. એની તૈયારીરૂપે પાયાની શિસ્ત તો પાળવી જ પડે, કેટલાંક પગથિયાં અનુસરવાં પડે. એ પગથિયાં વારાફરતી ટૂંકમાં જોઈ લઈએ :

(૧) એકાંત : સૌથી પહેલી વાત તે એકાંત. ભીડ અને ઘોંઘાટમાં આપણો ‘સ્વ’ સતત ખતમ થતો રહે છે. આજે આપણાં શહેરોમાં એકાંત દોહાવું બની ગયું છે. મહાત્મા થોરો એકાંતને ‘પરમ મિત્ર’ ગણતો. પોતાની જાત સાથેનો પરિચય એકાંત વગર શક્ય નથી.

(૨) આશામુક્તિ : માણસો એક આશા પરથી બીજી આશા પર ઠેકડો મારતા રહે છે. શંકરાચાર્ય એને કહે છે, ‘આશાપાશ’ (પાશ’ એટલે ફાંસો). આશા બાંધે છે. યોગી બંધનમુક્ત થવા ઈચ્છે છે. એની શરૂઆત આશા, અપેક્ષા, મહત્ત્વાકાંક્ષા છોડવાથી થાય. કોઈને માલદાર થવાની આશા, કોઈને પરદેશ જવાની આશા અને કોઈને નોકરીમાં બઢતૌ મળે તેની આશા. એક આશા પૂરી થાય એટલે બીજી જન્મી જ જાણવી.

(૩) સાતત્ય : માણસ સ્વભાવે આરંભશૂરો હોય છે. સવારમાં ફરવા જવાનો સંકલ્પ પાણ થોડા દિવસમાં તૂટી પડે છે. રોજ જવાની જગ્યાએ પછી કોઈ કોઈ દિવસ રહી જાય છે અને પછી ધીમે રહીને ફરવા સાવ છૂટી જાય છે. આથી તો વિનોબાએ આઠમા અધ્યાયને ‘સાતત્યયોગ’ એવું મથાલું આપ્યું છે. સાધનામાં સાતત્યનું મહત્ત્વ ઘણું છે. શિવલિંગ પર થતો અભિષેક, એ સાતત્યકાવ્ય છે. જલાધારી એકસસામટી ઠલવાઈ જાય તો તેને અભિષેક ન કહેવાય.

(૪) ચિત્તવૃત્તિનિરોધ : આ વાક્યખંડ પતંજલિ તરફથી આપણને મળેલો છે. યોગની તો એ વ્યાખ્યા જ બની ગયો. યોગ એટલે ચિત્તવૃત્તિનો નિરોધ, ચિત્તની એકાગ્રતા વગર યોગસાધનામાં આગળ ન વધાય, ક્યારેક ગાયની પાછળ ગોવાળિયો હાંડિ એમ આપણું મન જ્યાં ત્યાં ભટકવાનો પ્રયોગ કરવા જેવો છે. પાંચ મિનિટમાં તો મન આપણને ક્યાંનું ક્યાં લઈ જઈ શકે તે સમજશે. પણ ગોવાળિયાએ સતત યાદ રાખવાનું છે, કે હું ગાય નથી. આપણે મનના ખેલ શાક્ષીભાવે જોઈએ તે ઠીક, પણ પછી ચિત્તને મનની રખડપટ્ટીમાંથી હટાવી જઈને એકાગ્ર કરવાનું છે; ચિત્તવૃત્તિને ધ્યેય તરફ વાળવાની છે. મનને અ-મન કરવાનું છે.

(૫) અપરિચ્છદ : આપણા લોભની કોઈ સીમા નથી હોતી. ખાધેપીધે સુખી

એવા માણસો પાણ એકઠું કર્યે જ જાય છે. ઘરનો સામાન વધે છે. બધું ઓછું પડે અને સંતોષ જ ન થાય એવી વૃત્તિને લીધે માણસ વચ્ચેનામાંથી ઊંચે જ નથી આવતો. લગભગ ઘાણીના બળદની ઢબે એ રોજબરોજનાં કામો કરતો રહે છે. એમાંથી રોજિંદી ઘટમાળ (Routinization) જન્મે છે, જેમાં જીવન ખલાસ થાય છે. આજનો માણસ સો વર્ષ જીવે તોય એનું જીવન એક દિવસની ઝેરોક્સ નકલ જેવું હોય છે. નથી એમાં કોઈ તાજગી કે નથી કોઈ સર્જકતાનો આનંદ. ખાવા-પીવાની, રહેવા-ફરવાની, પહેરવા-ઓઢવાની જરૂરિયાતો પૂરી થાય પછી એણે સાઈકલનાં પેડલ મારવાનું બંધ કરવું જોઈએ. ઘણા માણસો છેલ્લી ઘડી સુધી પેડલ માર માર કરે છે. જીવનનો આનંદ દૂર રહી જાય છે. તેથી બેર્નોઈ રસેલે કહેલું : The more I have, the less I am. કાકાસાહેબે આ વાક્યનું અનુવાદ આ રીતે કર્યો : મારી મતા જેમ જેમ વધતી જાય છે તેમ મારી સત્-તા ઘટતી જાય છે જીવન દરમિયાન ઘરમાં એટલો બધો સામાન એકઠો થતો રહે છે કે, માણસ પાણ લગભગ એક દાગીનો બની રહે છે.

(૬) આસન : ધ્યાન માટે ગમે ત્યાં ન બેસાય, એકંદરે સ્વચ્છ-પવિત્ર સ્થાનમાં બહુ ઊંચું નહિ અને બહુ નીચું નહિ એવું, દર્ભ, કે વચ્ચેની ગડીવાલું સ્થિર આસન હોવું જોઈએ. એકાગ્રતા માટે સુખાસનમાં બેસવું સારું. પીડા થાય કે તાણ રહે એવી રીતે બેસવાની જરૂર નથી. ઘણા લોકો પલાંઠી નથી વાળી સકતા, ઘણા પચાસન નથી વાળી શકતા. અભ્યાસથી ફાવી જાય તો ઠીક, નહિ તો શરીર તાણરહિત રહે એ પ્રમાણે પોતે જ પોતાની રીતે બેસવું. વળી દેહ, માથું અને ડોક સીધાં રાખવાં, સ્થિરતા પ્રાપ્ત કરવી અને આસપાસ ન જોતાં નાસિકાના અગ્રભાગ પર નજર ઠેરવવી. જે સ્થિર હોય અને સુખેથી કરી શકાતું હોય તે આસન. સ્થિરસુખમાસનમ્. આમ આસનમાં શરીરને અસુખ રહે એવી સ્થિતિમાં ન જ રાખવું અને હાંચિકે પાણ ન બેસવું.

(૭) શાન્તિ : અહીં શાંતિ એટલે મનની તાણરહિત ખલેલરહિત, તરંગરહિત, નિષ્પંદ અવસ્થા. મનના ઉઘામા શાંત પડે પછી જ કશુંક વલે. બહારનો ઘોંઘાટ કે બહારની ભીડ ન નડે તેવી એકાંત જોઈએ. શાંતિ એટલે મનમાં રચાતું નિર્વિકાર અને નિષ્પંદ એકાંત. બાલકને સુવડાવતી વખતે મા વહાલથી બાળકને કહે છે : ‘રાજબેટા સો જ; રાજબેટા સો જ.’ આ જ ઢબે મનને હળવેકથી સુવડાવી દેવાનું છે. મન જંપી જાય એટલે અડધો જંગ જીતી ગયા એમ કહેવાય.

(૮) નિર્ભયતા : ભય પાણ અહંકારનું જ ફરજંદ છે. મન, બુદ્ધિ, અહંકારની અવસ્થાઓ વટાવીને આગળ વધવા માટે ભયને તિલાંજલિ આપવી. પડે. સોળમા અધ્યાયમાં દેવી સંપદની વાતો વખતે અભયને પહેલે પગથિયે મૂકવામાં આવ્યો છે. ભયનો સ્વભાવ ચિત્તને ચંચળ કરવાનો છે. ભયભીત માણસ તેથી વધારે અસ્થિર બને છે. યોગારૂઢ થવા ઈચ્છનારને અસ્થિર થવાનું પાલવે જ નહિ. જે ભયમુક્ત નથી તે કૂટસ્થ ન હોઈ શકે.

(૯) બ્રહ્મચર્ય : ગાંધીજીએ આ અંગે ‘અનાસક્તિયોગ’માં સ્પષ્ટતા કરી છે : ‘બ્રહ્મચારીવ્રત એટલે કેવળ વીર્યસંગ્રહ જ નહિ, પાણ બ્રહ્મ પામવાને સારુ આવશ્યક ગહિંસાદિ બધાં વ્રતો એટલું જ ખાણી રાખીએ બ્રહ્મભાવમાં માણસ લીન થતો જાય તેમ આપોઆપ બધાં વ્રતો સંધાતાં જાય. વ્રતજડતાથી ય બચવા જેવું છે. વ્રત સાથેય ક્યારેય ‘હું’ શાસ્ત્ર ધર્મ / અગસ્ટ ૧૯૨૨

જોડાઈ જાય છે. પ્રતની ક્યારેય ભાર વતાય છે. તેથી નાનક કહે છે : સાધો સહજ સમાધ ભલી.

(૧૦) મત્પરાયાગતા : યોગમાં કશુંક જોઈવાનું ખરું, પણ શું જોડવાનું અને કોની સાથે જોડવાનું? યોગનો આદર્શ છે, જીવ અને શિવનું મિલન; પરંતુ તે પહેલાં વ્યાયામ પ્રયત્ન જોઈએ. એમાં પ્રવેશતા પહેલાં ઈશ્વરમય બનવાનું છે. મંદિરમાં દાખલ થતા પહેલાં જોડા ઉતરવાના હોય છે, તેમ આપણા મનના વ્યાપારો, આપણો અહંકાર અને આપણી આસક્તિ બહાર છોડીને અંદર જવાનું છે. અસ્તિત્વના ગર્ભદ્વારમાં એટલે કે હિરણ્યગર્ભમાં પ્રવેશ પામતાં પહેલાં એકાંતના મંદિરમાં, મોનના ધુમ્મટ તળે, સ્થિર ચિત્તે, શાંતિપૂર્વક, નિર્ભય બનીને, આત્મભાવની મસ્તી ઘૂંટીને મત્પરાયાગ એટલે કે ઈશ્વરપરાયાગ થવાનું છે. આ માટેની સાતત્યપૂર્ણ સાધના તે ધ્યાન.

(૧૧) નિર્વાણ : આ રીતે સતત સાધનાને કારણે મનને વળોટીને ઉપરની ભૂમિકાએ પહોંચેલો યોગી નિર્વાણ અવસ્થાની શાંતિ પામે છે. બૌદ્ધ ધર્મ, જૈન ધર્મ અને વૈદિક ધર્મને જોડતો આ 'નિર્વાણ' શબ્દ નિર્વાણની અવસ્થાને સમજવામાં ટોચો જ પડે. જે શબ્દસીત હોય તેને શબ્દની મર્યાદામાં શી રીતે સમાવાય ?

અભ્યુત્થો ને અપ્રાપ્ય વાનાં

૧. ઈન્દ્રપાણું. ૨. અનુત્તર વિમાનવાસી દેવપાણું. ૩. શલાકા પુરૂષપાણું
૪. નારદપાણું ૫. કેવળી કે ગાગધરના હાથે દીક્ષા. ૬. તીર્થંકર દ્વારા વર્ષિદાન.
૭. પ્રવચનનું અધિષ્ઠાક દેવીપાણું. ૮. લોકાન્તિક દેવનું સ્વામિપાણું.
૯. ત્રાયસ્ત્રિંશક દેવપાણું. ૧૦. પરમાધામીપાણું ૧૧. યુગલિક મનુષ્યત્વ.
૧૨. સંમિત્રશ્રોતલબ્ધિ ૧૩. પૂર્વધર લબ્ધિ ૧૪. આહારક લબ્ધિ
૧૫. પુલાકલબ્ધિ ૧૬. મતિજ્ઞાનાદિ લબ્ધિ ૧૭. સુપાત્રદાન,
૧૮. સમાધિમરાગ. ૧૯. ન્દ્યાચારાગલબ્ધિ ૨૦. વિદ્યાચારાગલબ્ધિ
૨૧. મદવાશ્રવલબ્ધિ. ૨૨. સર્પિરાશ્રવલબ્ધિ ૨૩. ક્ષીરાશ્રવલબ્ધિ.
૨૪. ક્ષીણમોહગુણસ્થાનક ૨૫. જેના દ્વારા તીર્થંકરાદિની પ્રમિભા બનાવી શકાય તેવું પૃથ્વીકાયત્વ. ૨૬. ચક્રવર્તીનું રત્નપાણું ૨૭. વિમાનનું સ્વામીપરું
૨૮. ઉપશમ ક્ષાયોપશમ-તથા ક્ષાયિક ભાવનું સમ્યક્ત્વ, જ્ઞાન, સંયમ, તપ વિગેરે.
૨૯. પ્રભુની અનુભવયુક્ત ભક્તિ. ૩૦. સાધર્મિક વાત્સલ્ય. ૩૧. સંવિગ્રપાણું.
૩૨. શુક્લપાક્ષિકપાણું. ૩૩. તીર્થંકરનાં માતા-પિતાપાણું ૩૪. યુગપ્રધાનપરું.
૩૫. આચાર્યાદિપદવી. ૩૬. પારમાર્થિકગુણ ૩૭. અનુબંધ-હેતુ અને સ્વરૂપ દયા.

સંગ્રાહક : મુનિ પ્રશાન્તરત્ન વિજયજી

નવકાર મહામંત્ર આરાધના સત્ર

ઉદ્ભવ અને જીવન....

- મુનિ શ્રી પ્રયાન્તરન વિજયજી

“અજર અમર રહીને નહીં, ચાર દિનો કા વાસ;

જયન્તસેન સિદ્ધિ મિલે, રખો અરિહન્ત આશ !”

હે પ્રભુ ! તમને મેળવ્યા વિના મોક્ષ જવાનો કોઈ માર્ગ નથી. અરિહન્ત વિના મોક્ષ દાતાર કોઈ આ જગતમાં છે જ નહિ. માટે જ આપણા જીવનમાં અરિહન્તની ઉપાસના સર્વશ્રેષ્ઠ છે, મોક્ષસુખ અરિહન્ત પરમાત્મા ને જ આભારી છે. મોક્ષનું માર્ગ દર્શન કરાવનાર અરિહન્ત જ છે. માટે તો ભક્તામર સ્તોત્રકાર પૂજ્ય આચાર્ય દેવ શ્રીમદ્ વિજય માનતુંગ સૂરીશ્વરજી મહારાજનું પણ ફરમાવે છે.

“ત્યામેવ સમ્યગ્પલભ્ય જયન્તિ મૃત્યું,

નાન્યઃ શિવઃ શિવપદસ્ય મુનીન્દ્ર પંથા !”

આવા જ પરમોચ્ચ સદ્ભાવો ના ધર્તા નવકાર મહામંત્રના સન્નિષ્ઠ આરાધક, પરમ ઉપાસક, શ્રેષ્ઠતમ સાધક, અને મન-વચ-ક્રયાનો ત્રિયોગે સમર્પકની શ્રેણિમાં પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયન્તસેન સૂરીશ્વરજી મહારાજનું પણ આગવું શ્રેષ્ઠ સ્થાન છે.

નવકાર મહામંત્ર ને જ પોતાનો જીવનમંત્ર બનાવી, અનન્ય સ્થાન હેવામાં ધારણ કરી, પોતાના સાધના ક્ષેત્રમાં અદ્વિતીય આરાધના કરી રહ્યા છે. જેમનું જીવન માત્ર

નવકારમંત્ર ને જ સમર્પિત છે,

સાધના માત્ર નવકાર મંત્રની જ છે,

આરાધના માત્ર નવકાર મંત્રની જ છે,

ઉપાસના માત્ર નવકારનાં જ નવપદોની છે.

સમગ્ર શાસનમાં સર્વ પ્રથમ સામૂહિકરૂપમાં આરાધનાનું આયોજન પૂજ્યશ્રી એ જ શરૂ કરાવ્યું.

આમ તો જૈન સમાજમાં—

આસો-ચૈત્રમાસની નવપદજીની ઓળીની આરાધના પૂર્વથી ઘણા જ સમયથી પ્રચલિત છે જ પણ તેને તો સિદ્ધચક્ર યંત્રારાધના જ કહેવાય....

બાળ જીવોથી લગાતાર નવ-નવ આર્યબલની આરાધના ન પણ થાય તો શું તેજીવો આરાધના થી વંચિત રહે ? તે દૃષ્ટિકોણને અપનાવીને વિશેષરૂપે જૈન શાસનના દૃઢ સમાન ચૌદ પૂર્વોના સારભૂત શ્રી નવકાર મહામંત્ર આરાધના સત્રની શરૂઆત કરાવી.

શરૂઆતથી માંડીને આજ પર્યન્ત દર વર્ષે પૂજ્યશ્રી તો આરાધના કરે જ છે પણ સાથે સાથે આરાધના સત્રના આરાધકો ને પણ નિત્ય નવી નવી પ્રેરણા આપતા રહે છે. શરૂઆતમાં આરાધનાના પ્રારંભ કાળે શ્રેયાંસિ બહુવિધનાનિ ન્યાયે વિદ્ધનસંતોષીઓએ આરાધનાના પ્રવાહને મંદ પાડવા પ્રયત્નો આદર્યા. છતાં આરાધના હતી નવકાર મંત્રની ! પ્રભાવતો હોય સ્વાભાવિક રીતે નવકાર મંત્રનો - આચાર્યદેવ કલિકાલ સર્વજ્ઞશ્રી હેમચન્દ્રચાર્યજી પણ ફરમાવે છે—

“અર્હમ્ અશેષ વિદ્ધન વિદ્યાત વિદ્ધનમ્ ” .

અરિહન્ત ભગવાન સમસ્ત વિદ્ધનો નો વિનાશ કરવાના સ્વભાવ વાળા છે. પદ્મી એવા અરિહન્તની જ આરાધનામાં વિદ્ધનો ટકી પણ કેટલું શકે ?

શારદાતર્ક/અગસ્ત/૬૨

(૬૨)

પ્રારંભ થયેલ આ અનુપમ આરાધનાનો, સન્ ૧૯૬૨ ની સાલના નિમ્બાહેડ ચાતુર્માસમાં -
 ૧ + ૮ + ૬ + ૨ = ૧૮, ૧ + ૮ = ૯

અને નવનો આંક તો ગમે.ત્યાંથી ગુણીએ તોય નવની અખંડિતતા ને જાળવી જ રાખે છે. તેમ અખંડિત પણે ગુરુદેવશ્રીનાં ચાતુર્માસ જ્યાં જ્યાં થતાં ગયાં ત્યાં ત્યાં શ્રાવણસુદ ૭થી ૧૫ સુધીના નવદિવસીય “શ્રી નવકાર મહામંત્ર આરાધના સત્ર” ના આયોજનો થતાં રહ્યા.

શરૂ-શરૂમાં તો ૧૯૬૩-૧૯૬૪-૧૯૬૫ની અર્વાધમાં તો સ્થાનિક આરાધકો ને જ આવી અનુપમ આરાધનાનો લાભ મળતો.

“મુક્તિથી અધિક તુ જ ભક્તિ મુજ મનવસી,
 જે હ સું સભળ પ્રતિબંધ લાગો;
 ચમક પાષાણ જિમ લોહને ખેંચશે,
 મુક્તિ ને સહજ તુમ ભક્તિ રાગો ?”

ભક્તિ જે પરમાત્માની થાય સાચા ભાવથી તે તો અવશ્ય મુક્તિને તાણી આણે. તાકત છે ભક્તિ ની એટલી જબરદસ્ત ભક્તિયોગનો માર્ગ કદાપિ નિષ્ફળ ન જાય. પ્રભુના ચરણ કમળની સેવા, આજ્ઞાની આરાધના કરવાનો અવસર મળે એ સિવાય ભક્તના મનમંદિરમાં અન્ય કોઈ વસ્તુની ઝંખના કે ચાહના ન જ હોય. આરાધના કરતાં કરતાં પૂજ્યશ્રીની નવકાર પ્રત્યેની ધગશ અને આરાધકોમાં થનાર ભાવની વૃદ્ધિ દેખી સંઘે વાતને સહર્ષ સ્વીકારી લીધી. વધાવી લીધી. પછી તો ત્રિસ્તુતિક સંઘમાં જેમ જેમ નવકાર આરાધનાના દિવસો નજીક આવતા જાય તેમ તેમ આરાધકોનો ઉમળકો વધતો ચાલ્યો.

દરેક સાધુ-સાધ્વીઓ પણ આરાધના કરવા-કરાવવા કટિબદ્ધ થયાં.

પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં આરાધના સત્રનાં આયોજનો—

- (૧) ૧૯૬૬ - રાણપુર (૨) ૧૯૬૭ - થરાદ (૩) ૧૯૬૮ - ભીનમાલ (૪) ૧૯૬૯ - સિયાણા
 (૫) ૧૯૭૦ - ઉર્જન (૬) ૧૯૭૧ - થરાદ (૭) ૧૯૭૨ - કોશીલાવ (૮) ૧૯૭૩ - જોધપુર (૯) ૧૯૭૪ -
 નેનાવા (૧૦) ૧૯૭૫ - સીંગણોદ (૧૧) ૧૯૭૬ - ધાનેરા (૧૨) ૧૯૭૭ - સ્તલામ (૧૩) ૧૯૭૮ - અમદાવાદ
 (૧૪) ૧૯૭૯ - મુંબઈ (૧૫). ૧૯૮૦ - મજસ (૧૬) ૧૯૮૧ - ભેંગલોર (૧૭) ૧૯૮૨ - વિજયવાડ
 (૧૮) ૧૯૮૩ - રેવતડા (૧૯) ૧૯૮૪ - સિયાણા (૨૦) ૧૯૮૫ - નેનાવા (૨૧) ૧૯૮૬ - પારા (૨૨) ૧૯૮૭
 - ખાચરૈદ (૨૩) ૧૯૮૮ - થરાદ (૨૪) ૧૯૮૯ - ખીમે (૨૫) અહમદાબાદ.

આમ ૨૫-૨૫ આરાધના સત્રોનાં આયોજનો થયાં સત્રમાં આરાધના કરવાનો આનંદ અનેસે આવે છે. પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી સંગે ત્રણેય સમય દેવવંદન અને એમાંય “નવકારમંત્ર ની ધૂનો, સ્તવનો, નવિનતમ ભાવસભર રચનાઓ” જ્યારે આરાધકોને ગુરુદેવ ગવડાવતા હોય તે વખતનું દશ્ય. અને નવકારમંત્રની આરતીનું દશ્ય. તો સ્મૃતિપટ પર કાયમને માટે અમિટદ્વંદવ ઉપસાધી દે તેવું હોય છે.

પ્રતિદિન પૂજ્યશ્રી દ્વારા નવકારમંત્ર સારગાંભિત પ્રવચનોની ધારામાં પણ પૂજ્યશ્રીનું મૌલિક ચિંતન સરળ છતાં સચોટ શૈલીનાં અદ્ભુત દર્શન થાય છે. એજ ચિંતન ધારામાંથી

નવકાર આરાધના.

નમો મન સે નમો તન સે....

નવકાર ગુણ ગંગા.... વિ સાહિત્યોનું નવ સર્જન થયું.

અંતમાં એક ભાવનાને રોકવા હું સમર્થ નથી. પૂજ્યશ્રીએ નવકારની વિશુદ્ધતમ આરાધનાના બળે જે આત્મ વિકાસ-જે સાધનાનું બળ, ઉપાસનાની શક્તિ આરાધનાનું જોમ પ્રગટાવ્યું અને જીવનમાં સાક્ષાત્કાર કર્યું એને મેળવવા આપણે પણ પૂજ્યશ્રીના જીવનમાંથી પ્રેરણા પામવા કટિબદ્ધ થઈએ.

ચારવતધર્મ / અગસ્ટ / ૬૨

(૬૨)

□□□

બોધકથાઓ

- પૂ. પં. શ્રી ચંદ્રશેખરવિજયજી

(૧) ઘસાવું કોઈને નથી

ઈષ્ટદેવના કોટા સામે દીવી કરીને ઉધરાણીએ ગામડે જવા નીકળેલા શેઠને રસ્તામાં યાદ આવ્યું કે, 'દીવી બુઝાવવાની તો રહી ગઈ ! અરે ! હવે ઘી કેટલું બળી જશે ?'

શેઠ ઝપાટાબંધ ઘર ભણી પાછા ફર્યા. ઘરની ડેલી અંદરથી બંધ કરી હતી. બૂમો પાડીને શેઠે પત્નીને કહ્યું, 'જલ્દી ડેલી ખોલ.'

ડેલી ખોલ્યા વિના પત્નીએ અંદરથી જ પૂછ્યું, 'પહેલાં મને કહો કે શા માટે પાછા આવ્યા છો ? વગર કામે ડેલી ખોલું તો મારાં મિજાગરાં ઘસાઈ જાય !'

શેઠે જવાબ આપ્યો, 'અરે ! તને કહું છું કે ડેલી જલદી ખોલ. ઓલી દીવી હજી બળતી હશે; અને એમાં વગર કારણે ઘી બળી રહ્યું છે.'

હજી પણ બારણું ખોલ્યા વિના જ પત્નીએ વળતો જવાબ આપતાં કહ્યું, 'તમારી હું પત્ની ! આટલું ય સમજતી નહિ હોઉં ! તમે ગયા કે તરત મેં તો દીવી બુઝાવી દીધી છે. હવે બહારથી જ પાછા રવાના થાઓ. અને દુઃખ તો મને એ વાતનું થાય છે કે આમ ઉતાવળે આવવામાં તમે વગર કામનાં જોડાનાં તળિયાં ઘસી નાખ્યાં.'

ઝટ જવાબ દેતાં ખુમારી સાથે એ પતિએ કહ્યું, 'તારો જ હું પતિ ! આટલું ય સમજતો નહિ હોઉં ! જોડાનાં તળિયાં ન ઘસાઈ જાય તે માટે તો માથે જોડા મૂકીને અહીં આવ્યો છું. !' કેવા ધર્મી લોકો ! ધરમ કરવો છે; પણ ઘસારો તો જરા પણ પરવડતો નથી ! ઘસારા વિનાનો ધરમમાં ઘસારો ! ધરાય નકામો !

(૨) માતૃભક્તિ આનું નામ !

'ઓ મા ! લે, આ ભાત લાવ્યો છું ... ત્રણ ત્રણ દિવસની તું ભૂખી છે લે ઝટ ખાઈ લે ...'

ચીનમાં પૂર્વે ઉપરઉપરી બે અતિભયાનક દુકાળો આવી ગયા.

લાખો પશુ-પંખીઓ એથી મરવા લાગ્યાં. હજારો માનવો મડદાં થઈ ને દુકાળમાંથી છૂટકારો લેવા લાગ્યાં.

ઉદારદિલ સખાવતીઓએ સદાવ્રતો ખોલ્યાં. દસ દસ માઈલ છેટેથી લોકો વાટકો ભાત લેવા ત્યાં આવે. લાંબી કતારમાં ઊભા રહીને વારો આવે એટલે મોટો વાટકો ભરીને ભાત પામે.

દસ માઈલ છેટેના એક ગામમાં મા-દીકરો વસે.

ભૂખી ઘરડી ગરીબ મા ! અને ભૂખ્યો જુવાન દીકરો ! ભારે મુસીબતે દસ માઈલ ચાલી નાંખીને એટ વાટકો ભાત દીકરાએ મેળવ્યાં.

માતા પ્રત્યેની અપાર મમતાએ એના પગમાં બળ મૂક્યું અને ફરી દસ માઈલ ચાલી નાંખી ઘેર આવી ગયો.

શાશ્વતધર્મ/અગસ્ત/૯૨

(૬૩)

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

सरस्वती श्रुति महती न हीयताम् ।
अत्राणी किं काही किंवा नाही सेय पावगं ।

- दशवैकालिक सूत्र ४/१०

अज्ञानी आत्मा क्या करेगा ? वह पुण्य और पाप को कैसे जान पायेगा ?

इह भविए वि नाणे, परभविए वि नाणे । तदुभयभविए वि नाणे ॥

- भगवती सूत्र १/१

ज्ञान का प्रकाश इस जन्म में रहता है, पर जन्म में रहता है
और कभी दोनों जन्मों में भी रहता है ।

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरण गुणा ।

- उत्तराध्ययन सूत्र २९/३०

सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं होता,

ज्ञान के अभाव में चारित्र के गुण नहीं होते ।

नाणेण जाणइ भावे ।

- उत्तराध्ययन २९/३५

ज्ञान से भावों (जीव-अजीवादिपदार्थों) का सम्यग् बोध होता है ।

सज्जाएणं नाणवरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

- उत्तराध्ययन सूत्र २९/१८

स्वाध्याय से ज्ञानावरण (ज्ञान को आच्छादन - करनेवाले) कर्म का क्षय होता है ।

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए ।

- उत्तराध्ययन ३२/२

ज्ञान के समग्र प्रकाश से आत्मा एकान्त सुख-स्वरूप मोक्ष को प्राप्त करता है ।

नाणं संजमसारं ।

- आचारांग नियुक्ति २४४

ज्ञान का सार संयम है ।

नाणं पयासगं ।

- आवश्यक नियुक्ति १०३

ज्ञानप्रकाश करनेवाला है ।

जइ नत्थि नाणचरणं, दिक्खा हु निरत्थिगातस्स ।

- व्यवहारभाष्य ७/२१५

यदि ज्ञान और तदनुसार अचरण नहीं है, तो उसकी दीक्षा निरर्थक है ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

सुरजना पडेलां किरणोनी साथे ज

शुं तमे डिंसाणा सलयोगी बनी जाओ छो?

पशुओनी उत्था मानवतानी विरुद्ध छे.

तेओना प्रति सडानुभूति अपनावो.

तमे अेवा उत्पादन-ने उपयोग न करो जेभां पशुओना अवशेष छेय.
 वगभग बधाज दूध पावउरि अने दूध पेओभां डेवियसम ग्रुप सोस्टे अने डिबेटीन विभिन्न मात्राओभां छेय छे. अने तेनुं शुभ्य अंग छे पशुओना छाडत.
 अमर १००% शाकाहारी जडीभूटीओ द्वारा निर्मित अनीया दूध पावउरि अने दूध पेस्ट छे. "अमर" "डार्भल भावना" (जडीभूटीओओ धीरशपूर्वक-नी बांओ प्रोसेस) अने दवाक सुधीनी अन्धग शोधनुं आश्चर्यजनक परिणाम छे.
 "अमर"ना नियमित उपयोगधीं दारोना हर्ट अने म्वासानी दुर्गंधिणी छुटकारो, पायोरियाधीं बन्वाव तेम ज उवाज पछ. दान चमडीला अने भजभूत अेटवे संपूर्ण सुरक्षा अेक अेक दान कसा कसा.

अमर

दूध पावउरि अने दूधपेस्ट

डार्भल भावना



दोपरेम पछ अने उवाज पछ

उत्पादक: स्वामी औषधालय प्रा.लि. १८०, अंत.वी.पी. रोड, मुंबई-१०० ००४.

जननाया छितभां प्रचारित

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।